kissekahani.com

फ़रवरी
१९७०

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

पराग ओफ़ इंडिया प्रकाशन
५० पैसे

kissekahani.com

ये लीजिये–नवीनतम मॉ

एचएमवी **फियेस्टा**

मूल्य सिर्फ
रु० २६५/-
आबकारी कर सहित, स्थानीय कर अलग से

एचएमवी *फियेस्टा*

आधुनिक ४-स्पीड पोर्टेबल रेकॉर्ड प्लेयर। हल्का-फुल्का, ठोस बनावट का रेप-एराउण्ड कैबिनेट। स्पीकर इस तरह से लगा है जिससे आवाज़ शानदार व जानदार बन जाती है। खूबसूरत, प्लास्टिक का वैट-ऐडजस्टिबल पिक-अप आर्म। एसी मेन्स अथवा बैटरी से चलने वाले मॉडेलों में प्राप्य।

एचएमवी **कैलि**

मूल्य सिर्फ
रु० १५०/-
आबकारी कर सहित, स्थानीय कर अलग से

एचएमवी **कैलिप्सो**

रेडियो के ज़रिये बजाया जाने वाला रेकॉर्ड प्लेयर। जिनके पास रेडियो है वे कैलिप्सो रखें और इच्छानुसार अपना मन पसन्द संगीत सुनें। रेडियो से जोड़ने में आसान। कैलिप्सो पर हर साइज़ और हर स्पीड के रेकॉर्ड बजाये जा सकते हैं। हल्का-फुल्का, ठोस बनावट का रेप-एराउण्ड कैबिनेट। प्लास्टिक का वैट-ऐडजस्टिबल पिक-अप आर्म। एसी मेन्स अथवा बैटरी से चलने वाले मॉडेलों में प्राप्य।

हिज़् मास्टर्स वायस

—आपको मनचाहे संगीत की मंज़िल तक ले जाते हैं

GC 5423

फरवरी
१४२ वां अंक

मुखपृष्ठ :
हरीश

सरस कहानियां
आजादी का सवाल
भूख
एक परीक्षा
अंबर की आवाज
घड़ी की सुइयां
चूहा मर्डर केस
परीक्षा और पुरस्का
नकली चेहरा
धारावाही 'स्पाई-
डबल सीक्रेट एजेंट
चटपटी कविता
गुड्डा-गुड़िया
पिंजड़े में बिल्ली
चूहे की शादी
कबाड़ी की गाड़ी

वार्षिक शु

पराग

फरवरी १९७०

१४२ वां अंक

फोटो : डी. डी. म.

सर्वोदय बाल पुस्तकालय
पिकौर

अनुक्रम

मुखपृष्ठ :
झरोखा : राज १

सरस कहानियां :
आजादी का सवाल : 'सत्य' जैसवाल १२
भूल : बादराम 'रसेंद्र' १६
एक परीक्षा : हसनजमाल छीपा २०
अंबर की आवाज : डेविड जैवंत दास २४
घड़ी की सुइयां : बलदेवसिंह 'विशाल' २८
बूढ़ा मदर केस : आर्यरत्न व्यास ३६
परीक्षा और पुरस्कार : मालती जोशी ४०
नकली चेहरा : सरिता गुप्ता ४४

धारावाही 'स्पाई-थ्रिलर' :
डबल सीक्रेट एजेंट (चौबहवीं किस्त) : चंदर ४

चटपटी कविताएं :
गुड्डा-गुड़िया : प्रयाग शुक्ल १३
पिंजरे में बिल्ली : रमेशचंद्र उप्रेती 'रवि' ५२
चूहे की शादी : मंगलराम मिश्र ५२
कबाड़ी की गाड़ी : जगदीशचंद्र शर्मा ५३
कार पड़ी बीमार : सीताराम गुप्त ५३
अनाड़ी हज्जाम : श्रीप्रसाद ५३

मजेदार कार्टून-कथाएं :
छोटू और लंबू : शेहाब ८
बुद्धूराम : आबिद सुरती २७

अन्य रोचक सामग्री :
आंदोलन (कार्टून) : आनंदीलाल भाटिया ३१
नए क्षितिज की ओर (रंगीन चित्र) : विद्याव्रत ३२
मुर्गी का बच्चा (लघु कथा) : रोहिताश्व मित्तल ४३
डाक-टिकटों पर भारत रत्न (लेख) : गजराज जैन ४८
क्या तुम जानते हो ? : कुमारसंभव ५१

स्थायी स्तंभ :
'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता-१६ : १०
भोलू भाई की भूलभुलैया-२६ : १९
छोटी छोटी बातें : सिम्स २३
शीर्षक प्रतियोगिता-१२ : ४७
खिलौनों का डिब्बा : अरुणकुमार ५६
रंग भरो प्रतियोगिता-९२ : ५९

वार्षिक शुल्क : स्थानीय : रु. ६.००
डाक से : रु. ६.५०

संपादक : आनंदप्रकाश जैन

अब तक तुमने पढ़ा था :

हंसी-हंसी में एक बातूनी लड़की के मुंह पर एक अध्यापक के टेप चिपका देने से स्कूल में उपद्रव भड़क उठे, जिनमें एक छात्र को छुरा भोंक दिया गया.

अगले दिन सर्द दरजे में राम और श्याम नाम के दो नए विद्यार्थी नजर आए. दीपक और रंगनाथ ने उन्हें छेड़ा और जवाब में तगड़ी मार खाई. दोनों ने अपना दुखड़ा अपने उस्ताद बनवारी और मामा शकुनि को सुनाया, शाम को उनकी भी राम और श्याम से भिड़ंत हो गई. उनकी मार से दोनों चेले बेहोश हो गए. उस्ताद और मामा दोनों भागकर अपने बॉस जोसेफ के पास पहुंचे.

जोसेफ एल-एस-डी की गोलियों का धंधा करने वाले एक गैंग का सरदार था और डोरियन डे उसकी सेक्रेटरी. राम और श्याम केंद्रीय खुफिया विभाग के दो जासूस छोकरे थे.

दीपक और रंगनाथ को पुलिस ने इलाज के लिए अस्पताल में भेज दिया था. जोसेफ के एक गुर्गे ने अपनी एक नर्स प्रेमिका से मिलकर उन दोनों को खत्म करना चाहा, लेकिन खुद ही राम और श्याम की चालाकी का शिकार हो गया. राम और श्याम ने गैंग के एक और हत्यारे को भी मौत के घाट उतार दिया और एक कार को उड़ा दिया, जिसमें एक बम रखा हुआ था.

फिर वे उस क्लब में जा पहुंचे, जो एल-एस-डी सेवन करने वाली दो लड़कियों—शायला और रीता—को गोलियां सप्लाई करता था. वहां उनका सामना हुआ जोसेफ की सेक्रेटरी डोरियन डे से. फोन पर जोसेफ ने डे को बताया कि राम और श्याम ही उनके आदमियों की हत्या के जिम्मेदार हैं. डे सतर्क हो गई. तभी अचानक उस छोटे-से कमरे में रीता प्रकट हुई. रीता के साथ डे की नोंक-झोंक हो गई. उसने रीता को गोली से उड़ा देना चाहा कि तभी राम के नसैली तीर ने अपना काम किया.

तीर लगते ही डे लड़खड़ाकर गिर पड़ी वहीं और उसी समय दरवाजे में एक ठिगना-सा आदमी हाथ में पिस्तौल लिये खड़ा नजर आया. उसके पीछे दो आकृतियां और नजर आ रही थीं. अब आगे पढ़ो :

(१४)

डार्ट जोसेफ के माथे पर ठीक बीचोंबीच बैठी थी, लेकिन माथे की हड्डी में चुभकर रह गई थी, उसे फोड़ नहीं पाई थी. श्याम ने उसे राम के पीछे से चलाया था. डार्ट चलाने के लिए पूरी सुविधा उसे नहीं मिली थी. फिर भी डार्ट ने उसके निशाने की लाज रखी थी.

वह डार्ट माथे से निकालकर जोसेफ ने फौरन फेंक दी और दरवाजे से एक ओर हटकर अंदर आ गया. अब उसके रिवाल्वर के साथ साथ शेष दोनों व्यक्तियों के रिवाल्वर भी उन लोगों की तरफ तने हुए थे. किसी भी रिवाल्वर में उस समय साइलेंसर नहीं लगा था.

"दिस टाइम वी
चला देंगे!)" जोसेफ
ने फिर हरकत की.
वह इतना ही कह
रिवाल्वर वाली क
गई और उसके कांपते
पर लुढ़क गए. उसक
हुए खून से तर होने

सुरेन्द्र बाल पुस्तकालय
पु.सं.....

धारावाही 'स्पाई-थ्रिलर'

डबल सीक्रेट एजेंट 00

kissekahani.com

"दिस टाइम वी विल किल! (इस बार हम गोली चला देंगे!)" जोसेफ ने कहा, "खबरदार, अगर किसी ने फिर हरकत की. रोशनसिंह, मुर्के कस—" अभी वह इतना ही कह पाया था कि सहसा ही उसकी रिवाल्वर वाली कलाई ढीली पड़ती हुई नीचे झूल गई और उसके कांपते हुए घुटने उसे लिए-दिए फर्श पर लुढ़क गए. उसका चेहरा डार्ट के जख्म से निकलते हुए खून से तर होने लगा था.

डोरियन कराह रही थी. वह राम की तरफ अपनी आंखों से ज्वालाएं फेंक रही थी. चंदनसिंह ने रीता के हाथ से डे की छोटी-सी पिस्तौल लेकर उसी की तरफ उछाल दी, और उसने उसे हवा में ही गुच ली.

"फौरन क्लब छोड़ देना है!" रोशनसिंह ने सहमी हुई नजर से अपने बॉस की तरफ देखकर डे से कहा. साथ ही उसने अपनी जेबों से रस्सियां और टेप निकाली. रीता के देखते ही देखते दोनों पहलवानों ने

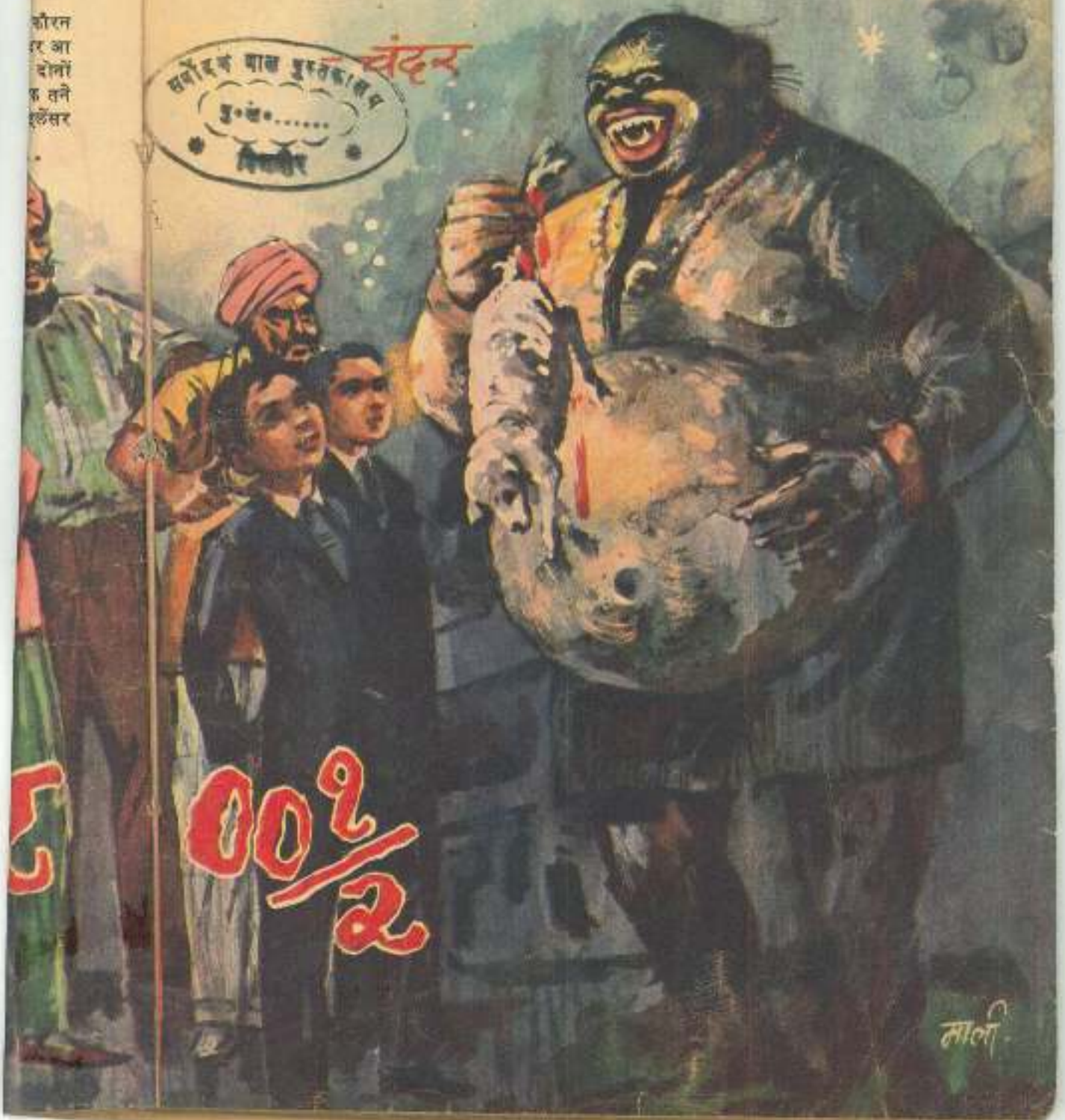

सर्वोदय बाल पुस्तकालय
पु०सं०.....
किशोर
चंदन

मिल कर राम और श्याम को घर दबोचा. रीता को यह देखकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि राम और श्याम मिट्टी के बबूलों की तरह उनकी गिरफ्त में आ गए. आखिर तो वे बच्चे ही थे!

मगर राम और श्याम आपस में अब तक आंखों ही आंखों में कुछ और इशारे कर चुके थे. बहादुरी और ट्रेनिंग के कीमती दांव-पेच दिखाने का यह वक्त नहीं था. डार्ट उनके हाथों में थीं—और भेजे में ट्रेनिंग के कई सबक घूम रहे थे. मगर एक सबक सबसे ऊपर था—"राम और श्याम, इतनी लंबी ट्रेनिंग के बाद अब हमें उम्मीद है कि तुम दुश्मन के हर फंदे से निकलने में कामयाब हो जाओगे. लेकिन ट्रेनिंग फिर भी ट्रेनिंग है'—यहां का नकली 'दुश्मन' नकली ही होता है. तुम मन ही मन जानते हो कि वह तुम्हें मारेगा नहीं. जब असली दुश्मन सामने होता है, तो उससे एक ही बात की उम्मीद रखी जाती है—कि जब उसके लिए तुम्हारी उपयोगिता समाप्त हो जाएगी, तो वह तुम्हें एक भी क्षण जीवित नहीं रहने देगा. और संसार के सफल स्पाइज़ (जासूसों) ने कभी कभी बच निकलने का साफ मौका सामने रहते हुए भी, अपने आप को दुश्मन के हवाले कर दिया—इसलिए कि दुश्मन के घोड़े पर सवार होकर ही उसके गढ़ में पहुंचें, और उसका पूरा भेद निकाल लाएं— लेकिन तुम लोग फिर भी बच्चे हो, इसलिए हम तुम से ऐसी उम्मीद नहीं करते. यह बहुत खतरनाक खेल है, और इसमें सौ में से निन्यानवे एजेंटों की जान जाती है. कभी यह खेल मत खेलना. कभी अहरल से ज्यादा बहादुरी दिखाने की कोशिश मत करना— क्योंकि बहादुरी दिखाने की चाह न सिर्फ एजेंट की जान ले लेती है, बल्कि उससे भी बड़ा नुकसान उसे पहुंचाती है. वह घमंड उस उद्देश्य को ही ले डूबता है, जिसके ऊपर कभी कभी पूरे देश का अस्तित्व ही निर्भर रहता है."

जब डार्ट का वार माथे पर सहकर भी उस दल के सरदार ने हाथ में थमे रिवाल्वर का उपयोग नहीं किया, तो राम को कुछ दाल में काला नजर आया. हो सकता है रिवाल्वर की गरज हाल तक पहुंच जाए, इसलिए उसे न चलाया गया हो. हो सकता है उनसे भी पहले उनके कारनामों की ख्याति दुश्मन तक जा पहुंची हो, और वे उनसे उनके भेद जानने की कोशिश करें. मिस्टर बी हम बच्चों से ऐसी उम्मीद नहीं करते—राम ने सोचा—लेकिन इस क्लब का भंडा फूट जाने के बाद दुश्मन हमेशा हमेशा के लिए इस शहर को ही खैरबाद कह देगा, इस में संदेह नहीं था. उस दशा में अब तक की सारी मेहनत ही बेकार नहीं जाएगी, उसे पकड़ कर उसके सारे खेल को चौपट कर देने का अवसर भी हाथ से जाता रहेगा. फिर उन्हें एक सबक याद आया :

"जहां जान को होमना ही हो, वहां उसे तिनके की तरह होम दो और जीवन का मोह उसी घड़ी से छोड़ दो!"

तिनके की तरह ही राम और श्याम ने जीवन का मोह छोड़ दिया. चंदन सिंह की पिस्तौल ने एक-एक कर के दोनों की कनपटियों पर पीछे के हिस्से से प्रहार किया—और दोनों ही अचेत हो गए. वेदना की एक तीव्र तरंग के साथ उनकी आंखों के आगे रंग-बिरंगे तारे से फटे और गहन अंधकार छा गया.

जब राम अंधकारपूर्ण अंतरिक्ष में से हाथ-पांव मारता हुआ मानो धरती पर उतरा, तो उसे लगा कि वह मिस्टर बी के सामने बैठा है. बगल में श्याम है. दोनों रो-रो कर मिस्टर बी से शिकायत कर रहे हैं कि फिजिकल ट्रेनर ने थका-थका कर उनकी हड्डियां मरोड़ डालीं हैं, और अब उनसे उंगली भी नहीं हिलाई जा रही है. मिस्टर बी हंस रहे हैं— "बच्चो, तुम नहीं जानते कि तुम क्या बनने जा रहे हो. जल्दी ही वह दिन आने वाला है, जब तुम अपने अंदर इतनी ताकत महसूस करोगे, जितनी बड़े से बड़े फ्री-स्टाइल रेसलर्स तक नहीं कर पाते. धीरज रखो, लोहा पिट कर ही कुंदन बनता है. मशीनों की शक्ल में वह जो काम करता है, वह बड़े से बड़े जेवरों के रूप में सोना भी नहीं कर पाता. वह लोहा ही असली कुंदन होता है. कुंदन सिर्फ कच्चा लोहा होता है."

और इसके बाद, जब उनकी ट्रेनिंग का एक कोर्स पूरा हुआ था, तो उन्हें नशा करना सिखाया गया था. सीधी-सादी बीड़ी-सिगरेट से लेकर अफीम, मैरिजुआना, सुल्फा, चरस, भांग, शराब— कोई नशा ऐसा नहीं छोड़ा गया था, जिसने उन बच्चों के शरीर को रसातल में ले जाने की कोशिश न की हो. जब वे नशे में कोई बेजा हरकत कर बैठते थे, तो उन्हें पीटा जाता था. वे नहीं समझ पाते थे कि उनके साथ क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है. कभी कभी कई कई दिन तक नशा सेवन करने के बाद यकायक ही उनका नशा रोक दिया जाता था, और उन्हें मर्मांतक वेदना होती थी. वे जब होश में अपने मुंह देखते थे, तो स्वयं अपने आप को पहचानने में भूल कर जाते थे.

मगर उस कोर्स के अंत में मिस्टर बी ने उन्हें छाती से लगा लिया था—और उनके हाथ हुए सारे अत्याचारों को यह अकेला प्यार भूलने के लिए मजबूर कर रहा था. मिस्टर बी ने कहा था—"बहुत छोटी उम्र में तुम्हें बड़ा बनाया जा रहा है. यह एक दुस्साहस और छल से भरा हुआ प्रयोग है. लेकिन अगर यह कामयाब हो गया, तो भारत के सभी दुश्मनों को कुछ ऐसे जीते-जागते नन्हे तारपीडो मिलेंगे, जिनकी काट उनके पास नहीं होगी. हमारी योग-विद्या में यह शक्ति

है, जो दुश्मन के कि
अपनी इस अजीब त
करोगे, तब तुम्हें ए
संतोष तुम्हारा सब से

योग-विद्या के मु
से नई शक्ति प्रदान
एक दिन मिस्टर
करना चाहते थे—
पिलाना चाहते थे.
नहीं दी थी. लेकिन
मन. सचमुच वे अनेक
पी चुके थे. काय को
लेते थे. किंतु इसके
क्रिया के द्वारा अपने

तक ज्यों के त्यों
करना शुरू किया.
डाला हुआ है. हाथ
पट्टी बंधी है. उसके
शरीर के ऊपर हलक
से ऐसा नहीं लगत
उसके शरीर में चेत

कार जिस राम
नहीं है. उसके गचके
चलता है कि सड़
बकरियों का एक
अब कार ऊपर चढ़
होगा ही. लेकिन
लीस हो गया होगा
जल्दी आ रहे हैं.
फिया उन्हें याद नहीं
न हुआ हो.

रीता कहां है?

इन लोगों ने
किया—श्याम सोच
याद किया—दुश्मन
वह नहीं रहेगी,
की भी देरी पसंद
चाहता है कि ये न
कहां तैयार किए

है, जो दुश्मन के किसी हथियार में नहीं है. और जब अपनी इस अजीब ताकत से तुम दुश्मन के दांत खट्टे करोगे, तब तुम्हें एक स्वर्गीय संतोष मिलेगा. यही संतोष तुम्हारा सब से बड़ा पुरस्कार होगा."

योग-विद्या के सुदीर्घ कोर्स ने उनके शरीर को फिर से नई शक्ति प्रदान की थी. योग-विद्या के आचार्य एक दिन मिस्टर बी के सामने एक विशेष प्रदर्शन करना चाहते थे—बच्चों को विशुद्ध नमक का तेजाब पिलाना चाहते थे. मिस्टर बी ने इस प्रदर्शन की इजाजत नहीं दी थी. लेकिन राम और श्याम हंस रहे थे, मन ही मन. सचमुच वे अनेक बार अभ्यास के तौर पर तेजाब पी चुके थे. कांच को वे चनों की तरह चबाकर निगल लेते थे. किंतु इसके बाद पूरा एक दिन उन्हें नौली क्रिया के द्वारा अपने शरीर को साफ करने में बीतता था.

ये दृश्य सपनों की तरह राम के मस्तिष्क में आ जा रहे थे. फिर वे सपने हिलने लगे और हिलते-हिलते लोप हो गए. फिर अचानक ही पूरी चेतना लौट आई. बिना शरीर को हिलाए-डुलाए, कुछ क्षणों तक ज्यों के त्यों निढाल बने रहकर राम ने महसूस करना शुरू किया. किसी कार की पिछली सीट पर उन्हें डाला हुआ है. हाथ पीछे की तरफ बंधे हैं. आंखों पर पट्टी बंधी है. उसका निढाल शरीर शायद श्याम के शरीर के ऊपर ढुलका हुआ है. लेकिन श्याम के स्पर्श से ऐसा नहीं लगता कि वह अभी तक बेहोश ही हो. उसके शरीर में चेतना और सावधानी की सख्ती है.

कार जिस रास्ते से चली जा रही है वह हाइ-वे नहीं है. उसके गच्चके खाने और हिलने-डुलने से पता चलता है कि सड़क एकदम खराब है. कुछ दूरी पर बकरियों का एक झुंड में-में करता मालूम होता है. . . अब कार ऊपर चढ़ रही है. तीस डिग्री का एंगिल तो होगा ही. लेकिन एंगिल बढ़ता जा रहा है. अब पैंतालीस हो गया होगा. पहाड़ी रास्ता है. घुमाव जल्दी जल्दी आ रहे हैं. इस तरह के किसी प्रदेश का भूगोल-फिया उन्हें याद नहीं. शायद पहले इस तरफ आना ही न हुआ हो.

रीता कहां है? कहां होगी?—राम ने सोचा.

इन लोगों ने हमारा काम तमाम क्यों नहीं किया—श्याम सोच रहा था. फिर उसने अपना सबक याद किया—दुश्मन को अभी हमारी जरूरत है. जब वह नहीं रहेगी, तब हमें मिटाने में वह एक क्षण की भी देरी पसंद नहीं करेगा. शायद वह जानना चाहता है कि ये नन्हे तारपीडो किस तरह और कहां कहां तैयार किए जाते हैं, ये सीक्रेट एजेंट किस लिए तैयार किए गए हैं.

हम जीवित ही कहां हैं—राम ने सोचा. जीवन नाम की वस्तु यदि कोई होती है, तो उसे हम ए. बी. एस. क्लब के उस गुप्त कमरे के अंदर उसी समय त्याग चुके थे, जब चंदन सिंह को उसके रिवाल्वर सहित आड़ में लेकर उन्होंने उस दूसरे बंदर के बदन को डाटों से छेद दिया था. वे वैसा कर सकते थे—राम ने मन ही मन अनुमान लगाया कि कहीं यह उसका वहम तो नहीं है. लेकिन उसे साफ याद था कि जिस मूल्यवान सेकिंड की उसे आवश्यकता थी, वह चंदन सिंह ने उसे प्रदान कर दिया था—जब वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि पहले राम की कनपटी पर पिस्तौल का पिछला हिस्सा मारा जाए या श्याम की पर. वही सेकिंड राम और श्याम ने जानबूझ कर गंवा दिया था.

आंखें उन लोगों ने खूब कस कर बांधी थीं. फिर भी आंखें खोलकर गालों की राह आती हुई चमक बता रही थी कि दिन अभी कोसों दूर था. चमक किसी टार्च की थी. शायद ले जाने वाले उसकी भान-भंगिमा से यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि उसमें अभी चेतना लौटी है या नहीं.

"रोशन सिंह, इन संपोलों का तो दम ही निकला पड़ा है!" यह शायद चंदन सिंह की आवाज होगी. वह शायद अपने साथी को बताना चाहता होगा कि किस सफाई से पिस्तौल के बेंटे उसने उनकी कनपटियों पर जड़े थे.

"चुप बे! डींग मत हांक. अगर उस डाक्टर के बच्चे ने बॉस को कल सुबह तक चलता-फिरता न कर दिया, तो सुबह को मुझे ही उसका सिर धड़ से अलग करना होगा. अगर बॉस चलते-फिरते हो गए, तो एक एक सीसे की गोली हम दोनों के लिए तैयार होगी. यह नई बला जो हमारी जान को लग गई, वे कहती थी यह जज साहब की लड़की है. पूरे स्टेट की पुलिस फोर्स अब तक भूखे भेड़ियों की तरह हमारे पीछे पड़ चुकी होगी. जान की खैर मना!"

"तू अभी दूध की बोतल मुंह में लगाए रख, प्यारे. यह लड़की हमारे हाथ मजबूत करने के लिए आई है. अगर एक लाख मांगेगा, तो इसका मुर्दा शरीर पाने के लिए भी जज साहब दे मरेंगे!"

"तेरा ताऊ चान जो वहां बैठा है, वह दिलवाएगा तुझे लाख रुपया!" रोशन सिंह ठट्ठा मारकर हंसा. हंसते-हंसते ही वह बोला, "अरे, वह इन चिड़ीचिड़ों को हाथ में पाते ही पहले इनकी गरदन मरोड़ देगा!"

"ओह! चान!" चंदन सिंह का स्वर जैसे आसमान से गिरा. फिर बोला, "रोशन सिंह, कभी कभी मुझे लगता है कि भगवान जब खूंखार चीते, पागल हाथी, उठाईगीर भेड़िये, चालाक लोमड़ी, और बब्बर शेर की मिट्टी अलग अलग कर रहा होगा, तो गलती से चान पहले ही बन कर धरा गया होगा. मैं तो अपने

(कृपया पृष्ठ ३४ देखिए)

kissekahani.com

भाई साहब, इस कुएं में पैसे डालने से दिल की बात पूरी होती है। सभी पैसे डालते हैं हमने भी डाले, मगर कुछ बनता बना नहीं...
आपने दिल में क्या बात सोची थी भला ?
ही, ही, ही! बात तो धनवान बनने की थी!
धन से तो जी, मुझे भी प्यार है...
तो आप भी पैसे डालिए...
सहसा...
अरे, यह तो कुएं के अंदर कूद गया! वहां तो काला भूत रहता है!
थोड़ी देर बाद
अरे! पानी में से तुम थैली में क्या भर लाए? काले भूत ने तुम्हें मारा नहीं?
आगे बढ़ने वाले ऐसी बातों को नहीं देखते!
लेकिन थैली में है क्या?
धन! जो बरसों से लोग डालते आ रहे थे! अरे मूर्खो, सफलता के लिए केवल सोचना नहीं, बढ़ कर उसे हासिल करना पड़ता है!

१,००० रुपयों के नकद इनाम

पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६

ज्ञानवर्धन व मनोरंजन के साथ साथ धन भी

सर्वशुद्ध या निकटतम पूर्ति पर ७०० रु., न्यूनतम अशुद्धियों पर ३०० रु.

बच्चों और किशोरों के लिए प्रस्तुत यह प्रतियोगिता उनकी अपनी प्रतियोगिता है. थोड़े से श्रम, अध्ययन, और सूझबूझ से आप इस प्रतियोगिता में विजयी हो सकते हैं.

इस प्रतियोगिता के संकेत-वाक्य बच्चों के लिए प्रकाशित पुस्तकों से ही लिये गए हैं. इसलिए जो पाठक सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ते होंगे, उनके लिए खेल खेल में एक हजार रुपये जीतने का यह स्वर्ण अवसर है.

सामने के पृष्ठ पर १२ संकेत-वाक्य दिए गए हैं. प्रत्येक वाक्य में एक शब्द का स्थान डैश लगाकर छोड़ दिया गया है. उसी पृष्ठ पर एक पूर्ति-कूपन है, जिसमें दो पूर्तियां दी गई हैं. जिस क्रमांक का संकेत-वाक्य है, प्रत्येक पूर्ति में उसी क्रमांक के आगे दो शब्द दिए गए हैं. उनमें से एक शब्द सही है, और दूसरा गलत. बस, आप गलत शब्द पर × का निशान लगा दीजिए. इस प्रतियोगिता के संकेत-वाक्य बच्चों के लिए प्रकाशित पुस्तकों से ही लिये गए हैं.

'पराग उद्धरण प्रतियोगिता' में भाग लेने के नियम और शर्तें

१–एक पूर्ति-कूपन में दो पूर्तियां दी गई हैं. आप एक पूर्ति भरें या दोनों—पूरा कूपन बाहरी रेखाओं पर काटकर भेजना होगा. पूर्तियां 'पराग' में प्रकाशित पूर्ति-कूपनों पर ही स्वीकार की जाएंगी. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को क्रास कर दीजिए, और उसके नीचे पूर्ति क्रमांक आदि कुछ न भरिए.

२–पूरे कूपन की दोनों पूर्तियों का प्रवेश-शुल्क १ रुपया और केवल एक पूर्ति का प्रवेश-शुल्क ५० पैसे है. दोनों में से किसी भी पूर्ति को आप पहली मान सकते हैं. एक ही नाम से आप चाहे जितनी पूर्तियां भेज सकते हैं. एक ही लिफाफे में अनेक नामों और परिवारों की पूर्तियां भेजी जा सकती हैं. लिफाफे के अंदर रखी सभी पूर्तियों का सम्मिलित प्रवेश-शुल्क एक ही पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर, या नकद रसीद से भेज सकते हैं. किंतु ऐसी सभी पूर्तियों के नीचे कुल पूर्तियों की संख्या, उनके क्रमांक, और पूर्ति-कूपन में पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर की रसीद या नकद रसीद का नंबर लिखना अनिवार्य है. पोस्टल आर्डर, या डाकखाने से मिली मनी आर्डर की रसीद, या नकद रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य नत्थी करके भेजिए. डाक-टिकट या करेंसी नोट प्रवेश-शुल्क के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे. आप कार्यालय में नकद रुपया जमा करके या डाक-खर्च सहित मनी आर्डर भेजकर ५० पैसे मूल्य की चाहे जितनी नकद रसीदें प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें अगले चार महीने तक, प्रवेश-शुल्क के रूप में, पूर्तियों के साथ नत्थी कर सकते हैं.

३–स्थानीय प्रतियोगी अपनी पूर्तियां 'टाइम्स आफ इंडिया भवन' के प्रवेश द्वार पर बनी 'स्थानीय प्रवेश पेटी' में डाल सकते हैं. स्थानीय या डाक से आने वाली सभी पूर्तियों के लिफाफों के खुलने वाली तरफ भेजने वाले का पता, तथा उसके पीछे यह पता लिखा होना चाहिए—**'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६' प्रतियोगिता विभाग, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई–१.'** मनी आर्डर फार्मों और रजिस्टरी से भेजे जाने वाले लिफाफों पर 'पोस्ट बैग नं. २०७' न लिखें. पोस्टल आर्डर क्रास कर दें. उसमें 'पाने वाले' के स्थान पर **'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६'** और 'पोस्ट आफिस' के आगे—**'बंबई–१'**—लिखें. कृपया संपादक के नाम पूर्तियां या शुल्क न भेजें.

४–प्रथम पुरस्कार ७०० रु. उन प्रतियोगियों को मिलेगा, जिनकी पूर्तियों में संकेत-वाक्यों के सही पूरक शब्दों पर निशान नहीं होंगे, और सभी गलत शब्दों पर निशान लगे होंगे. यदि ऐसी कोई पूर्ति प्राप्त न हुई, तो उसके निकटतम अशुद्धियों वाली पूर्तियों पर प्रथम पुरस्कार दिया जाएगा. द्वितीय पुरस्कार ३०० रु. प्रथम पुरस्कार प्राप्त पूर्तियों से निकटतम अशुद्ध पूर्तियों पर प्रदान किया जाएगा. समान अशुद्धियों के एक से अधिक विजेताओं को घोषित पुरस्कार बराबर बराबर बांटे जाएंगे.

५–अपना नाम और पता प्रत्येक पूर्ति-कूपन पर सुपाठ्य और स्पष्ट अक्षरों में लिखिए. डाक में खो जाने वाली, विलंब से प्राप्त होने वाली, या गंदी व कटी-फटी पूर्तियां प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगी.

६–सभी पूर्तियां कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि गुरुवार, १२ फरवरी १९७० है. अपनी पूर्तियां भेजने के लिए अंतिम तिथि की प्रतीक्षा न कीजिए. निर्धारित अवधि के प्रारंभिक दिनों में ही पूर्तियां भेज देने से आप अनेक भूलों से बच सकते हैं. सर्वशुद्ध शब्दावली तथा संबंधित पुस्तकों व पुरस्कार विजेताओं की सूची 'पराग' के अप्रैल '७० के अंक में प्रकाशित की जाएगी.

७–प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता से संबंधित प्रत्येक विषय में प्रतियोगिता संपादक का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा. वैधानिक रूप से विवादास्पद विषयों में बंबई के संबद्ध न्यायालय को ही निर्णय देने का अधिकार होगा.

८–नियमों के प्रतिकूल तथा पूर्ति-कूपनों में आवश्यक विवरण से रिक्त कोई भी पूर्ति प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं की जाएगी. 'पराग' तथा संबद्ध प्रकाशनों के कर्मचारियों को इसमें भाग लेने का अधिकार नहीं होगा. ●

'परा

१. उन दिनों बड़े
योग्यता परी
से कुछ सहा
लिए सभी का
२. ——समाप्त
अब कोई उपयु
३. इस तरह लंबी
कई-कई जास
सफल होते हैं.
४. क्या इन दस
रचना की बारी
५. श्रीनगर दुश्मन
ऐसा लगा कि
तस्ता——ही
६. अगर——कोई
नेताओं की बह

अंतिम तिथि :
१२–२–७०

१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	

यहां से काटिए

पूर्ति क्रमांक

इस प्रति

नाम व पूरा

पोस्टल आ

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६ के संकेत-वाक्य

१. उन दिनों बड़े सरकारी पदों की भर्ती के लिए योग्यता परीक्षाएं होती थीं, उनमें विज्ञान विषय से कुछ सहायता मिलने वाली नहीं थी. इसी लिए सभी का ——विज्ञान के विरोध में था.

२. ——समाप्त हो गई थी. विदेश जाना रुक गया था. अब कोई उपयुक्त काम ढूंढने की समस्या थी.

३. इस तरह लंबी भाग-दौड़ और सूझ-बूझ के साथ कई-कई जासूस मिल कर हत्यारे को —— में सफल होते हैं.

४. क्या इन दस हजार के लगभग —— द्वारा जीवन-रचना की बारीकियों के संकेत भेजे जा सकते हैं.

५. श्रीनगर दुश्मनों से कुछ ही मील दूर रह गया था. ऐसा लगा कि अब आनन-फानन में कश्मीर का तख्ता—— ही वाला है.

६. अगर——कोई दुर्घटना हो गई तब ? देश के नेताओं को यही चिंता थी.

७. अखाड़े में जब ताल ठोंक कर वह उतर पड़ता है तो बड़े-बड़े पहलवान तक उसका मुकाबला करने से——हैं.

८. दिन भर खेत में —— रहता है. शाम को घर का काम करता है. उसे इतनी फुरसत ही कहां मिलती है कि बाहर नाम पैदा करे.

९. उसने लौट कर अपनी सास और देवर से पूछा कि किसी ने —— तो नहीं उठाया?

१०. जिसके हाथ दूसरे की जो वस्तु लगती, वह उसे ही —— लेता. अब तो दोनों का जीना दूभर हो गया.

११. वे इस तिरंगे को —— के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर रहे थे.

१२. वे लोग मंदिर के पीछे पहाड़ी के दृश्य देखने के लिए ——गए. उस तरफ भौंरों के झुंड के झुंड घूम रहे थे.

यहां से काटिए

अंतिम तिथि : 'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १६ (पूर्ति-कूपन)

१२-२-७० शब्दों के प्रत्येक जोड़े में से जो शब्द आप गलत समझें, उस पर × का चिह्न बना दें. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को काट कर दें.

१	मत	मन
२	पढ़ाई	लड़ाई
३	जकड़ने	पकड़ने
४	अंडों	डंडों
५	उलटने	पलटने
६	कहीं	वहीं
७	कतराते	घबराते
८	जुटा	जुता
९	अंडा	कंडा
१०	उठा	उड़ा
११	फहराने	लहराने
१२	उतर	उधर

१	मत	मन
२	पढ़ाई	लड़ाई
३	जकड़ने	पकड़ने
४	अंडों	डंडों
५	उलटने	पलटने
६	कहीं	वहीं
७	कतराते	घबराते
८	जुटा	जुता
९	अंडा	कंडा
१०	उठा	उड़ा
११	फहराने	लहराने
१२	उतर	उधर

यहां से काटिए

यहां से काटिए

पूर्ति क्रमांक : .... कुल पूर्ति संख्या : .... पूर्ति क्रमांक : .... कुल पूर्ति संख्या : ....

इस प्रतियोगिता में भाग लेते हुए मुझे प्रतियोगिता के सभी नियम व शर्तें पूर्णतया स्वीकार हैं.

नाम व पूरा पता (स्याही से) : _____

_____

_____

पोस्टल आर्डर / मनी आर्डर रसीद / नकद रसीद / का नंबर : .....

यहां से काटिए

कहानी

आज़ादी का सवाल

'सत्य' जैसवाल

एक था बहेलिया. सारे दिन पशु-पक्षियों का शिकार करना उसका रोज का काम था. एक दिन वह शिकार के लिये जंगल में गया—और शिकार खोजने लगा. काफी धर-पकड़ के बाद शाम को उसके हाथ एक तोता ही लग पाया—हृष्ट-पुष्ट और सुंदर, परंतु पेट भरने के लिए उसे कुछ भी नहीं मिल सका. भूखे बहेलिए ने सोचा—'खैर इसी तोते को बेचकर किसी दिन मैं भी अच्छी खासी रकम वसूल करूंगा.'

और यह सोचकर उस बहेलिए ने उस तोते को पाल लिया. सुबह-शाम जब भी बहेलिए को मौका मिलता, तोते को पढ़ाता-रटाता रहता. . कुछ दिनों के अभ्यास के बाद तोता खूब अच्छी तरह बोलने लगा.

अपने निश्चय के अनुसार एक दिन बहेलिया उसे लेकर बाजार में आ पहुंचा और ग्राहकों की तलाश करने लगा. संध्या तक तोता किसी ने नहीं खरीदा. शाम को जब बहेलिया तोते को लेकर घर लौट रहा था, तो उसकी एक सेठ जी से मुलाकात हो गई. सेठ जी ने तोते की कीमत पूछी. बहेलिए ने कहा, "सेठ जी, अपनी कीमत तोता ही आपको बताएगा. . .इसी से पूछिए!"

सेठ जी ने तोते से ही उसकी कीमत पूछी. तो तोते ने तपाक से कहा, "पांच सौ रुपये दीजिए, सेठ जी. . .!"

तोते का उत्तर सुनकर सेठ जी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरंत ही पांच सौ रुपये बहेलिए को देकर तोता खरीद लिया.

सेठ और सेठानी तोते को पाकर बहुत ही प्रसन्न थे. सारे दिन तोता उन दोनों का अच्छा-खासा मनोरंजन करता और उन्हें बहुत रात गए तक किस्से-कहानियां सुनाया करता. सेठ जी ने भी तोते के लिए आराम की सभी सुविधाएं जुटा दी थीं. उसके लिए सोने का पिंजड़ा, सोने की प्याली, खाने के लिए मेवा-मिष्ठान, फल आदि की कोई कमी न थी. परंतु फिर भी जब तोता आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को देखता, तो बड़ा दुखी होता. उसका मन भी आजादी के लिए तड़प उठता.

एक बार उस नगर में काशी के एक प्रकांड पंडित आए और एक स्थान पर बैठकर रात के समय अपने धार्मिक प्रवचन करने लगे. प्रवचन के पश्चात् वह श्रोताओं के हर प्रकार के प्रश्नों का उत्तर भी देते. उन्हीं प्रवचनों को प्रतिदिन सेठ जी भी सुनने जाया करते थे. वहां से लौटकर जब सेठ जी अपने घर आते, तो पंडित जी के बारे में और उनसे पूछे गए प्रश्नों के विषय में तोते को भी बताते.

एक दिन तोते ने कहा, "सेठ जी, एक प्रश्न आप मेरा भी पंडित जी से पूछ लीजिए, आपकी बड़ी कृपा होगी."

"कौनसा प्रश्न है?" सेठ जी ने पूछा.

"आप पूछें कि—पढ़े-लिखे कैसे छूटें?"

सेठ जी ने हामी भर ली, लेकिन कई दिनों तक उन्हें तोते का प्रश्न पंडित जी से पूछने का मौका नहीं मिल सका. सेठ जी जब प्रवचन सुनकर घर आते, तोता पूछता, "मेरा प्रश्न पूछा था?"

और सेठ जी मौका न मिलने की अपनी परेशानी तोते को बताते.

आखिर एक दिन प्रवचन के बाद सेठ जी को मौका मिल ही गया. उन्होंने तोते का प्रश्न पंडित जी के सामने रखा: "पंडित जी मेरे यहां एक बहुत ही अच्छा तोता है. खूब पढ़ा-लिखा है. मैं और मेरी पत्नी उससे बहुत प्रसन्न की चेष्टा करते पूछना चाहा है.

"हां, हां, पू

"उसने पूछ

पंडित जी ने उन्हें गश आ गया हालत मरणासन्न का बुरा हाल था जा पहुंचे.

सेठ जी को कारण पूछा, तो तुमने सत्यानाश पंडित जी की हा बुरी दशा में है!

सेठ जी का था कि कहीं को पंडित जी थोड़ी

•

तोते को अप दो-चार दिनों के होने लगी. उसने हालत देखकर से पक्षी-रोगों के वि सभी व्यर्थ गया.

एक दिन स

सेठ जी और रोए. मृतक तोते दूसरी चीजें एक संस्कार धूमधाम पिंजड़े से निकाल उसी क्षण वह तो घर आश्चर्यचकित बुला रहे थे.

तोते ने मुंडेर

"सेठ जी, मे धन्यवाद दे दीजि ही मुझे आज वर्षों नमस्कार लीजिए!

अब सेठ जी उत्तर आ गया था

द्वारा जैसवाल मैं मु. पो. सहपऊ, जि

जैसे आचाज हुआ है या नहीं, साबित कर देते हैं

kissekahani.com

उससे बहुत प्रसन्न हैं और हम उसे हर समय आराम देने की चेष्टा करते हैं. आज उसी तोते ने आपसे एक प्रश्न पूछना चाहा है. क्या आप उसका उत्तर देंगे?"

"हां, हां, पूछिए . . ."

"उसने पूछा है—पढ़े-लिखे कैसे छूटें?"

पंडित जी ने सेठ जी के मुंह से यह प्रश्न जैसे ही सुना, उन्हें गश आ गया और वह जमीन पर गिर पड़े. उनकी हालत मरणासन्न हो गई. पंडित जी को देखकर सेठ जी का बुरा हाल था. वह चुपके से वहांसे भागकर अपने घर आ पहुंचे.

सेठ जी को बुरी तरह हांफते देखकर तोते ने कारण पूछा, तो सेठ जी ने चिल्लाकर कहा, "तोते, तुमने सत्यानाश कर दिया. . .तुम्हारे प्रश्न को पूछते ही पंडित जी की हालत एकदम खराब हो गई. वह बड़ी बुरी दशा में है!"

सेठ जी का हांफना बंद नहीं हुआ था. उन्हें डर था कि कहीं कोई उन्हें पकड़ने न आ जाए! परंतु वहां पंडित जी थोड़ी ही देर पश्चात् ठीक हो गए थे.

●

तोते को अपने प्रश्न का सही उत्तर मिल गया था. दो-चार दिनों के पश्चात् सहसा ही तोते की हालत खराब होने लगी. उसने खाना-पीना त्याग दिया. तोते की हालत देखकर सेठ जी बहुत चिंतित हुए. उन्होंने कई पक्षी-रोगों के विशेषज्ञों को तोते को दिखाया, परंतु सभी व्यर्थ गया.

एक दिन सचमुच ही तोता मर गया!

सेठ जी और सेठानी बड़े दुखी हुए और दोनों खूब रोए. मृतक तोते के लिए रेशम का बहुमूल्य कपड़ा तथा दूसरी चीजें एकत्रित की गईं. सेठ जी तोते का अंतिम संस्कार धूमधाम से करना चाहते थे. उन्होंने तोते को पिंजड़े से निकालकर जमीन पर रखा. . .किंतु यह क्या! उसी क्षण वह तोता उड़कर मुंडेर पर जा बैठा. सारा घर आश्चर्यचकित था. सेठ जी मिन्नतें करके तोते को बुला रहे थे.

तोते ने मुंडेर पर बैठकर सेठ जी से कहा:

"सेठ जी, मेरी तरफ से काशी जी के पंडित जी को धन्यवाद दे दीजिए. उनके चातुर्यपूर्ण उत्तर को समझकर ही मुझे आज वर्षों के बाद आजादी मिली है. . .मेरा अंतिम नमस्कार लीजिए!" यह कहकर वह फुर्र से उड़ गया.

अब सेठ जी की समझ में भी पंडित जी का उत्तर आ गया था. ●

द्वारा जैसवाल मेडिकल हाल,
मु. पो. सहपऊ, जिला मथुरा (उ. प्र.).

संभाषण

जैसे आवाज से जाना जाता है कि बरतन फूटा हुआ है या नहीं, उसी तरह आदमी अपनी बातों से साबित कर देते हैं कि वे बुद्धिमान हैं या मूर्ख.

—डिमास्थनीज

गुड्डा-गुड़िया

वह है गुड़िया,
वह है गुड्डा!

यह है बुढ़िया,
यह है बुड्ढा!

सोच रही हूं इक दिन गुड़िया,
हो जाएगी बिल्कुल बुढ़िया।
हो जाएगा इक दिन बुड्ढा,
मेरा इतना प्यारा गुड्डा!

हिला करेगा सिर बुढ़िया का,
मेरी इस प्यारी गुड़िया का!
लाठी टेक चलेगा गुड्डा,
लोग कहेंगे इसको बुड्ढा!

मैं किससे किससे झगड़ूंगी,
किसका किसका मुंह पकड़ूंगी!
यही सोच कर मैं चकराई,
इन्हें बना कर मैं पछताई!

—प्रयाग शुक्ल

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अन्य पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका सिनर्जिक जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

COLGATE DENTAL CREAM

ज्यादा साफ़ व तरोताजा सांस और ज्यादा सफेद दांतों के लिए...
दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

DC.G.41HN

"परा

सर्व

सही उत्तर—

'पराग' उद्धरण
३४ पै. प्राप्त हुए.

अगर आप को
में नहीं है, तो आप
टाइम्स आफ इंडिया
पोस्टल आर्डर, मनी
या पोस्टल आर्डर द्वा
रित किया जाएगा.

सर्वशु

१—रत्ना सम
२— निशी बरडिया,
द्वारा रामनाथ दुबे

१ ग

१— राजीव म
सहगपुर. ४—शंकर
ग्वालियर. ७—जठ
कालाकांकर. ९— स
आद्रा (प. बंगाल).
समलोक, लुधियाना
चुघ, दिल्ली. १८—

इस प्रतियो

१—जानने जैसी
सुनो कहानी—ले.
ज्योति कथाएं—ले.
प्र. उपर्युक्त—पृ. ४
६—सुबह का भूला—
पृ. ९७. ८—अंतरिक्ष
वेगड—प्र. दर्शनाचा
उपर्युक्त—पृ. ४४.

भूल सुधार : '
पुरस्कार की रा
अंक में प्रकाशित

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं० १४ का परिणाम

सर्वशुद्ध हल वाले ३ प्रतियोगियों ने प्रथम पुरस्कार जीता

सही उत्तर—१–बाल, २–रामजी, ३–गाड़, ४–डर, ५–कट, ६–नाचने, ७–मामा, ८–काम, ९–फल, १०–पाने, ११–सरदार, १२–काम.

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १४ में इस बार ३ प्रतियोगियों के हल सर्वशुद्ध आए. प्रत्येक को २३३ रु. ३४ पै. प्राप्त हुए. १८ प्रतियोगियों की १ अशुद्धि आई. इनमें से प्रत्येक प्रतियोगी को १६ रु. ६७ पै. प्राप्त हुए.

अगर आप को पूरा भरोसा है कि आप पुरस्कार के हकदार हैं और आपका नाम पुरस्कार विजेताओं की सूची में नहीं है, तो आप १ फरवरी '७० से पूर्व **प्रतियोगिता संपादक, 'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता, पोस्ट बॉक्स नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई-१** के पते पर एक पत्र लिखें. उस पत्र में अपनी पूर्ति की अशुद्धियों की संख्या, पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर रसीद, या नकद रसीद का नंबर दें. साथ में जांच की फीस के रूप में १ रुपया मनी आर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. यदि आपका दावा सही होगा, तो पुरस्कार की राशि को उसी के अनुसार फिर से वितरित किया जाएगा. **पुरस्कार की राशि फरवरी १९७० में कार्यालय से भेजी जाएगी.**

सर्वशुद्ध हल वाले ३ विजेता : प्रत्येक को २३३ रुपये ३४ पैसे

१–रत्ना शर्मा, द्वारा श्री के. एल. शर्मा, भारत चैंबर आफ कामर्स, १९५, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७. २– निधी बरडिया, द्वारा डाक्टर एच. सी. बरडिया, नं. १, बापूसेना नगर, नागपुर-७. ३–कमलेशकुमार अग्रवाल, द्वारा रामनाथ दूधवाले, कैंट वाली मसजिद, रामपुर (उ. प्र.).

१ गलती वाले १८ विजेता : प्रत्येक को १६ रुपये ६७ पैसे

१– राजीव महाजन, जम्मू. २–सज्जनकुमार अग्रवाल, पोस्ट फारबिसगंज, जिला पूर्णिया. ३–श्याम पांडेय, खड़गपुर. ४–शंकरप्रसाद अग्रवाल, हावड़ा. ५–हेमराज दुधोड़िया, कलकत्ता. ६–दिलीपकुमार ठाकरे, लश्कर, ग्वालियर. ७–जठमल लड़ा, पो. निम्बी जोधां, जिला नागौर. ८–अनूपकुमारसिंह और कुमारी वंदनासिंह, कालाकांकर. ९– सत्यस्वरूप दत्त, पो. आ. धुर्वा, रांची. १०– रमाकांत गुप्ता, कलकत्ता. ११–अबरार हसन, आद्रा (प. बंगाल). १२–विपिनकुमार पारीक, बीकानेर. १३–रूपनारायण शर्मा, जयपुर नगर. १४–नंदकिशोर सबलोक, लुधियाना. १५–कु. निलिमा हीरो, बिलासपुर. १६–अमरनाथ तायल, कासगंज. १७–कु. मधु चुघ, दिल्ली. १८–कु. कुसुम चुघ, दिल्ली.

इस प्रतियोगिता में जिन पुस्तकों से संकेत वाक्य लिये गए उनका परिचय

१–जानने जैसी बातें—ले. मुकुलभाई कलार्थी—प्र. गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद—पृ. १६. २–सर्वोदय की सुनी कहानी—ले. बबलभाई मेहता—प्र. अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी—पृ. २१. ३–जीवन ज्योति कथाएं—ले. शकुंतला शर्मा—प्र. यंग मैन एंड कंपनी—पृ. ४९. ४–ऐसे थे शास्त्री जी—ले. रामकृष्ण शर्मा—प्र. उपर्युक्त—पृ. ४९-५०. ५–ये कहानीवाले—ले. डा. हरिकृष्ण देवसरे—प्र. प्रतिभा प्रकाशन, इलाहाबाद—पृ. ९. ६–सुबह का भूला—प्र. प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार—पृ. ५५. ७–उपर्युक्त—पृ. ९७. ८–अंतरिक्ष यात्रा की प्रथम पुस्तक—जीन वैडिक—पृ. ७२. ९–बापू सूरज के दोस्त—ले. अमृतलाल वेगड़—प्र. दर्शनाचार्य गुलाबचंद्र जैन—पृ. ४३. १०–उपर्युक्त—पृ. १४. ११–बापू की दस अंजलियां—ले. व प्र.—उपर्युक्त—पृ. ४४. १२– उपर्युक्त—पृ. ४९.

भूल सुधार : 'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. १३ के संबंध में एक प्रतियोगी का दावा सही होने के कारण पुरस्कार की राशि पुनर्वितरित की जाएगी. संशोधित शुद्ध हल तथा पुरस्कार-विजेता-सूची 'पराग' के मार्च अंक में प्रकाशित होगी. सभी पुरस्कार मार्च में भेजे जाएंगे. पाठकों की असुविधा के लिए हमें खेद है.—संपादक

गुड्डू ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, वह उधर देखेगा भी नहीं; सीधा जाएगा, अपनी साइकिल थोड़ी धीमी करेगा और 'नव-भारत टाइम्स' की एक प्रति उसकी गद्दी पर फेंककर बिना उसकी तरफ देखे आगे बढ़ जाएगा.

जिस समय उसका मालिक रेलवे स्टेशन पर अख़बारों का बंडल खोलकर उस जैसे हाकरों में बांट रहा था, गुड्डू ने उसी समय यह सोच लिया था. अपनी बारी आनेपर उसने सावधानी से सभी अख़बारों को गिना और उन्हें पास खड़ी अपनी साइकिल के कैरियर पर जमाकर रख लिया और पैडिल पर पैर रखकर वह उछल कर सीट पर बैठ गया.

जहां जहां उसे अख़बार बांटने थे, उन जगहों का पूरा नाम-पता उसे ज़बानी याद हो गया था. मिश्रा जी का मकान, अलीगढ़ वाली दूकान, हेयर ड्रैसर्स, मैसर्स

कहानी

ग़ुरूर

kissekahani.com

मुकुंदीलाल, लाला घसीटाराम मल्लूराम, ये सब सराफा बाज़ार में ही थे. उसे यह भी याद था कि उसे इन-इन ग्राहकों को ये-ये अख़बार देने हैं. जिसकी दूकान या मकान क्रमशः पहले, दूसरे नंबर पर आते, उसी क्रम से उसने अपने अख़बारों को रख लिया था; ताकि किसी प्रकार की परेशानी न होने पावे.

उसके बाद उसे सड़क पर जाना था और चार-छह दूकानों पर अख़बार देने थे, उनके बारे में भी उसे सब याद था, और उसे यह भी याद था कि इसी नई सड़क के मोड़ पर जहां फिल्मिस्तान टाकीज है, उस बूढ़े हलवाई की दूकान है जिसपर रोज सुबह वह 'नवभारत टाइम्स' देने आता है, और हलवाई की दूकान पर रोज ही गर्मा-गर्म जलेबी बनते हुए देखता है. 'च्-च्-च्'—गुड्डू ने अपने मन में सोचा और स्वयं को धिक्कारा कि जिस बात को उसे सोचना भी नहीं चाहिए था वही बात उसके मन में आ गई है.

उसने इस बात को मन से निकालने के लिए साइकिल की ओर ध्यान दिया. अभी उसे काफी दूर जाना था, इसलिए उसने पैडिल ज़रा तेज कर दिए. कैसी खचड़ा साइकिल है कंबख्त! बरसात के मौसम में तो इसका एक पहिया मन-मन भारी लगने लगता है. जी चाहता है कि कहीं नदी-नाले में फेंक दे ससुरी को! पर करे क्या! ऐसा वह नहीं कर सकता, लाचारी जो है.

वह सोचता जा रहा था और आगे बढ़ता जा रहा था. सड़क में आगे एक गड्ढा था, वह उसे अपने सोच-विचार में देख नहीं पाया था. अचानक जब साइकिल बिल्कुल उसके पास आ गई, तो उसे गड्ढे का ध्यान आया. उसने बड़ी फुर्ती से अगले पहिए को गड्ढे से बचाया. साइकिल चलाने में उसे कमाल हासिल था, मगर फिर भी वह पिछले पहिए को नहीं बचा पाया, वह छपाक् से गड्ढे में धंस गया. धत्तेरे की! गुड्डू ने मन में कहा और बाएं पैर पर पूरा जोर देकर साइ-

किल को गड्ढे से नि
बढ़ाया.

तभी उसे ध्यान अ
तारीख है और शायद
मिल जाए. वेतन क
में वह उन पैसों को खर्च
रह दिन का वेतन ही
कोई सत्तरह-अठारह
बहुत जरूरी हैं. हो स
भी बनवा लेगा. नहीं
इन्हीं कपड़ों को साफ
चलेंगे. एक सनलाइ
पिता जी को बाकी पैसे
उसने मन में सोचा, न
चाहिए, फिर जैसा ब
मैं अपनी किताब और
देकर कह दूंगा. वे मन
बेचने के लिए उन्होंने
मैं अपने आप कमाकर
घर की दशा अच्छी हो

—यादराम

र करे क्या!

बढ़ता जा
उसे अपने
जब साइ-
ले का ध्यान
को गड्ढे से
हासिल था,
बचा पाया,
भी! गुड्डू
देकर साइ-

बिल को गड्ढे से निकालकर बड़ी मुश्किल से आगे बढ़ाया.

तभी उसे ध्यान आया कि आज महीने की आखिरी तारीख है और शायद कल-परसों उसे उसका वेतन मिल जाए. वेतन का क्या करेगा? किन किन मदों में वह उन पैसों को खर्च करेगा? अभी सिर्फ सत्तरह-अठारह दिन का वेतन ही उसे मिलेगा यानी यही बस कोई सत्तरह-अठारह रुपये. किताब-कापियां खरीदनीं बहुत जरूरी हैं. हो सका, तो एक-दो कमीज या नेकर भी बनवा लेगा. नहीं, अभी इनकी क्या जल्दी है. इन्हीं कपड़ों को साफ रखा जाए, तो ये भी अभी काफी चलेंगे. एक सनलाइट की टिकिया जरूर खरीद लेगा. पिता जी को बाकी पैसे दे देने चाहिएं. बाकी ही क्यों, उसने मन में सोचा, सारी की सारी तनख्वाह दे देनी चाहिए, फिर जैसा वह उचित समझेंगे, करेंगे. हां, मैं अपनी किताब और कापियों के लिए पहले ही और देकर कह दूंगा. वे मना थोड़े ही कर सकते हैं. अखबार बेचने के लिए उन्होंने अनुमति इसी लिए तो दी है कि मैं अपने आप कमाकर पढ़ूं, किसी पर बोझ न बनूं. घर की दशा अच्छी होती, तो भला मुझे यह यह काम थोड़े ही करने देते. पर काम करना क्या कोई बुरी बात है!

अचानक उसने देखा कि वह बाजार में आ गया है और लोगों की भीड़भाड़ बढ़ रही है. क्यों न मैं यहीं से आवाज लगाना शुरू करूं? यदि किसी को अखबार की जरूरत होगी, तो खरीदेगा. निश्चित संख्या की प्रतियां जो उसे स्थायी ग्राहकों के लिए दी जाती हैं, वे तो अलग हैं. अनिश्चित खरीदारों के लिए भी वह कुछ अतिरिक्त प्रतियां रखता था, उनपर उसे कुछ कमीशन भी मिल जाता था. वह रोज इस तरह की बेची हुई प्रतियों की संख्या अपनी एक नोट बुक में लिख लेता था.

सर्राफा बाजार की तरफ जाने वाली सड़क पर उसे मुड़ना था और चौराहे पर काफी भीड़ हो रही थी. क्या हो सकता है इतनी सुबह सुबह? अभी साढ़े सात भी तो नहीं बजे हैं. वह अपनी उत्सुकता रोक न सका. पर उसे काम भी जल्दी खत्म करना था इसलिए वह साइकिल से उतरा नहीं. भीड़ के एक किनारे पर साइकिल धीमी की, फिर दाहिना पैर जमीन पर टिकाया और बायां पैडिल पर रखे-रखे ही खड़ा हो गया. भीड़ के बीच से गाने की आवाज आ रही थी. कोई भिखारी या अन्य व्यक्ति कोई ग्रामीण गाना गा रहा था. उसे कतई अच्छा न लगा. वह हैंडिल सीधा करके पैडिल चलाने लगा और सोचने लगा कि हमारे देश के लोग संगीत का क-ख-ग भी नहीं जानते, तभी तो इस तरह की निरर्थक 'हाय-हाय' के पीछे इतनी भीड़ जमा हो गई है. वह धीरे से हंसा, पैसे जो नहीं लगते! कैसा फूहड़ गाना था, इससे अच्छा तो उसका गांव वाला बड़ा भैया, जब होली का स्वांग भरता है तब गाता है—कैसा सुरीला, कैसा मीठा!

और उसकी स्मृति में अपने गांव का वह दिन ताजा हो उठा, जब उसने पहली बार भैया को स्वांग भरकर गाते हुए सुना था—

'गर्मा-गर्म जलेबी ताजा,
इसको ले घूंघट में खा जा!'

वाह, कैसा सुंदर गीत था! गांव वालों की अक्ल की तारीफ करनी पड़ती है. हलवाई अपनी जलेबी की तारीफ करता है, यह तो ठीक है, मगर वह घूंघट वाली बात! हंसी आई उसे. वास्तव में ताजा और गर्मा-गर्म जलेबी खाने की ही चीज है. क्या मजा है, गर्मा-गर्म जलेबी खाने में! यों उसने आज तक कभी गर्म जलेबी नहीं खाई थी. गांव में ही एक बार किसी की शादी में उसने जलेबी खाई थी. कैसी रसभरी थी मीठी मीठी, पर थी ठंडी ही. गर्मा-गर्म में न जाने कितना स्वाद आता होगा!

एकाएक उसकी कल्पना पर ब्रेक लग गए. वह अपने आप को कोसने लगा कि क्यों वह यह सब निरर्थक बातें सोच-सोचकर अपना दिमाग खराब कर रहा है. उसने तो यह सब अपने दिमाग में भी न लाने का पक्का निश्चय पहले ही कर रखा, फिर आज क्यों

—यादराम 'रसेंद्र'—

दिलतोड़

ये विचार ही रह रहकर उसके मस्तिष्क में आ रहे हैं?

"अंधा होकर चलता है, बे! बेवकूफ कहीं का!" एक तीव्र झटका लगा और सामने वाला व्यक्ति गिरते गिरते बचा. वह यदि साइकिल को जल्दी से न संभालता, तो वह भी उसके ऊपर गिर पड़ता. वह व्यक्ति उठा और उठकर उसने गुड्डू का कान उमेठा और डपट कर कहा, "क्यों, बे, तेरी आंख है या बटन?"

गुड्डू चाहता, तो अकड़कर दो-चार खरी-खोटी सुना सकता था, पर गलती उसकी थी, और काम में भी देर हो रही थी इसलिए बड़ी विनम्रता से बोला, "बाबू जी, बटन तो नहीं, हैं तो आंखें ही, पर आपने भी ध्यान नहीं दिया, इसलिए यह हुआ, मैं क्षमा चाहता हूं!"

वह व्यक्ति जरा गर्म मिजाज का था. गुड्डू अपनी गलती मान रहा था, इसलिए वह थोड़ा नर्म पड़ा, उसने उसका कान भी छोड़ दिया, अब गुड्डू चिल्लाने लगा, "आज का ताजा अखबार, आज का ताजा अखबार! माओ लापता, चाऊ को सख्त जुकाम! ग्यारह व्यक्ति बेवकूफ हो गए! चीन में युद्ध की तैयारियां! सीमा पर गोलाबारी! चांद पर फतह!"

यद्यपि उसने अभी तक आज के ताजा समाचार देखे तक नहीं थे, फिर भी वह इन बातों में काफी माहिर हो गया था कि लोग कैसी खबरें सुनकर अखबार जल्दी खरीदते हैं.

●

अब वह सर्राफा बाजार में आ गया था और इस क्षेत्र के सभी अखबार बांट चुका था. अब उसे नई सड़क पर जाना था और आखिरी अखबार उसे नुक्कड़ वाले हलवाई को देना था. हलवाई की छवि सहसा उसकी आंखों के आगे आ गई. वह ऊकड़ बैठा है और पल्ली से जलेबियां उतार रहा है—जलेबियां ... गर्मा-गर्म! उसे अचानक लगा कि उसके पेट में बहुत जोर की भूख लग आई है. सुबह वह कुछ भी खाकर नहीं निकलता था. इतनी सुबह चाय भी तैयार नहीं होती थी. नाश्ता वह वापसी पर काम निबटाकर करता था. और जब कभी बहुत जोर की भूख घर दबोचती और जेब में पैसे होते, तो सस्ती से सस्ती चीज खरीदकर खा लेता था. पैसे उसके पास होते ही न थे, इसलिए प्रायः वह घर पहुंचते पहुंचते भूख से तड़प उठता था. और चूंकि आखिरी अखबार वह हलवाई की दूकान पर देता था और हलवाई उस समय गर्मा-गर्म जलेबियां उतार रहा होता था, इसलिए बहुत बार उसके मन में आता था कि थोड़ी सी गर्मा-गर्म जलेबियां ही खा ले. मगर अधिकतर जेब खाली रहती थी और उधार मांगकर वह शर्मिंदा नहीं होना चाहता था.

अब वह नई सड़क पर आ गया था. हलवाई की दूकान तीसरी थी और यहीं से उसके नथुनों में गर्मा-गर्म जलेबियों की सौंधी सौंधी सुगंध घुसने लगी थी. उसे लग रहा था कि पेट में भूख बहुत जोर से लगी है और अब एक पैडिल भी आगे मारना उसके लिए मुश्किल है. फिर वापस वह भूखा कैसे जा सकेगा?

यह आज का ही सवाल नहीं था. यह रोज का सवाल था. वह अपने आप को रोज ही कठोरता-पूर्वक जब्त करने की सोचता था. फिर भी उसके मुंह में पानी भर ही आता था. मन नहीं मानता था और उसकी ललचाई आंखें देखकर कोई भी उसकी कमजोरी भांप सकता था. मगर आज वह पहले ही कठोर बनकर चला था, फिर भी जैसे जैसे वह दूकान के निकट पहुंच रहा था, उसकी कठोरता गायब होती जा रही थी और अब उसे सिर्फ भूख लगी थी—भूख, वह भी बड़े जोर की!

अचानक उसने अपने आप को हलवाई की दूकान पर खड़े पाया. हलवाई जलेबियां उतारने में लगा था, गुड्डू को देखकर बोला, "आज बहुत देर लगा दी, बेटा!"

"जी हां, ऐसा हुआ कि रास्ते में एक आदमी टकरा गया था."

"बहुत बुरा हुआ, कहीं लगी तो नहीं?"

"जी नहीं, धन्यवाद!" गुड्डू ने कहा और 'नव-भारत टाइम्स' की प्रति निकालकर हलवाई की तरफ बढ़ा दी. हलवाई ने एक हाथ में पौनी पकड़ रखी थी, उसे कड़ाई में दाबे हुए उसने दूसरे हाथ से अखबार ले लिया.

"सौ ग्राम जलेबी दीजिए" किसी ग्राहक ने आकर कहा.

गुड्डू का ध्यान बरबस जलेबियों की ओर चला गया. उसे लगा कि उसे भी जलेबियों की सख्त इच्छा है. उसने अपना हाथ जेब में डाला. सौभाग्य से आज उसकी जेब में एक रुपया था. यह रुपया शायद पिता जी ने सब्जी लाने के लिए दिया था. वह याद करने लगा. सोचा कि चलो आज तो जलेबियां खा ही लूं!

फिर अचानक उसे ध्यान आया कि यह तो रोज-रोज का काम है और अगर आज मैंने मन को थोड़ी भी ढील दी, तो यह बिगड़ जाएगा. जबान का क्या है, स्वाद बुरा है, चाहे किसी भी चीज का क्यों न हो. उसका हाथ जेब में ही रह गया. वह घर जाने को बढ़ा किंतु फिर उसने जेब टटोली और बिल का पर्चा हलवाई की तरफ बढ़ाकर वह तेजी से आगे बढ़ गया.

उसे जोर की भूख लगी थी और वह जल्दी से जल्दी सब्जी खरीदकर घर पहुंच जाना चाहता था, जहां उसकी मां गर्मा-गर्म चाय उसके लिए तैयार करने को उत्सुक बैठी होगी और वह शांतिपूर्वक बासी रोटियों के साथ चाय पीकर अपनी भूख को शांत करके स्कूल चला जाएगा. ●

लाइन नं. १, मकान नं. ३९, बिरलानगर, ग्वालियर-४

कुछ समय से भो
मुहावरा चढ़
"भोलू भाई, आज
है," तो झट से
पूछने की बात है,
डायरेक्टरी उठाएं
कर फौरन टेलीफो
में पिक्चर का नाम

अगर उनकी
अपनी खेल के पसी
थी डाली है या
लो, तिल की ओट
भोंडी को दिए जा

जब भोलू
उनसे यही सीधा-
उन्होंने उन्हें समझ
ढंग से बात बात
के तिल के पीछे
कोई बहुत महत्व
जरा-सा यत्न कर

मगर भोलू
जो हाथ लगा,
अध्यापक, सहपा
थे. एक दिन
देखकर मुसकरा
भी मुसकराए.
पर बैठे ही थे
भाई, तीन स
उपस्थित कोई
तुम तो लड़ाओ

भोलू भाई
"वाह! ति
क्या सवाल है?"

अध्यापक
थे—बस भोलू
मुसकराने लगे.

१—एक
उसकी परिधि
रामू का घर
सीध में एक
परिधि पर

kissekahani.com

भोलू भाई की भूल भुलैया-२६

तिल की ओट पहाड़

कुछ समय से भोलू भाई की जबान पर एक नया मुहावरा चढ़ गया है. अगर उनसे पूछो, "भोलू भाई, आज नटराज में कौन-सी पिक्चर चल रही है," तो झट से बोल उठेंगे, "वाह! यह भी कोई पूछने की बात है. तिल की ओट पहाड़—झट से डायरेक्टरी उठाएंगे, नटराज का टेलीफोन नंबर खोज कर फौरन टेलीफोन करेंगे, और टूटी-फूटी अंगरेजी में पिक्चर का नाम पूछकर आपको बता देंगे.

अगर उनकी अम्मां जी उनसे पूछेंगी कि उन्होंने अपनी खेल के पसीने से लथपथ कमीज साबुन लगाकर धो डाली है या नहीं, तो वह झट से बोल उठेंगे, "यह लो, तिल की ओट पहाड़! वह तो हमने कल ही धोबी को दिए जाने वाले कपड़ों में डाल दी थी."

जब भोलू भाई के पिताराम को भी दो-चार बार उनसे यही सीधा-सादा जवाब सुनने को मिला, तो उन्होंने उन्हें समझाया कि मुहावरों को इतने सस्ते ढंग से बात बात में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. पहाड़ के तिल के पीछे होने की बात तब कही जाती है, जब कोई बहुत महत्वपूर्ण बात समझ में न आ रही हो, और जरा-सा बल करते ही समझ में आ जाए.

मगर भोलू भाई को तीसमारखां का एक मुहावरा जो हाथ लगा, तो वह उसे काहे को छोड़ें? उनके अध्यापक, सहपाठी, सभी उनकी इस आदत से तंग थे. एक दिन जब वह कक्षा में घुसे, तो सब लोग उन्हें देखकर मुसकराने लगे—उनके गणित के अध्यापक भी मुसकराए. अभी चकित भाव से वह अपने डेस्क पर बैठे ही थे कि अध्यापक महोदय ने पूछा—"भोलू भाई, तीन सवाल बहुत परेशान कर रहे हैं. यहां उपस्थित कोई भी छात्र उन्हें हल नहीं कर पाया. जरा तुम तो लड़ाओ अपनी अक्ल."

भोलू भाई की बांछें खिल गईं. पटाक् से बोले, "वाह! तिल की ओट पहाड़! जल्दी से बताइए क्या सवाल हैं?"

अध्यापक जी ने तीनों सवाल बोर्ड पर लिख रखे थे—बस भोलू भाई को इशारा किया और मंद मंद मुसकराने लगे. सवाल इस प्रकार थे :

१—एक रेलवे लाइन गोलाकार बनी हुई है. उसकी परिधि के किसी 'अ' पाइंट पर सिगनलमैन रामू का घर है. अगर हम उसके घर से व्यास की सीध में एक रेखा गोले के अंदर खींचें, तो वह रेखा परिधि पर दूसरी ओर जहां जाकर मिलेगी, उस 'ब' बिंदु पर रामू की कैबिन है जहां उसे प्रति दिन काम के लिए आना पड़ता है. अब उसके सामने समस्या यह है कि जब वह अपने घर से बाएं हाथ वाली गाड़ी पकड़ता है तो उसे अपनी केबिन तक पहुंचने में सिर्फ एक घंटा बीस मिनिट लगते हैं, लेकिन जब दाईं ओर से गाड़ी पकड़कर जाता है, तो कुल ८० मिनिट लगते हैं. बताओ ऐसा क्यों है?

२—एक टोकरी में पांच सेब रखे हुए हैं. कमरे में तुम्हारे पांच मित्र बैठे हुए हैं. तुम हरेक को एक एक सेब देना चाहते हो, लेकिन यह भी चाहते हो कि एक सेब टोकरी में ही बना रहे. बताओ तुम क्या करोगे?

३—एक किसान के खेत के पूरब वाले कोने में भूसे की ३½ ढेरियां हैं. पश्चिम वाले कोने में ४½ ढेरियां हैं. अगर वह इन सब ढेरियों को मिला देता है, तो कुल मिलाकर कितनी ढेरियां हो जाएंगी?

इन प्रश्नों को पढ़ते ही भोलू भाई के मुंह से उनका रटारटाया मुहावरा इस तरह गायब हो गया, जैसे गधे के सिर से सींग. उनकी दृष्टि काले बोर्ड पर ही टंगी रह गई.

(बच्चो, क्या तुम भोलू भाई को फिर से वह मुहावरा याद दिला सकते हो? कोशिश करो, और अपने उत्तर एक पोस्टकार्ड पर लिखकर नीचे लिखे पते पर १५ फरवरी तक रवाना कर दो. पोस्टकार्ड पर नीचे दिया हुआ टोकन चिपकाओ. बिना टोकन चिपके हुए पोस्टकार्डों पर विचार नहीं किया जाएगा. जिनके उत्तर सही होंगे, उनमें से कार्यालय में आए पहले पच्चीस नाम 'पराग' के अप्रैल अंक में प्रकाशित किए जाएंगे. पता यह लिखो—भोलू भाई की भूलभुलैया नं. २६, 'पराग', पो. आ. बा. नं. २१३ टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई– १.)

'पराग'
फरवरी १९७०
भोलू भाई की भूलभुलैया नं. २६
[टोकन]

कहानी

एक परीक्षा

kissekahani.com

कोई दिन ऐसा नहीं आता था, जब राजू व शंकर में 'तू-तू मैं-मैं' न होती हो. शंकर राजू को अपना कट्टर दुश्मन समझता था, तो राजू शंकर को अपना पक्का बैरी. किसी को पता नहीं था कि इनका मन-मुटाव कब शुरू हुआ. राजू, शंकर का सगा भाई न सही, चाचा का लड़का तो था. दोनों एक ही क्लास में पढ़ते थे. क्लास में राजू आगे के डेस्क पर बैठता, तो शंकर सबसे पीछे. घर से स्कूल के लिए निकलते, तो साथ साथ नहीं. अगर कभी एक साथ निकलते भी, तो राजू गली के एक नुक्कड़ से निकलता और शंकर दूसरे नुक्कड़ से जाता.

घरवाले उन्हें समझाते, अध्यापक उन्हें लेक्चर झाड़ते, साथी-संगी लाख मनाते; लेकिन उन्होंने अपनी राह नहीं छोड़ी. और जब से शंकर ने राजू को अंटी मारकर गिराया था, जिससे राजू का घुटना छिल गया था और माथे से खून बहने लगा था, तब से दोनों में बोलचाल तक बंद हो गई थी. इतना ही नहीं, दोनों एक दूसरे के जाती दुश्मन हो गए थे.

राजू अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुआ था. घटने पर अभी तक पट्टियां बंधी थीं और वह लंगड़ाकर चलता था कि उन्हीं दिनों एक दिन घर में खुशी की लहर दौड़ गई. लखनऊ से रीता का तार आया था कि वह दो माह की छुट्टियां लेकर सुबह की ट्रेन से आ रही है. रीता शंकर की बड़ी बहन थी जो लखनऊ में एक गर्ल्स स्कूल में टीचर थी. लगभग साल भर बाद घर आ रही थी, इसलिए सभी खुश थे. शंकर और राजू भी. लेकिन मम्मी ने शंकर और राजू की मौजूदगी में घर के बड़ों से कहा—"रीता दीदी आ रही है, शंकर और राजू में से अब कौन रीता दीदी के आगे पीछे घूमेगा, कौन उनके साथ रहेगा? दोनों तो एक साथ रह न सकेंगे. ऐसी हालत में रीता इन दोनों के बारे में मनमें क्या सोचेगी?"

यह बात सुनकर शंकर और राजू— दोनों का माथा ठनका. दीदी के आगमन की खुशी में इस तथ्य को वे भूला ही बैठे थे. रीता दीदी दोनों को समान रूप से चाहती थी. दोनों को पिछले वर्ष की वह बात याद हो आई जब रीता दीदी ने लखनऊ के लिए रवाना होते समय उन्हें कही थी— "अबके जब मैं आऊं, तो तुम दोनों को एक साथ देखूं. अगर एक दूसरे से मुंह फुलाए रखोगे, तो मैं भी दोनों से बात नहीं करूंगी." दीदी दोनों की दोस्ती देखना चाहती थीं लेकिन यहां तो खाई और ज्यादा गहरी हो चुकी थी. अगर दीदी ने आते ही दोनों की लानत-मलामत शुरू कर दी, तो जवाब न देते बनेगा! अब क्या होगा? दोनों ने सोचा.

रीता को लेने के लिए घर के लोग स्टेशन पर गए और उनका हार्दिक स्वागत किया. शंकर भी स्टेशन गया था. रीता से मिलकर बड़ा खुश हुआ था. उसके सिर पर प्यार से हल्की-सी चपत मारते हुए रीता ने पूछा— "अरे, तू तो आ गया, वह तेरा दुश्मन कहां है राजू?"

राजू का नाम सुन कर शंकर की खुशी काफूर हो गई. लेकिन यहां वह अपनी नाराजगी भी बताना नहीं चाहता था. इसलिए भीड़ में राजू को तलाश करने लगा. परंतु राजू वहां कहां था? वह तो शंकर को स्टेशन जाते देख अपने मित्र सतीश के यहां चला गया था. सतीश ने ताज्जुब किया था—"तुम्हारी दीदी आ रही हैं और तुम यहां?" इधर रीता कह रही थी— "सब ही आए, लेकिन राजू नहीं आया. शंकर से नाराज है तो क्या वह मुझसे भी खफा है?"

फिर राजू के न आने की बात वहीं खत्म हो गई. शंकर ने चैन की सांस ली. इसके बाद इधर-उधर की बातें करते हुए सब टैक्सी में बैठे और घर चले आए.

हुसनजमाल छीवा

रीता क्या आई, घर में बहार आ गई. एक तो वही काफी अर्से बाद आई थी, दूसरे घर का कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था, जिसको रीता से कोई शिकायत रही हो. कभी किचिन में मम्मी का हाथ बंटा रही है, तो कभी बाबा के कोट के बटन टांक रही है. या उनका लिखा मैटर सुलेख में लिख रही है. कभी वह बच्चों के कपड़े धोते नजर आती, तो कभी घर की सफाई करते. गणित का सवाल शंकर नहीं कर पा रहा है, तो उसके पास बैठकर बड़ी दिलचस्पी से सवाल हल कराने लगी, पम्मी ड्राइंग बना रही है तो उसे रंग भरने का सलीका बताने बैठ गई. फिर बातें भी उसकी मजेदार होतीं थीं. चुप-चुप रहना उसने सीखा ही न था. अब कोई उससे नाराज हो, तो क्योंकर हो?

दीदी ने घर आते ही राजू को तलाश किया. वह सतीश के यहां से अभी तक नहीं लौटा था. उसने शंकर से राजू को बुला लाने के लिए कहा. शंकर सिर खुजाने लगा.

"क्या तुम राजू को बुलाकर नहीं ला सकते?" दीदी ने पूछा.

"वो. . . मैं. . . मेरा मतलब. . ." शंकर हकला कर बोला, "मुझे क्या मालूम कहां गया होगा वह?"

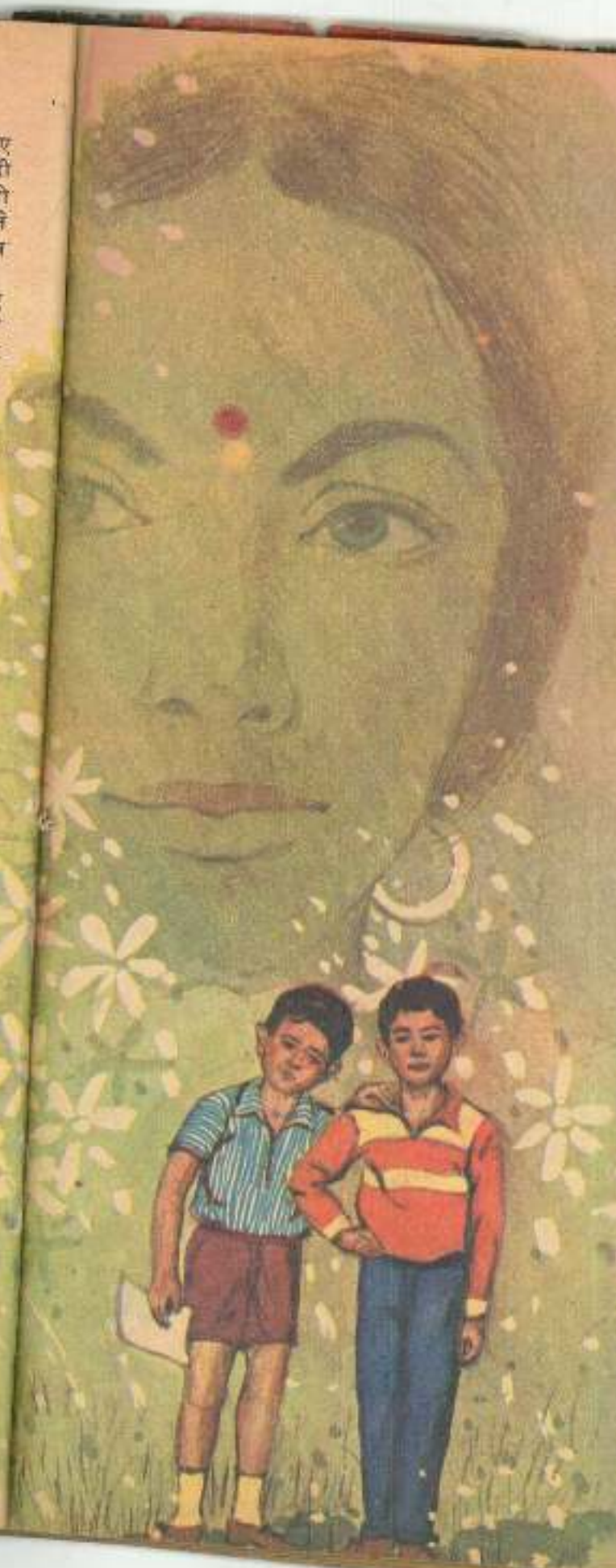

"पम्मी कह रही थी, सतीश के यहां गया है!" दीदी ने झट कहा.

बचाव की सूरत न देखकर शंकर वहां से रवाना हो गया. दीदी को अब वह 'ना' कैसे कह देता! लेकिन बुलाने भी वह न गया. पम्मी को ही एक छोटा-सा लालच देकर भेज दिया.

राजू, पम्मी के साथ आया, तो रीता मामला भांप गई. लेकिन शंकर के बारे में कुछ नहीं पूछा, बल्कि राजू से स्टेशन न आने की शिकायत करने लगी—"क्या दीदी इतनी बुरी लगती हैं कि उसे लेने तक नहीं आए? तेरे अलावा सभी आए थे!"

"वो. . . जरा मुझे सतीश ने बुला लिया था, कोई जरूरी काम था," राजू ने गड़बड़ाकर कहा.

सतीश को बुलाकर पूछ कि, "भई, ऐसा क्या काम था जो मेरे प्यारे भैया को आधे घंटे के लिए भी फ्री न कर सके?" दीदी ने राजू के चेहरे को गौर से देखते हुए कहा.

राजू के चेहरे पर एक रंग आता था, दूसरा जाता था. बोला—"अब सतीश को बुलाने की क्या जरूरत है, मैं जो कह रहा हूं."

दीदी गंभीर हो गई—"देखो, राजू, रीता को मूर्ख न बनाओ. मैं सब समझती हूं. तुम इसी लिए स्टेशन पर नहीं आए थे न, कि शंकर भी था वहां? पता नहीं तुम्हारा मेल कब होगा? क्या तुम लोग हमेशा ऐसे ही लड़ते रहोगे? एक भाई वो भी होते हैं, जो भाई के लिए जान तक दे देते हैं और एक तुम हो कि एक मुस्कराहट तक नहीं दे सकते अपने भाई को—मुस्कराहट जिसकी कोई कीमत नहीं लगती और जो सबसे अधिक मूल्यवान होती है!"

"दीदी, कोई दूसरी बात करो न!" राजू रुआंसा होकर कहने लगा. "अबके कितनी छुट्टियां लाई? वह तुम्हारी भैंस टाइप प्रिंसिपल का ट्रांसफर हो गया या नहीं? हंसती है तो कैसा लगता है, जैसे बहेल मछली तड़प रही हो! अब कब मिलाओगी उससे?"

"बातें करने में तो बड़े माहिर हो!" रीता ने उस की नाक पकड़कर हिलाते हुए कहा.

रीता को गए हुए पंद्रह दिन हो गए. इन पंद्रह दिनों में वह सहेलियों से मिली, रिश्तेदारों के यहां गई, यह किया वह किया, लेकिन फिर भी उसके मन में एक कांटा चुभा हुआ था कि एक काम है जो वह नहीं कर पा रही है. लगता है शंकर और राजू दो किनारे हैं, जो कभी आपस में नहीं मिलेंगे. काश, वह इन किनारों पर पुल बना जाए!

एक दिन पिकनिक का प्रोग्राम बना. रीता ने सुबह जल्दी उठकर रसोई संभाली—शंकर और राजू जब उठे तो ताकीदभरी उसने खुशखबरी सुना दी—"ठीक नौ बजे तैयार रहना, मंडोर चलेंगे—तुम दोनों और मैं, बस!"

रीता दीदी ने कहा था, ना करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था. नौ बजे तक वे दोनों भी तैयार हो गए. शंकर भी चुप था और राजू भी. प्रत्येक मन में सोच रहा था कि बुरे फंसे. शंकर ने दबे लफ्जों में पूछा भी—"दीदी, और कोई साथ नहीं चलेगा?"

"मैं चलूंगी, राजू चलेगा. और किसका साथ चाहिए?"

और शंकर चुप हो गया. रीता ने टिफिन भर लिया खाने का. दरी, थर्मस आदि अन्य जरूरत की छोटी बड़ी चीजें इकट्ठी कर लीं. गली के मोड़ पर टैक्सी भी मंगवा ली गई. तीनों बहन-भाई रवाना हुए. आश्चर्य की बात थी कि न तो बड़ों ने इस संबंध में कुछ पूछा और न छोटों ने जिद की.

मंडोर का रास्ता मुश्किल से आधा घंटे का था. सारे रास्ते शंकर व राजू की जबान पर ताले ही पड़े रहे. कभी कभी रीता कोई बात पूछती, तो जवाब दे देते और फिर चुप.

मंडोर पहुंचने के बाद भी उनका वही रवैया रहा. मंडोर शहर का सब से बड़ा उद्यान था, चारों ओर हरी हरी रेशमी दूब के कालीन बिछे थे, रंग-बिरंगे फूलों की छटा देखते ही बनती थी, ठंडी हवा चल रही थी. ऐसे वातावरण में शंकर और राजू मुंह लटकाए रीता के साथ चुप-चाप घूम रहे थे.

एक बार रीता ने झल्लाकर कहा—"आखिर तुम लोग आए क्यों मेरे साथ? एक का थोबड़ा सूजा हुआ है, दूसरे की सूरत पर बारह बज रहे हैं."

"हम कौनसा अपने आप आए हैं, तुम्हीं लेकर आई हो!" राजू को भी गुस्सा आ गया.

"अच्छा, मैं ही लेकर आई, लेकिन इसलिए नहीं कि तुम मुंह फुलाए फिरो!"

शंकर और राजू के पास इसका कोई जवाब नहीं था.

दोपहर के वक्त जब लंच से फारिग हुए, तो रीता ने टिफिन बंद करते हुए कहा—"मैं जरा बाथ-रूम हो कर अभी आती हूं."

शंकर और राजू हैरत से दीदी की तरफ देखने लगे. लेकिन तब तक दीदी बाग के उस कोने की तरफ रवाना हो चुकी थी, जहां शौचालय बने हुए थे.

रीता के जाने के बाद एक-एक पल उनके लिए एक-एक घंटे का हो गया. दरी पर कुहनियों के सहारे एक दूसरे की विपरीत दिशा में वे गुमसुम लेटे थे. यों ही इधर-उधर नजरें घुमा लेते थे. मुद्दत के बाद दोनों एक स्थान पर अकेले साथ बैठे थे. वक्त काटने के लिए हरेक चाहता था कि अगला कुछ बोले, तो वह व्यंग्य में जवाब दे. लेकिन शुरुआत करने की हिम्मत किसी में न थी.

धीरे धीरे रीता को गए हुए आधा घंटा हो गया और फिर एक-एक मिनिट करते घंटा भर गुजर गया. वह वापस न लौटी. अब तो दोनों को चिंता होने लगी. दोनों बार बार उधर नजरें दौड़ाते जिधर रीता गई थी, लेकिन रीता लौट ही नहीं रही थी. अब उनपर घबराहट भी सवार होने लगी. रीता दीदी आखिर गई कहां? बाथ रूम में उन्हें कभी इतनी देर नहीं लगती.

शंकर बड़ा था. फिक्र उसी को ज्यादा हो रही थी. आखिर उसी ने झिझक तोड़कर कहा—"हम मूर्खों

भोलू भाई की भूलभुलैया नं. २४
सही हल और परिणाम

उस तथाकथित ताऊ ने ४९ टोटे बटोरकर उनकी ७ सिगरेटें बनाईं और पी डालीं, फिर उन सात सिगरेटों के बचे टोटों से एक और सिगरेट बनाई. इस तरह कुल ८ सिगरेटें बनीं.

इस बार भी सही हल भेजने वाले बच्चों की संख्या इतनी अधिक थी कि सभी के नाम छापने संभव नहीं थे. इसलिए पूर्व घोषणा के अनुसार कार्यालय में पहले आए पच्चीस सही कार्ड वाले बच्चों के नाम दिए जा रहे हैं. जो इस प्रकार हैं :

दिल बाग, जम्मू; विनयकुमार मिश्र, साहिबगंज; अशोककुमार गुप्ता, मवाना (मेरठ); रेवाशंकर गर्ग, नसुल्लागंज; लवकुशकुमार, बिसौली (बदायूं); विश्वास सहस्रबुद्धे, महिदपुर; ललिता पाराशर, लातूर; प्रेमसिंह माथुर, चुरू; पवनकुमार छापड़िया, बरबीघा (मुंगेर); सुधीरकुमार जैन, गोंदिया; मृत्युंजयकुमार शर्मा, श्रीगंगानगर; विश्वजीत मुखर्जी, बरबीघा; विष्णुप्रसाद गुप्ता, राजगढ़; कैलाशनारायण गर्ग, पचौर; मंजुकुमारी जैन, ब्याहेली (भीलवाड़ा); भंवरलाल सोनी, बराड़ा; विजयकुमार बांसल, जगराओं; रवि गुलाटी, पिलानी; विकास नीरज, अल्मोड़ा; विनायक माहेश्वरी, चुरू; अशोककुमार भागचंदानी, कोपरगांव; शिराज डी. केसरिया, जामनगर; प्रमोदकुमार जायसवाल, सीहोर; लक्ष्मीनारायण, गुलेदगुड्ड; किशोर पी. सोमानी, राजकोट

की तरह यहां बैठे
हैं. . . मैं देखके अ
बैठो."

राजू ने गर्व अनु
ही. उसने खुशी से
कदमों से उद्यान में
रीता वहां नहीं थी.
दीदी कहां चली गई
इधर-उधर चक्कर
हांपता-कांपता वह
गया, राजे (वह र
था), रीता दीदी
जगह ढूंढ आया हूं,
"अब क्या हो
"यही तो मैं
कर दरी पर बैठते
बैठे रहे. दीदी के
मालूम है, शहर में
"तो?"
"तो क्या? म
में फंस गई हो!"
"तुम तो हमें
बच्ची तो हैं नहीं
"दीदी बच्ची
इतना भी नहीं
सोच—तू दीदी की
ले, तो तू क्या करे

छोटी-छोटी

"रात को जब
बड़ा डर लगता
पुकारना पड़ता

की तरह यहां बैठे हैं. दीदी को गए घंटा भर हो चुका है. . . मैं देखके आता हूं, तुम यहीं सामान के पास बैठो."

राजू ने गर्व अनुभव किया कि पहले बोला तो शंकर ही. उसने खुशी से गरदन हिला दी. शंकर तेज तेज कदमों से उद्यान में बने शौचालयों की तरफ गया. रीता वहां नहीं थी. शंकर सकते में रह गया. हे भगवान, दीदी कहां चली गई? वह पागलों की तरह बाग में इधर-उधर चक्कर लगाने लगा. रीता कहीं नहीं मिली. हांपता-कांपता वह राजू के पास आया—"गजब हो गया, राजे (वह राजू को प्यार में राजे ही कहा करता था), रीता दीदी का कहीं पता नहीं चला, मैं सब जगह ढूंढ आया हूं, वह कहीं न मिलीं!"

"अब क्या होगा?" राजू ने भी घबराकर पूछा.

"यही तो मैं सोच रहा हूं," शंकर ने माथा पकड़ कर दरी पर बैठते हुए कहा: "मेहमानों की तरह यहां बैठे रहे, दीदी के साथ जाना चाहिए था एक दो. मालूम है, शहर में गुंडागर्दी कितनी फैली है?"

"तो?"

"तो क्या? भगवान न करे, दीदी किसी मुसीबत में फंस गई हों!"

"तुम तो हमेशा बुरा ही सोचते हो, दीदी कोई बच्ची तो हैं नहीं?"

"दीदी बच्ची नहीं, लेकिन तू तो बच्चा ही है! इतना भी नहीं जानता, दीदी औरत जात हैं, जरा सोच—तू दीदी की जगह हो और दस गुंडे तुझे पकड़ लें, तो तू क्या करेगा?"

"भैया, ऐसा न सोचो!" राजू के दिल में एकाएक शंकर के प्रति आदर उमड़ आया.

पंद्रह-बीस मिनिट वे इसी इंतजार में बैठे रहे कि शायद दीदी खुद ही आ जाएं. लेकिन इंतजार बेसूद रहा. आखिर उन्होंने सामान पैक करना शुरू किया, ताकि नये सिरे से दीदी की तलाश की जाए. शंकर ने जब दरी झटककर समेटनी शुरू की, तो अचानक राजू की नजर एक कागज पर पड़ी, जो चार तहों में मुड़ा दरी के नीचे दबा पड़ा था. राजू ने फौरन झुककर वह कागज उठा लिया. उस पर लिखा था:

'शंकर और राजू के नाम:

अगर मुझे पाना चाहते हो, तो आज से अपनी दुश्मनी छोड़ दो. वर्ना नतीजा तुम अच्छी तरह जानते हो. घर क्या मुंह लेकर जाओगे! लोग क्या कहेंगे? तुम्हारे मुंह पर थूकेंगे नहीं कि अपनी दीदी को कहीं खो आए? और यह भी सोचो, हर साल मैं राखी क्या यूं ही बांधती हूं? ध्यान से, ठंडे दिमाग से सोच लो. एक तरफ तुम्हारी दीदी है. दूसरी तरफ तुम्हारी आपस की दुश्मनी! क्या चाहिए तुमको?'

राजू ने कांपते हाथों से रीता की चिट्ठी शंकर को पकड़ा दी. शंकर दरी पटककर झट पढ़ने लगा. हूबहू रीता की लिखावट! तो क्या दीदी खुद मुसीबत में नहीं हैं, बल्कि उन्हें ही मुसीबत में फंसा गई हैं.

शंकर धम्म से नीचे बैठ गया. राजू ने भी उसका

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

छोटी-छोटी बातें—

—सिम्स

"'रात को जब चूहे खटर-पटर करते हैं, तो मुझे बड़ा डर लगता है और चिचियाकर पिता जी को पुकारना पड़ता है!"

"तो क्या हुआ? चूहों की खटर-पटर सुनकर तो पिता जी का भी दम खुश्क हो जाता है, और उन्हें भी मम्मी को आवाज देनी पड़ती है!"

"च्चटाक!"

एक जोरदार आवाज हुई. सभी छात्र चौंक उठे. कितनों की तो कलमें हाथ से छूटते छूटते बचीं. एक साथ सबकी निगाहें उस ओर जाकर थम गईं, जिधर से आवाज आई थी.

वहां सुबोध गर्दन झुकाए बैठा था, कक्षा आठ का विद्यार्थी. थप्पड़ करारा पड़ा था. चौहान साहब की मोटी मोटी अंगुलियों के निशान उसके गोरे गाल पर साफ उभर आए थे. उसने बहुत कोशिश की, कि डबडबाते हुए आंसुओं को अपनी आंखों की कैद से बाहर न निकलने दे, लेकिन असफल रहा. आखिर बालक ही तो था, सुबक पड़ा.

लेकिन चौहान साहब इससे कहां पसीजने वाले थे. कड़क के बोले—"खड़े हो जाओ!" यह आवाज थप्पड़ की आवाज से कई गुनी अधिक तेज थी. सभी के दिल ऐसे धड़कने लगे, जैसे अंधेरी रात में किसी घने जंगल के बीच से एक्सप्रेस ट्रेन पास हो रही हो—'खटाखट... खटाखट.'

कहानी

अंदर की आवाज़

—डेविड जॅवंत दास

सुबोध खड़ा हुआ. बड़ी मुश्किल से एक कातर-सी, लड़खड़ाती हुई आवाज उसके गले से निकली—

"मास्साब,...ये प...परचे मेरे न...नहीं हैं!"

"चुप, बदमाश! नकल करता है और कहता है कि परचे मेरे नहीं हैं! तेरे नहीं हैं, तो तेरे डेस्क में कहां से आए? कोई भूत रख गया या जिन्न?" चौहान साहब दहाड़े. कमरे में फिर कुछ क्षणों के लिए मौत का-सा सन्नाटा छा गया. तभी घंटी बज गई. सभी विद्यार्थियों ने अपनी अपनी उत्तर-पुस्तिकाएं जमा कर दीं. सुबोध की उत्तर-पुस्तिका के साथ वे परचे भी नत्थी कर दिए गए. आज आखिरी परचा था गणित का द्वितीय प्रश्न-पत्र. लड़कों ने बाहर निकल-कर राहत की सांस ली, मानो वे किसी सीलनदार, बदबूभरी काल कोठरी से निकले हों.

घर जाते हुए लड़के अपने अपने नंबरों का अनुमान लगाने लगे. फिर पढ़ाई-लिखाई की बातों से हट-कर, गर्मी की छुट्टी बिताने की चर्चा होने लगी. नैनीताल, शिमला, कश्मीर आदि के रंगीन सपने देखे जाने लगे. फिर फिल्मों की चर्चा शुरू हुई. अंत में केवल एक विषय बच रहा—आज की घटना का केंद्र-बिंदु सुबोध. सब लड़कों को बड़ा विस्मय हो रहा था कि सुबोध जैसा लड़का कैसे नकल करता पकड़ा गया? कक्षा का सबसे होशियार और मेहनती छात्र, उसे नकल करने की क्या आवश्यकता पड़ी? और फिर आज का परचा भी कोई कठिन नहीं था.

"यह मास्टर साहब को भी क्या सूझी, एकदम अंत में बेचारे को पकड़ लिया. थोड़ी-सी नकल कर लेने देते, तो उनका क्या बिगड़ जाता?" रमेश ने कहा.

"अरे, यह मास्टर साहब हैं ही बड़े कठोर. दया नाम की कोई चीज नहीं है उनके पास. देखा नहीं, बेचारे के डेस्क से परचे निकाल लिए, एक चपत भी जड़ दी और ऊपर से झाड़ा लेने लगे मानो किसी पाकिस्तानी घुसपैठिए की तलाशी ले रहे हों!" मोटा राजेश यह सब कुछ इतनी तेजी से बोल गया कि उसकी सांस फूलने लगी.

"बेचारे के बड़ी जोर का थप्पड़ पड़ा होगा?" किसी लड़के ने पूछा जिसकी सीट सुबोध वाले कमरे में नहीं थी.

"अबे, क्या पूछता है! मुझसे सुन. एक बार

kissekahani.com

चौहान साहब का काम करके नहीं लाया था. पहले तो पट्ठे ने मुझे कुर्सी पर खड़ा कराया, फिर वह जोर का झापड़ रसीद किया कि मैं तो गिरते गिरते बचा. शाम को तेल मलकर गाल सेंका, तब कहीं दूसरे दिन स्कूल आ सका! . . . वह तो मुझ-सा वीर था जो झेल गया, तुम लोगों जैसा कोई पिद्दी होता, तो उसे बुखार जरूर आ जाता!" सुरेश ने बड़े गर्व के साथ यह बात कही और दूसरे लड़कों की ओर देखने लगा.

उसी समय प्रमोद तेजी से साइकिल चलाता हुआ आया और साइकिल से उतरते हुए उसने बड़ी उतावली से कहा—"दोस्तो, एक बिल्कुल नई खबर लाया हूं!" सभी लड़कों ने उसे चारों ओर से घेर लिया. प्रमोद ने एक चतुर वक्ता की तरह पहले कुछ देर सबको भेद भरी दृष्टि से देखा फिर गला साफ करते हुए बताया :

"शर्मा जी, कह रहे थे कि सुबोध के पास से जो परचे पकड़े गए, उनमें उन्हीं पांच प्रश्नों के हल थे जिनका कि उसने उत्तर लिखा था. और हाथ के लिखे परचे भी नहीं थे, कुंजी से फाड़े गए थे कुंजी से. अब तो चोरी बिल्कुल साफ है. बच्चू का बचना सरल नहीं है!"

इस खबर से छात्रों में और भी खलबली मच गई. बहुतसे लड़के उदास हो गए. कुछ लड़के मन ही मन प्रसन्न हुए. आपस में फुसफुसाने लगे—"बहुत अच्छा हुआ, पकड़ा गया, चोर कहीं का! क्लास में कोई भी प्रश्न पूछा जाता तो अपना झंडा जरूर खड़ा कर देता था, मानो सर्वस्व ज्ञाता हो. बड़ा मजा आता था दूसरों को पिटवाने में. आज पता चल गया होगा जब जोर का सड़ाका पड़ा!"

"अभी क्या पता चला है, असली मज़ा तो तब आएगा जब फेल होगा. फेल न भी किया गया तो छात्र-वृत्ति अवश्य ही बंद कर दी जाएगी. और फिर बेटा की पढ़ाई अपने आप ही बंद हो जाएगी."

लड़कों की इस भीड़ से कुछ अंतर पर सुबोध के दो दोस्त नंदू और दीनू उदास उदास से चले जा रहे थे. दीनू बोला—"मुझे तो विश्वास नहीं होता, नंदू, बेचारे सुबोध को कोर्स की किताबें तक तो मुश्किल से मिलती हैं, वह कुंजी खरीदेगा, नकल करने के लिए!"

नंदू ने भी समर्थन किया—"हां, दाल में कुछ काला जरूर है. मुझे तो लगता है कि किसी दूसरे लड़के ने उसके डेस्क में परचे रख दिए होंगे. आखिर उससे जलने वाले भी तो बहुतसे हैं.

"पर, यार, उसे भी तो पेपर शुरू होने से पहले अपना डेस्क देख ही लेना चाहिए था," दीनू बोला.

"अजी, जब मुसीबत आने को होती है, तो अकल पहले से ही काम करना बंद कर देती है!" नंदू ने एक हल्की-सी आह भरी. इसी तरह की बातें करते करते वे लोग अपने अपने घर पहुंच गए.

उधर सुबोध ने भी घर की तरफ बढ़ना चाहा. हाकी का वह सेंट सेंटर फारवर्ड था, लेकिन उसके पैर आज जमीन से चिपके जा रहे थे, मानो धरती कह रही हो—'आगे मत बढ़, सुबोध! चोरी के इस कलंक को तू कहां कहां ढोता फिरेगा. तेरे लिए यही अच्छा है कि तू मेरे अंतस्तल में समा जा!' किंतु धरती फटी नहीं, वरना शायद वह उसमें समा ही जाता. उसके दिल में तरह तरह के भाव उठ रहे थे.

उसके मन में हलचल मची हुई थी. थोड़ी देर पहले ही प्रधानाचार्य ने उसे बुलाया था. बोले थे—"बेटा, तुमसे गलती हो गई है. तुम एक कागज पर लिख-कर क्षमा मांग लो. तुम्हारी सजा में कुछ रियायत कर दी जाएगी."

चोरी! सजा! रियायत! उसने एक बार चाहा कि लिख दे. क्या रखा है इसमें! एक वर्ष तो बच जाएगा. लेकिन तभी उसकी अंतरात्मा ने उसे ललकारा—'कायर मत बन, सुबोध! तूने चोरी नहीं की है. तू सत्य पर है. याद रख सच्चे इंसान को कभी डरना नहीं चाहिए.

सुबोध को अपने अंदर की इस आवाज से एक सहारा-सा मिला. उसने निश्चय किया कि वह झूठ नहीं बोलेगा, भले ही कितनी कठिनाइयां उसके सामने आएं. उसने प्रधानाचार्य को साफ साफ बता दिया—"जी, मैंने नकल नहीं की है. मैं इस संबंध में अपने को बिल्कुल दोषी नहीं समझता. अतः मैं क्षमा-याचना

की आवश्यकता नहीं अनुभव करता."

प्रधानाचार्य उसके इन दृढ़ शब्दों को सुनकर अवाक् रह गए. कुछ देर सोचने के बाद बोले— "अच्छा, अब तुम जा सकते हो."

स्टाफ रूम के पास से गुजरते हुए उसने सुना कि उसके क्लास टीचर पांडे जी और चौहान साहब में बहस हो रही थी. पांडे जी कह रहे थे— "मैं यकीन नहीं कर सकता कि सुबोध ने नकल की है."

चौहान साहब बोले— "लेकिन, भई, मैंने उसके डेस्क से परचे पकड़े हैं."

पांडे जी ने जवाब दिया— "इसका यह मतलब नहीं है कि उसने नकल की ही हो. हो सकता है कि उसने केवल नकल करने का इरादा किया हो, उसे कार्य रूप न दिया हो. परंतु इरादा करने से ही कोई अपराधी नहीं हो जाता. ऐन वक्त पर वह उसे बदल भी सकता है!"

चौहान साहब ने झुंझलाकर कहा— "मैं इस पचड़े में ज्यादा नहीं उलझना चाहता. आपको केवल इतना ही जान लेना चाहिए कि सुबोध से जो परचे प्राप्त हुए हैं, उनमें उन्हीं प्रश्नों के हल हैं, जिनका कि उसने उत्तर लिखा है!"

सुबोध पल भर भी वहां न रुक सका था. जिस अध्यापक को उसपर इतना विश्वास है, उसके सामने वह कैसे जाए? वह फील्ड के किनारे लगे बरगद के पेड़ के नीचे आ बैठा. आज से बहुत दिन पहले की एक घटना उसे याद हो आई. उस दिन हाकी खेलते समय लड़कों ने अपनी कमीजें फील्ड के किनारे उतारकर रख दी थीं. बदमाश अनिलेश ने सब कमीजें उठाकर बरगद के घने पत्तों में छिपा दीं. सुबोध यह सब देख रहा था. अंत में उसने मास्टर जी से कहकर अनिलेश को खूब पिटवाया था. उसी दिन से अनिलेश, सुबोध से जलने लगा. कई बार उसने सुबोध को मारने की कोशिश भी की. एक बार तो हाकी खेलते समय उसने सुबोध की निकर में हाकी फंसाकर उसे गिरा भी दिया था. आज भी जब सुबोध के डेस्क से परचे पकड़े गए, तो वह मुस्करा रहा था.

सुबोध अभी अनिलेश के बारे में सोच ही रहा था कि यमदूत की तरह वह आ खड़ा हुआ. साथ में उसके दो अन्य साथी भी थे.

"बधाई लो, यार! बड़े दिलेर निकले. तुमने आखिर अपनी गलती नहीं मानी. बहुत अच्छा किया. सभी नंबरी चोर ऐसा ही करते हैं!" अनिलेश बोला.

सुबोध का दिल रो उठा. आज उसकी क्या स्थिति हो गई थी. वह सबकी खिल्ली का पात्र बन चुका था. सहसा उसने निश्चय किया कि वह अनिलेश व उसके साथियों से अवश्य बदला लेगा.

वह फिर सोच में डूब गया. आज सवेरे मां ने बड़े प्यार से कहा था—'बेटा, आज तेरा इम्तिहान खतम है, न! मैं खीर बनाकर रखूंगी, तू जल्दी से आ जाना!' मां उसका कितना ध्यान रखती है. स्वयं कष्ट झेलकर उसके लिए सभी सुविधाएं जुटाती है. दिन भर बूढ़ी-सी सिलाई मशीन के पहिए को घुमाते हुए, बेटे के सुंदर भविष्य की कल्पना करती रहती है. दूसरों की सिलाई करके जो थोड़े से पैसे प्राप्त हो जाते हैं, उन्हीं से वह विधवा अपना और अपने बेटे का भरण-पोषण करती है. . . . मां खीर बनाकर इंतजार कर रही होगी. सुबोध को खीर बहुत पसंद है, परंतु वह किस प्रकार अपनी मां को अपना मुंह दिखाए!

सुबोध की हिम्मत न हुई कि घर की ओर एक कदम भी उठा सके. उसने देखा कि नंदू व दीनू आ रहे हैं उसी की ओर. मन में आया कि अपने को कहीं छिपा ले. लेकिन वे बिल्कुल पास आ गए थे.

"अरे! तुम अभी तक यहीं बैठे हो, क्या घर नहीं चलना है?" पास आते हुए दीनू ने कहा.

सुबोध ने एक शून्य-सी दृष्टि उन लोगों पर डाली और कुछ न बोला.

"इस तरह तो नहीं चलेगा, दोस्त! मुसीबत के समय बिल्कुल हताश होने से काम नहीं चलता," नंदू ने कहा और फिर कुछ क्षण रुककर आगे बोला— "मुझे तो यह सब किसी लड़के की शैतानी लगती है, जिसने तुम्हें पकड़वाने के लिए तुम्हारे डेस्क में परचे रख दिए हों. अगर तुम्हें किसीपर शक हो, तो हमें बताओ, हम मार-मारकर उसका कचूमर निकाल देंगे!"

"मुझे स्वयं कुछ नहीं समझ में आता कि कैसे यह सब कुछ हो गया. और फिर अब हो भी क्या सकता है?" सुबोध ने कातर आवाज में बताया.

"खैर, अब घर चलो. बाद में कोई उपाय सोचा जाएगा," दीनू ने कहा. सुबोध ने कोई उत्तर न दिया, कुछ सोचने लगा. दीनू ताड़ गया, बोला—"तुम माता जी से डर रहे हो? वह कुछ नहीं कहेंगी. हम लोग उन्हें समझा देंगे."

●

फिर दोनों मित्रों ने सुबोध को उसके घर पहुंचाया. सुबोध तो मां से चिपककर रोने लगा, नंदू ने ही उन्हें सारी घटना बताई. बेचारी मां ने अपने आंसुओं को पीकर पुत्र को दिलासा दिया— "बेटे, घबराओ मत, सच्चाई की कभी हार नहीं होती." इसी तरह की और भी न जाने क्या क्या बातें उसने सुबोध को समझाई जिससे उसका मन कुछ शांत हुआ. दोनों मित्र कुछ देर रुककर अपने अपने घर चले गए.

धीरे धीरे समय बीतने लगा. सुबोध का दुःख भी अब कुछ हल्का हो गया था. उसने अपने आपको पूर्णतया अपनी सच्चाई के सहारे छोड़ दिया था. उसे जो कुछ करना था, वह ईमानदारी के साथ कर चुका था, आगे फल भगवान के हाथ में है!

नंदू के पिता जी के किसी दोस्त की लैमन फैक्ट्री थी. उसी में उन्होंने सुबोध को काम दिलवा दिया था. ग्राहकों को गिन-गिनकर बोतलें देना तथा उनसे खाली बोतलें वापस लेना, यही उसका दिन भर का

काम था. वह अपने क
था. आज तक उसने
और न ही कभी को
आदमी था. वह सुबोध
नौकरों की अपेक्षा वह
दे देता था और सा
रोज के रोज उसके ह

एक दिन शाम क
दो रुपये डाले हुए थ
मस्तिष्क में तरह तर
परीक्षा फल की घोष
वह फेल कर दिया
नकल नहीं की है, तो
क्या इसलिए कि उस
हैं? क्या सच्चाई और

फिर उसकी आं
बड़ा आश्चर्य हुआ उ
कहनेपर सभी लड़के
भी ध्यान से अपना
नहीं था. फिर वे
बोझिल हो उठा. तभ
उसके कानों के पास से
'मत डर, सुबोध! तो
अपना रंग दिखाएगी

मार्ग में एक आ
ओर से गुजर रहा था
लेश पर पड़ी. वह ए
उसके दोनों हाथ ए
की एक झुकी हुई
सिसक रहा था. सुबो
आज तक कभी अ

'जरूर बागवाले
बहुत बदमाश भी है
चाहिए.' सुबोध ने
बढ़ाने लगा. लेकिन

वह अनिलेश ने
और जोर जोर से
आप-बीती सुनाई कि
साथियों ने आम
तो भाग गए, परंतु
हर्जाना लिये छोड़

सुबोध का दि
से बातचीत की.
लगभग चार-पांच
कर दिए. सुबोध ने
रुपए बागवाले को
में बागवाला राजी
कर उसने अनिलेश

सुबोध की ह
(शे

काम था. वह अपने काम को बड़ी ईमानदारी से करता था. आज तक उसके द्वारा न तो कोई बोतल टूटी और न ही कभी कोई गायब हुई. मालिक बहुत शरीफ आदमी था. वह सुबोध से काफी प्रसन्न रहता था. अन्य नौकरों की अपेक्षा वह उसे शाम को जल्दी से छुट्टी दे देता था और साथ ही मजदूरी के दो रुपये भी रोज के रोज उसके हाथ में रख देता था.

एक दिन शाम का समय था. सुबोध जेब में अपने दो रुपये डाले हुए घर की ओर जा रहा था. उसके मस्तिष्क में तरह तरह के विचार उठ रहे थे— 'कल परीक्षा फल की घोषणा की जाएगी. क्या होगा? क्या वह फेल कर दिया जाएगा? लेकिन क्यों? जब उसने नकल नहीं की है, तो वह क्यों फेल किया जाएगा? क्या इसलिए कि उसने सभी कार्य ईमानदारी से किए हैं? क्या सच्चाई और ईमानदारी का यही इनाम है!''

फिर उसकी आंखों के सामने वे परचे नाचने लगे. बड़ा आश्चर्य हुआ उसे. परीक्षा से पहले अध्यापक के कहनेपर सभी लड़कों ने अपने डेस्क देखे थे. उसने भी ध्यान से अपना डेस्क देखा था. कोई परचा वगैरा नहीं था. फिर वे परचे कहां से आए? उसका मन बोझिल हो उठा. तभी एक हल्का-सा हवा का झोंका उसके कानों के पास से गुजर गया, मानो कह गया हो— 'मत डर, सुबोध! तेरी ईमानदारी और सच्चाई जरूर अपना रंग दिखाएगी.'

मार्ग में एक आम का बाग पड़ता था. वह जब उस ओर से गुजर रहा था, तो अचानक उसकी निगाह अनिलेश पर पड़ी. वह एक आम के पेड़ के नीचे खड़ा था. उसके दोनों हाथ एक अंगोछे से बंधे थे, जो कि आम की एक झुकी हुई डाली से बंधा था. वह धीरे धीरे सिसक रहा था. सुबोध को बड़ा आश्चर्य हुआ. उसने आज तक कभी अनिलेश को रोते नहीं देखा था.

'जरूर बागवाले ने उसे पीटा होगा. ठीक हुआ, बहुत बदमाश भी है यह. इसे इसी तरह सजा मिलनी चाहिए.' सुबोध ने सोचा और घर की ओर कदम बढ़ाने लगा. लेकिन उसके कदम कुछ सोचकर थम गए.

वह अनिलेश के पास गया. उसे देखकर अनिलेश और जोर जोर से रोने लगा. रो रोकर उसने अपनी आप-बीती सुनाई कि किस तरह उसने तथा उसके साथियों ने आम तोड़े थे. उसके सब शैतान साथी तो भाग गए, परंतु वह पकड़ा गया. बागवाला बिना हर्जाना लिये छोड़ने वाला नहीं था.

सुबोध का दिल पसीज गया. उसने बागवाले से बातचीत की. उसने बताया कि कि लड़कों ने लगभग चार-पांच रुपये के कच्चे आम तोड़कर बर्बाद कर दिए. सुबोध ने कुछ सोच कर अपने पास के दो रुपए बागवाले को दे दिए. पहले तो इतने कम पैसे में बागवाला राजी न हुआ, पर फिर न जाने क्या सोच कर उसने अनिलेश को छोड़ दिया.

सुबोध की इस उदारता को देखकर अनिलेश

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

बबूराम— —सुरती

कहानी

घड़ी की सुइयां

kissekahani.com

भागपुर में सब स्कूलों के छात्र कई दिन से हड़ताल पर थे. एक दिन की भूख-हड़ताल और चुने हुए हड़तालियों द्वारा आमरण अनशन की धमकी के बावजूद वे अपनी मांगें मनवाने में असफल रहे थे. इसपर उनके नेता बांकेलाल ने एक सार्वजनिक सभा में स्पीच देते हुए कहा :

"बड़े भाइयो और छोटे भाइयो,

"आप सबने मुझे 'एक्शन कमेटी' का चेयरमैन बनाया, तो मेरा फर्ज हो जाता है कि आपको बिना कुछ किए कामयाबी दिलाऊं—यानी बिना इम्तिहान पास किए आपको अगली क्लासों में भिजवाऊं.

"भाइयो, अभी तक हमारी सब कोशिशें नाकाम रही हैं, इसलिए आज सुबह 'एक्शन कमेटी' की हंगामी बैठक में यह फैसला हुआ है कि हम सब मिलकर एजुकेशन डायरेक्टर का घेराव करें और उन्हें हमारी मांगें मानने पर मजबूर करें. . ."

इसपर तालियों की पुरजोर गड़गड़ाहट हुई यानी हड़तालियों ने घेराव का जोरदार समर्थन किया. इसके बाद नारेबाजी का दौर चला. बांकेलाल ने बुलंद आवाज में कहा—"स्टूडेंट यूनिटी. . ." इस पर हड़तालियों ने नारा लगाया—"जिंदाबाद!" अब बांकेलाल ने कहा—"प्रिंसिपलशाही. . ." हड़तालियों ने बात पूरी की—"नहीं चलेगी, नहीं चलेगी. . ." तीसरी बार भीड़ में से किसी मनचले ने चिल्लाकर कहा—"बांकेशाही. . ." इसके जवाब में हड़तालियों की आवाज आई—"खूब चलेगी, खूब चलेगी!"

अब यह जलसा जलूस में बदल गया और हड़ताली छात्र यह समूह-गीत गाते एजुकेशन डायरेक्टर के दफ्तर की ओर चल पड़े :

"दुनिया वालो, जाग उठा है छात्र समाज,
अब न रहेगा धरती पर अध्यापक राज!
टीचर्स, गो बैक! टीचर्स, गो बैक!
हम भी अब अपनी सरकार बनाएंगे,
जिनसे पढ़ते आए अब तक, उन्हें पढ़ाएंगे!
टीचर्स, गो बैक! टीचर्स, गो बैक!
अब किताब-कापियां रहेंगी जेबों में,
हम अपना मन बहलाएंगे खेलों में!
टीचर्स, गो बैक, टीचर्स गो बैक!"

एजुकेशन डायरेक्टर के दफ्तर के पास पहुंचकर हड़ताली जोर-शोर से नारे लगाने लगे—

"हम क्या चाहते हैं?"
"बिना इम्तिहान कामयाबी!"
"हम क्या चाहते हैं?"
"स्कूलों में होम रूल!"
"हम क्या चाहते हैं?"
"हर स्कूल में एक सिनेमा हॉल!"

यह गुल-गपाड़
प्राइवेट सेक्रेटरी बा
उसके हाथ-पैर फुल
लड़खड़ाती आवाज
बांकेलाल ने
हाथों में ये प्ले-का
"ये तो आप
टरी ने बौखलाए
"मेरा मतलब
कुछ हम लोग चाहते
"इसके लिए त
अपने प्रिंसिपल सा
सेक्रेटरी ने उन्हें
"अजी, वही
था?" यह भीड़
"तो हम क्य
ने लापरवाही
"आप साहब
ने बेतकल्लुफी के
"वह इस व
सेक्रेटरी बोला. "अ
"हम लोग रो
ने अकड़कर कहा,
लो घेराव! जब
तो उनसे भेंट हो
घेराव का
अंदर चला गया
रेक्टर डॉ. कमला
डॉ. कमलान
का नेता कौन है
बांकेलाल ए
से मिलने का उस
हिम्मत करके
डॉ. कमलान
और तुम्हारे सा

kissekahani.com

— बलदेव सिंह 'विशाल' —

यह गुल-गपाड़ा सुनकर एजुकेशन डायरेक्टर का प्राइवेट सेक्रेटरी बाहर आया. इतनी भीड़ देखकर तो उसके हाथ-पैर फूल गए. "आप लोग क्या चाहते हैं?" लड़खड़ाती आवाज में उसने सवाल किया.

बांकेलाल ने कहा—"आप देख रहे हैं न, हमारे हाथों में ये प्ले-कार्ड? हम यही कुछ चाहते हैं."

"ये तो आपके हाथों में हैं ही!" प्राइवेट सेक्रेटरी ने बौखलाए स्वर में उन्हें बताया.

"मेरा मतलब है, इनपर जो कुछ लिखा है वही कुछ हम लोग चाहते हैं," बांकेलाल ने स्पष्टीकरण किया.

"इसके लिए तो आपको स्कूलों में जाना चाहिए, अपने प्रिंसिपल साहेबान से कहना चाहिए," प्राइवेट सेक्रेटरी ने उन्हें समझाने की कोशिश की.

"अजी, वही लोग सुनते तो रोना किस बात का था?" यह भीड़ में से किसी की आवाज थी.

"तो हम क्या कर सकते हैं?" प्राइवेट सेक्रेटरी ने लापरवाही दिखाई.

"आप साहब को बाहर भेज सकते हैं!" बांकेलाल ने बेतकल्लुफी के साथ कहा.

"वह इस वक्त आराम फरमा रहे हैं," प्राइवेट सेक्रेटरी बोला. "आप लोग कल आने का कष्ट करें."

"हम लोग रोज रोज नहीं आ सकते!" बांकेलाल ने अकड़कर कहा, "तो, भाइयो, डाल दो पड़ाव और कर लो घेराव! जब डायरेक्टर साहब आराम फरमा चुकेंगे, तो उनसे भेंट हो जाएगी."

घेराव का नाम सुनते ही प्राइवेट सेक्रेटरी झटपट अंदर चला गया और दो मिनिट बाद एजुकेशन डायरेक्टर डॉ. कमलानी के साथ बाहर आया.

डॉ. कमलानी ने शांत स्वर में कहा—"तुम लोगों का नेता कौन है? आगे आए."

बांकेलाल एक बार झिझका. किसी बड़े आदमी से मिलने का उसका यह पहला मौका था. फिर वह हिम्मत करके डॉ. कमलानी के पास आ खड़ा हुआ.

डॉ. कमलानी ने कहा—"नौजवान, मैं तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का स्वागत करता हूं. बोलो, तुम लोग क्या चाहते हो?"

बांकेलाल ने हकलाते हुए जवाब दिया—"सा. . . हब. . . हम बिना इम्तिहान 'प्रमोशन' चाहते हैं!"

"यह कैसे हो सकता है?" डॉ. कमलानी ने आश्चर्य प्रकट किया.

"यूनिटी से क्या नहीं हो सकता, साहब?" बांकेलाल ने दलील पेश की. "यह मेरी नहीं, हमारी यूनियन की मांग है."

"तुम्हारा मतलब है कि यूनिटी के बल पर बिना बीज बोए भी फसल उगाई जा सकती है!" डॉ. कमलानी ने कहा.

बांकेलाल सोच में पड़ गया कि क्या जवाब दे. उसे चुप देखकर डॉ. कमलानी उसे समझाते हुए बोले—"नौजवान, तुम साहस भी रखते हो और समझ भी. इनका सही इस्तेमाल करो, तो बहुत तरक्की कर सकते हो. लेकिन तुम इनका गलत इस्तेमाल करके अपने हजारों भाइयों को सही राह से भटका रहे हो."

लेकिन बांकेलाल पर डॉ. कमलानी की बात का कोई असर नहीं हुआ. उसने कहा—"हमें इस तरह नहीं टाला जा सकता. हमारी मांगें मानी जाएं, नहीं तो. . ."

"नहीं तो क्या?" डॉ. कमलानी ने प्यार से पूछा.

"नहीं तो हम सब आप का घेराव करेंगे," बांकेलाल ने धमकी दी.

"नौजवान, तुम्हारा नाम क्या है?" डॉ. कमलानी ने सवाल किया. लेकिन इससे पहले कि बांकेलाल कुछ जवाब दे, भीड़ ने नारा लगाया :

"बांकेलाल जिंदाबाद!"

"हमारी मांगें पूरी करो!"

डॉ. कमलानी मौके की नजाकत भांप गए. उन्होंने 'डिप्लोमेसी' का सहारा लिया—"बांकेलाल, अपने साथियों को भेज दो. हम अंदर चलकर तुम्हारी मांगों पर गौर करेंगे."

"ऐसा नहीं हो सकता, साहब!" बांकेलाल अड़ गया.

"अच्छी बात है," डॉ. कमलानी बोले, "आप लोग इंतजार करें. हम इनके साथ अंदर जाकर देखते हैं, क्या हो सकता है."

अंदर जाकर डॉ. कमलानी ने बांकेलाल को अपने बराबर कुर्सी पर बैठाया और उसके कानों में शहद उंडेलते हुए बोले—"प्रोमोशन का मामला प्रिंसिपल के अख्तियार में होता है. हम सब स्कूलों के प्रिंसिपल साहेबान की एक मीटिंग बुला लेते हैं. उम्मीद है, वे लोग तुम्हारी बात मान लेंगे."

"आप कहेंगे तो जरूर मान लेंगे," बांकेलाल ने कहा.

"हम पूरी कोशिश करेंगे, बेटा!" डॉ. कमलानी ने गोलमोल जवाब दिया. "और हमें उम्मीद है कि वे लोग तुम्हारी कुछ मांगें स्वीकार कर लेंगे."

बांकेलाल शब्दों के इस जाल में फड़फड़ाकर रह गया. बाहर आकर उसने कहा—"साथियो, हमारी जीत हुई, दुश्मन ने हथियार डाल दिए!"

यह खुशखबरी सुनते ही एक हड़ताली ने बढ़कर बांकेलाल को कंधे पर उठा लिया और सब लोग 'हमारा नेता जिंदाबाद!' के नारे लगाते हुए वहां से चल पड़े. छात्रों ने हड़ताल समाप्त कर दी और सब स्कूल खुल गए.

●

उसी शाम सब स्कूलों के प्रिंसिपल साहेबान डॉ. कमलानी के बंगले पर जमा हुए. डॉ. कमलानी ने उन्हें बताया कि छात्रों का नेता बांकेलाल नेतागिरी के मैदान में नया खिलाड़ी है, इसलिए स्थिति गंभीर नहीं है और उसे सही तरीके से हैंडल किया जाए, तो मामला रफा-दफा हो जाएगा.

मीटिंग से लौटते ही प्रिंसिपल साहब ने चपरासी को भेजकर बांकेलाल को अपनी कोठी पर बुलाया और उसे समझाते हुए कहने लगे—"बेटा, हमारी हमदर्दी तुम्हारे साथ है. लेकिन हम तुम्हारी इस मांग को मानने में मजबूर हैं कि सब छात्रों को बिना इम्तिहान प्रोमोशन दे दिया जाए."

"ऐसी भी क्या मजबूरी है, प्रिंसिपल साहब?" बांकेलाल ने लीडराना अंदाज में कहा.

"इसका मतलब है—पेड़ लगाए बिना आम पैदा करना. और ऐसा आज तक नहीं हुआ और न आगे होगा," प्रिंसिपल साहब बोले.

"मगर, प्रिंसिपल साहब, जब देश की राजधानी में ऐसा हो सकता है, तो यहां भी हो सकता है!"

"बेटा, अक्लमंदों का काम है ठीक बात का अनुसरण करना, न कि गलत बात का," प्रिंसिपल साहब ने उसे समझाने की कोशिश की.

"तो आप बिल्कुल मजबूर हैं?" बांकेलाल ने पूछा.

"लेकिन हम तुम्हारी दूसरी मांगों पर गौर करेंगे."

"प्रिंसिपल साहब, हम अपनी दूसरी मांगें छोड़ सकते हैं, लेकिन अगर हमारी यह मांग न मानी गई, तो हम स्कूलों की ईंट से ईंट बजा देंगे!" बांकेलाल ने धमकी दी और जाने को उठ खड़ा हुआ.

"बेटा, जल्दबाजी ठीक नहीं होती. तुम कल तक अपने साथियों से सलाह करके मुझे बता देना," जाते-जाते प्रिंसिपल साहब के ये शब्द उसके कानों में पड़े.

अगले दिन प्रिंसिपल साहब को बांकेलाल की तरफ से कोई जवाब न मिला, तो वह समझ गए कि डोल छोड़ देने से दोबारा हड़ताल हो सकती है और छात्र अपने वनस्पति नेता के बहकावे में आकर तोड़-फोड़ की हरकतें कर बैठें, तो भी ताज्जुब नहीं. चुनांचे वह एजुकेशन-डायरेक्टर से मिले और उनकी सलाह से उसी दिन बांकेलाल को स्कूल से निकाल देने का आर्डर आ गया.

इस सजा से बांकेलाल भड़क उठा और उसने स्कूल की बिल्डिंग को आग लगाने की कोशिश की. लेकिन रंगे हाथों पकड़ लिया गया.

विद्यार्थी होने की वजह से अदालत ने बांकेलाल पर सिर्फ सौ रुपया जुर्माना किया और जुर्माना अदा न करने पर पंद्रह दिन का कारावास.

बांकेलाल के पिता साधूराम का खयाल था कि कुछ दिन जेल की रोटियां खाकर उसका दिमाग दुरुस्त हो जाएगा. लेकिन उसकी मां ने बहुत हाथ-पैर पीटे, तो वह जुर्माना देकर उसे छुड़ा लाए.

दो दिन तक बांकेलाल का 'मूड' खराब रहा. उसे रह-रहकर अपनी शरारतियां याद आतीं—डटकर खाना, अकड़कर चलना और चादर तानकर सोना. उसे अपनेपर गुस्सा आने लगता. बेमतलब झंझट में फंस गया. न हड़ताल कराता, न यह मुसीबत गले पड़ती.

●

लेकिन तीसरे दिन वह सुबह-सुबह घर से निकल पड़ा. अब दिन भर आवारागर्दी और दो वक्त खाना खाने के लिए घर पर आ धमकना—यही उसने अपना रवैया बना लिया. साधूराम ने बेटे के ये रंगढंग देखे, तो कई बार उसे अपने पास बैठाकर समझाने की कोशिश की, लेकिन बांकेलाल कोई न कोई बहाना बनाकर खिसक जाता. इसपर एक दिन उन्होंने उसकी मां के सामने साफ-साफ कह दिया कि वह बराबर का हो गया है और अब उसे निठल्ले बैठकर खाने का कोई हक नहीं है, इसलिए वह काम करे, तभी इस घर में रह सकता है.

इस 'अल्टीमेटम' ने बांकेलाल को सिर से पांव तक झिंझोड़ दिया. वह साधूराम के मिजाज को खूब पहचानता था. वह चंदन की तरह शीतल थे, लेकिन गुस्सा आनेपर दहकता हुआ अंगारा बन जाते थे. अब तो कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा—उसने सोचा. लेकिन क्या? रात भर इसी बात को लेकर उसके दिमाग में उधेड़बुन चलती रही.

अगले दिन एक रिक्शा साधूराम के दरवाजे पर आकर रुकी. बांकेलाल ने धड़कते दिल के साथ अंदर जाकर कहा—"मां, आज से मैं रिक्शा चलाने लगा हूं.

पहले पहल तेरी ही बोहनी करूंगा. तू रोज मंदिर जाती है न. आज मैं तुझे अपनी रिक्शा में वहां ले चलूंगा!"

बांकेलाल की बात सुनी, तो मां को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. क्या-क्या सपने उसने अपने मन में संजोए थे. सोचती थी—बेटा पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा. खानदान का नाम ऊंचा करेगा. पर मां-बाप तो जन्म के साथी होते हैं, कर्म के नहीं.

इस तरह मन को झूठी तसल्ली देकर, अपनी छलछलाती आंखों को मैली साड़ी के छोर से पोंछती हुई वह बोली—"हट रे, मैं रिक्शा में बैठूं और तू चलाए, इससे पहले मुझे मौत न आ जाए. मेरा लाल मेरे दरवाजे मोटर लाता, तो मैं बैठती."

बांकेलाल से कुछ कहते न बना. वह चुपचाप बाहर चला गया.

रिक्शा चलाते चलाते शाम हो गई, तो उसने अपनी जेब टटोली. रुपये-रुपये के पांच नोट और कुछ पैसे निकले. पहले दिन इतनी कमाई बुरी नहीं थी. रिक्शा का किराया देकर तीन रुपये उसे बच रहे. बांकेलाल का खून एक पाव बढ़ गया. सुबह सुबह मां के शब्दों से उसके मन में जो कड़ुआहट हुई थी, वह धुल गई. उसे लगा जैसे वह भी काम का आदमी है. रात को उसने दो रुपये बाप के हाथ पर धर दिए और खाना खाकर पिक्चर देखने चला गया.

अगले दिन सुबह बांकेलाल की आंख खुली, तो उसका अंग-अंग दुख रहा था. उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उठा न गया तो मुंह लपेटे पड़ा रहा. सूरज सिर पर आ गया और उसने चारपाई न छोड़ी तो मां ने आकर कहा—"क्या बात है, बेटा? जी तो ठीक है?"

बांकेलाल जागा पड़ा था, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया. अब तो मां से न रहा गया. चादर हटाकर बेटे के माथे पर हाथ रखा, तो धक्क से रह गई. "बीना के बापू!" वह जोर से बोली, "देखो तो, मेरे लाल का बदन तवे की तरह तप रहा है."

आवाज सुनकर साधुराम कमरे में आए. तो बांके की मां कह रही थी—"हाय राम! किसकी नजर लग गई मेरे लाल को! मैंने तो पहले ही मना किया था कि रिक्सा-विक्सा नहीं चलने की इससे. पर यह किसी की सुने तो."

साधुराम का दिल बांके की मां की तरह कच्ची मिट्टी का भांडा न था जो इतनी जल्दी टुकड़े-टुकड़े हो जाता. उन्होंने उसे छूकर कहा—"हां, भई, इसे बुखार है. लेकिन दिल छोटा करने से क्या होगा? डिस्पेंसरी से दवा लेती आना, ठीक हो जाएगा." और वह दफ्तर चले गए.

तीन दिन बाद बुखार ने बांकेलाल का पीछा छोड़ दिया. लेकिन तब तक वह रिक्शा चलाने से तौबा कर चुका था. बुखार की कमजोरी जाती रही, उसे किसी और काम की फिक्र हुई. उसकी मां ने साधुराम को सुझाया कि वह बेटे को भी किसी सरकारी दफ्तर में चिपकवा दें. साधुराम ने कहा—"कोशिश करूंगा."

आंदोलन—

"हमारी मांग है कि पिता जी के पुराने स्वेटर को उधेड़ कर बुने गए स्वेटर हम हर्गिज नहीं पहनेंगे. हमें नए ऊन का स्वेटर मिलना चाहिए!"

कुछ दिनों बाद पड़ोस के सरकारी दफ्तर में एक चपरासी की जगह निकली, तो साधुराम ने अपने साहब से अर्ज की—"सर, आपका बच्चा भी उम्मीदवार है. उसे लगवा दें तो मैं उमर भर आपका एहसान मानूंगा."

साहब साधुराम की ईमानदारी के कायल थे. उनकी सिफारिश काम कर गई और बांकेलाल सरकारी नौकर हो गया. जब नौकरी पक्की हो गई, तो उसके ब्याह के लिए पैगाम आने लगे. एक दिन शाम को वह दफ्तर से लौटा, तो मां ने उसे बताया—"आज पड़ोसिन गंगा की अम्मा आई थी. अपनी बहन की लड़की राधा की सगाई तेरे साथ करना चाहती है रे. लड़की सुंदर है. रामायण बांच लेती है. घर के कामकाज में कुशल है. खाना पकाना, सीना-परोना, सब जानती है. शादी अच्छी कर देंगे. 'हां' कर दूं?"

बांकेलाल ऊपर से ना-नुकर करता रहा. लेकिन मन में उसके लड्डू फूट रहे थे. मां आखिर मां थी. वह उसके मन की बात समझ गई. और गंगा की अम्मा से उसने कह दिया कि राधा हमारी हो गई.

शादी के बाद कुछ दिन तो चैन की बंसी बजी, फिर वही नोन-तेल-लकड़ी की चिंता ने बांके को आ घेरा. अगले बरस बांके की मां दादी बन गई. अब वह बेटे को खिलाती और राधा घर के धंधे में जुटी रहती.

महंगाई बढ़ती गई, खर्च बढ़ता गया और साधुराम

(शेष पृष्ठ ५० पर)

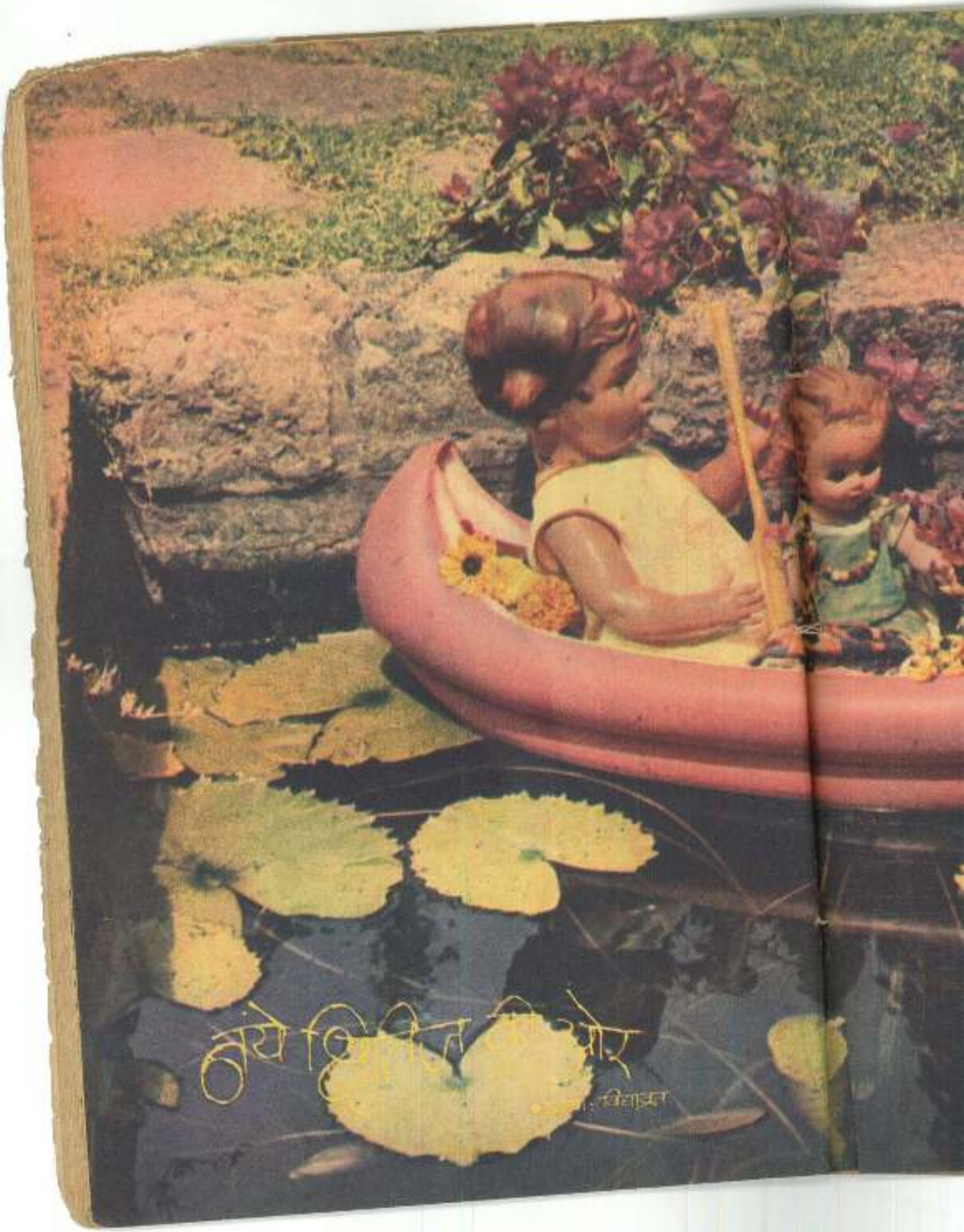
नये चित्र और
चित्राज

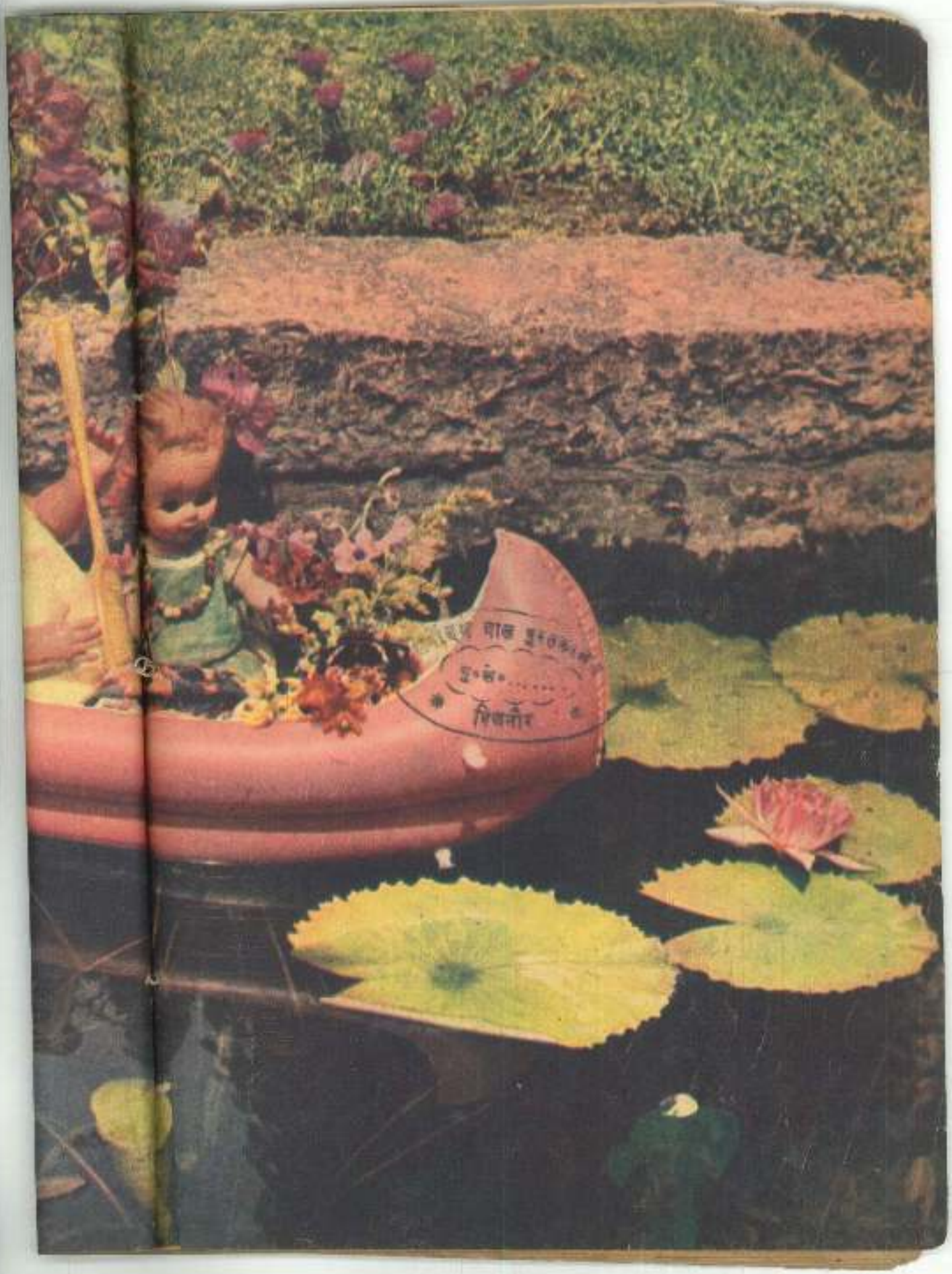

डबल सीक्रेट एजेंट (पृष्ठ ७ से आगे)

बाल-बच्चों से भी कह मरूंगा कि चाहे दारासिंह से लड़ बैठना, पर चान के सामने कभी न ठोंक बैठना."

गाड़ी बराबर ऊंचे चढ़ती चली आ रही थी. फिर अचानक उतार शुरू हुआ. आधा घंटा उतार पर चलने के बाद गाड़ी एक जगह रुकी.

"हाल्ट! हू कम्स देयर!" मिलिटरी के पहरेदारों जैसी एक कड़कदार आवाज सुनाई पड़ी.

"फ्रेंड्स!" रोशन सिंह ने भी कड़कदार आवाज में उत्तर दिया. गाड़ी फिर चली. फिर रुकी. रोशन सिंह ने इस बार कहा, "थ्री सेविन फोर!"

"राइट. आगे बढ़ो!"

इस तरह तीन स्टाप उन्होंने लिये—हर स्टाप पर एक पहरेदार ने रोका. हर बार उन्होंने एक नंबर आगे बताया— थ्री सेविन फाइव, थ्री सेविन सिक्स!

गाड़ी फिर आगे बढ़ी. अंत में वह एक झटका खाकर रुकी और राम ने इस तरह हड़बड़ा कर उठने का अभिनय किया, मानो उसकी बेहोशी अभी दूर हुई हो.

"श्याम! हम कहां हैं? यह आंखों पर पट्टी क्यों बंधी है?"

श्याम ऊंह-आह करता हुआ मानो नींद से जागा.

"राम, तू कहां है?"

"अपने चचा के घर!" रोशन सिंह की आवाज सुनाई पड़ी. इसके साथ ही राम की आंखों की पट्टी खुल गई. उसने मिचमिचाती आंखों से अपनी चारों ओर देखा. रोशन सिंह श्याम की आंखों की पट्टी खोल रहा था. चंदन सिंह दूर खड़ी रीता की आंखों से पट्टी हटा रहा था. आंखें खोलते ही उसने राम की तरफ देखा. लेकिन राम उस समय एक क्षण भी सोने की स्थिति में नहीं था. वह ध्यान से चारों ओर के वातावरण को निरख रहा था.

जहां तक, जिस तरफ दृष्टि जाती थी, ऊंचे ऊंचे पहाड़ खड़े दिखाई दे रहे थे. जिस जगह वे लोग थे, वहां हल्की बिजली की रोशनी जल रही थी. लेकिन उसके ऊपर इस तरह का शेड था, जैसे सड़क की बत्ती जल रही हो. वे लोग फूस से बनाए हुए एक झोंपड़े के बाहर थे. कार झोंपड़े के अंदर थी. पहाड़ों का रंग अभी काला नजर आता था. इसके अलावा रात के अंधकार में वहां से लगभग सौ गज की दूरी पर कुछ मकानियत दिखाई पड़ रही थी.

"चलो रे संपोलो, अब तुम्हें तुम्हारे जेलर से मिला दें. उसे देखकर तुम लोगों की तबीयत खुश हो जाएगी. अब तक तुम लोगों ने परियों की कहानियों में जिस भयंकर से भयंकर राक्षस का जिक्र सुना होगा न, वह उन सबका बाप है. 'सू-सा मानस-गंध'—हां!" रोशन सिंह ने जोर से राम को धक्का देते हुए कहा. धक्का खाकर राम चार गज दूर खड़ी रीता से जा टकराया और दोनों जमीन पर गिर पड़े.

रीता के मुंह से एक 'हाय' निकली. राम ने धीरे से कहा, "सॉरी!"

तीनों के हाथ पीछे से बंधे हुए थे. रोशन सिंह और चंदन सिंह उनकी पीठ पर घूंसे जमाते, सिर पर चपत लगाते उन्हें धक्कों के सहारे ही आगे बढ़ाते रहे. गिरते-पड़ते लगभग दस मिनिट में तीनों बच्चे और उनके पहरेदार एक स्कूलनुमा इमारत के सामने जाकर रुके.

प्रकाश के नाम पर या तो आसमान पर तारे थे या रोशन सिंह के हाथ में टार्च थी, जो रह-रहकर जल उठती थी. बुझने के बाद वह ठीक सामने का रास्ता और भी अंधकारपूर्ण कर देती थी. ऐसे में ही एक मौके पर उसने श्याम को अचानक पीछे से एक जोर का धक्का दिया, और वह तेजी से दसियों कदम संभलने की कोशिश में दौड़ गया—और तब उसका सिर मानो गेंडे की खाल की बनी किसी ढाल से जा टकराया.

एक जोरदार पहाड़नुमा ठहाका श्याम को ठीक अपने ऊपर से सुनाई पड़ा. उसी वक्त रोशन सिंह की टार्च का प्रकाश वहां पड़ा. उस प्रकाश में तीनों बच्चों ने उस भयानक मूर्ति को देखा—और रीता की चीख निकल गई.

बिना बालों के एक वनमानुष की शकल उन्हें दिखाई पड़ी. उसकी नाक छोटी और चपटी थी. आंखें रेत में बनी खाई की तरह मिचमिची थीं. गाल मोटे मोटे थे. ठोड़ी पर लंबी और इकहरी दाढ़ी थी. रंग एकदम पीला दिखाई पड़ रहा था. सिर के बाल घुटे हुए थे या थे ही नहीं. भौंहें भी नहीं थीं. वह किसी भैंसे जैसे जानवर को दोनों हाथों में दबाए उसे भुट्टे की तरह चबा रहा था. उसका कद लगभग साढ़े छह फीट होगा.

श्याम तीन-चार कदम लड़खड़ा कर पीछे हटा. उसी आदमी के पेट से उसका सिर जाकर टकराया था. एक हाथ में उस भैंसे जैसे जानवर की टांग पकड़कर, उसके अधखाए शरीर को झुलाता हुआ वह आगे बढ़ा. उसकी मिचमिची आंखें भी इस वक्त कुछ फैलकर उन बच्चों को देखने की कोशिश कर रही थीं. लंबी और मोटी जीभ से वह अपने रस्से जैसे होंठ को चाट रहा था. ही-ही ही-ही जैसी आवाज उसके

मुंह से निकल रही थी. वह बार बार रोशनी की लाइन को अपने दाएं हाथ से झपट्टा मारकर हटाने की कोशिश कर रहा था. उसी प्रयत्न में उसके मुंह से गुर्राहट निकल जाती थी.

"स्टाप, चान!" रोशन सिंह ने चिल्लाकर कहा.

चान रुक कर रोशन सिंह की तरफ इस तरह देखने लगा, मानो बहुत क्रुद्ध हो. फिर एक विचित्र नकैना स्वर उसके मुंह से निकला— "रों-वे-न-वीं-ग!"

"हां, रोशन सिंह. पीछे हट, चान, पीछे हट! ये तीनों सपोले तेरा भोजन नहीं हैं— कम से कम इस वक्त नहीं. डाक्टर जैड इन्हें तेरे हवाले करना चाहें, तो बात दूसरी है. पीछे हट!"

एक अजीब-सी नाराजगी जैसा स्वर उस जानवर-नुमा आदमी के मुंह से निकला : गुर्रररर-ईईइइ-चुप! लेकिन वह पीछे हट गया और उसने एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक एक हाथ से खोल दिया. फिर एक किनारे अलग खड़ा हो गया और अपने सामने से गुजरने वालों को गरदन बढ़ा-बढ़ाकर देखने लगा, जब कि उसके लंबे हाथ सचमुच ही बनमानुष की तरह अगल-बगल झूलते रहे. वह एक काला जांघिया पहने हुए था और उसका बाकी बदन इस वक्त नंगा था. राम और श्याम उसके सामने से खैरियत से गुजर गए. उनके पीछे थी रीता और रीता के पीछे थे दोनों पहलवान. सहसा ही राम को रीता की दिल हिला देने वाली एक चीख सुनाई पड़ी और वह फिरकी की तरह घूम गया.

चान ने एक हाथ से रीता की कमर को पकड़ रखा था और वह चिल्ला चिल्लाकर हाथ-पैर मार रही थी. दांत किचकिचा कर चान खुशी से चीख रहा था— "चीईईईईईईक्क्क्! रों-वे-न-वीं-ग!"

"चान!" रोशन सिंह चिल्लाया. "छोड़ इसे! पीछे हट! डाक्टर जैड—"

डाक्टर जैड का नाम सुनते ही चान ने रीता को एकदम छोड़ दिया. वह बेहोश हो चुकी थी. इसलिए हाथ से छूटी गुड़िया की तरह जमीन पर आ रही. राम और श्याम ने गरदन मोड़ ली और आगे बढ़ने लगे. इस लड़की से कोई लगाव दिखाना आगे चलकर उस बेचारी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है. उन्होंने दिखाया जैसे उन्हें अपनी ही जान की फिकर थी.

रोशन सिंह ने रीता की देह को उठाकर कंधे पर डाल लिया और आगे बढ़ा. आगे वाले लड़कों को उसने कड़ककर हिदायत दी— "बाए घूमो—अब दाएं! सीधे चलो, हरामजादो!"

कुछ देर में राम और श्याम को लगा कि आगे का रास्ता एकदम बंद है. दोनों तरफ दीवारें थीं. सामने भी दीवार थी. तभी रीता की बेहोश देह लुढ़कती हुई उनके पैरों के पास आकर रुकी. एक जंगला-सा खड़खड़ाया. निपट अंधेरा था. लेकिन उन्हें लगा कि उनके पीछे ऊपर से एक जंगला गिरा है—जैसा सरकस में शेरों को कठघरों में बंद करके सामने से गिरा दिया जाता है.

"रात भर यहां आराम करो! सुबह को पेशी होगी," कहकर रोशनसिंह का स्वर लोप हो गया.

अब राम और श्याम ने जल्दी जल्दी अपनी जेबों की तलाशी ली. हर चीज जा चुकी थी. पैन तक

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चों, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० फरवरी तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौन सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार की सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख अतापता में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

बाल पाठकों के द्वारा इस तरह इस अंक की जो कहानी सर्वश्रेष्ठ ठहरेगी, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो. पता यह लिखो :

संपादक पराग (हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. ३६), पो. आ. बा. नं., २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई-१.

प्रतियोगिता नं. ३३ का परिणाम

इस प्रतियोगिता में ३ बच्चों के हल सर्वशुद्ध आए. बच्चों के नाम और पते नीचे दिए जा रहे हैं. इन्हें शीघ्र ही पुरस्कार भेजे जाएंगे.

- **महेंद्र आर्य, ९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता-७.**
- **इंद्रनाथ सहाय, द्वारा श्री एस. सहाय, क्वा. नं. टी-१२, ओ. टी. पारा, कटिहार, जिला पूर्णिया (बिहार).**
- **अरुणकुमार सोमानी, द्वारा श्री गजानन सोमानी, वजीर बाग, बहराइच (उ. प्र.).**

नवंबर अंक की कहानियों का सर्वाधिक लोकप्रिय क्रम इस प्रकार है :

१–ट्रांजिस्टर, २–नन्हा नेता, ३–ऐसा क्यों? ४–धुंधला सूरज, ५–महकते नोटों की गंध, ६–अलादीन का चिराग, ७–घुंघरू.

'ट्रांजिस्टर' कहानी के लेखक श्री विद्वान् के. नारायणन् को ५० रुपये का अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा.

kissekahani.com

कहानी

चूहा मईर बेस

सब चूहे बड़े खुश थे कि उन्होंने पूसी मौसी के गले में घंटी बांध दी यानी कि अब कोई खतरा नहीं. खूब ठाठ से खाओ-पियो, मौज करो और जैसे ही पूसी मौसी के आने की घंटी बजे, लपककर जहां जी चाहे छुप जाओ. छोटे चूहों के तो मजे आ गए. अब वे दूर-दूर तक घूमने के लिए चले जाते थे. और जब कुछ दिनों बाद यह पता चला कि पूसी मौसी इलाका छोड़ पड़ोस के बंगले में अपनी बहन के पास जाकर रहने लगी है, तो वे और भी फूल कर कुप्पा हो गए. वाह! खतरे की घंटी का भी खतरा दूर!

लेकिन एक दिन बड़ी गड़बड़ हो गई. स्टोर रूम में आई दाल की नई बोरी. खटर-पटर, घिस्-घिस की आवाज जो सुनाई पड़ी, तो सारे चूहे अलमारियों से झांक-झांककर देखने लगे. जब बोरी को उठवाकर चौकी पर चढ़वा दिया गया और मजदूर बाहर चले गए, तो सब कूदते-फांदते बाहर लपक आए. कुतुर-कुतुरकर नमूना बाहर निकाला. आहा! अरहर की दाल! वे सभी बड़े खुश हुए और जुट गए खाने पर. थोड़ी देर में बोरी का छेद बड़ा बन गया और दाल उसमें से निकलकर फैलने लगी. तभी आहट हुई और वे सब तुरंत भागकर ऊपर चढ़ गए. एक आदमी भीतर आया और थोड़ी देर तक इधर-उधर देखता रहा. फिर लौट गया.

उसके जाते ही बूढ़े चूहे ने कहा—"लगता है, वह नाराज हो गया. अब हमें सो जाना चाहिए. रात भी अधिक हो रही है. सवेरे मैं तुम सबको जल्दी ही उठा दूंगा, तब दाल का मजा लेना!"

समझदार चूहों ने बात मान ली और सोने चले गए. कुछ छोटे और लालची बेबी चूहों ने दाल को तुरंत खाने की जिद की, तो उनकी मम्मी चुहियां उनकी पूंछ पकड़ बिलों में खींच ले गईं.

दूसरे दिन सुबह, बूढ़े चूहे ने सारे चूहों को जगा दिया. बेबी चूहे भी आलस्य छोड़कर नाक रगड़ते दाल की बोरी की तरफ झपट आए. 'कुतुर-कुतुर...कुट-कुट" आगे-पीछे लींचा-खांची और छीना-झपटी का प्रोग्राम चलने लगा. तभी एकाएक बूढ़े चूहे के चिल्लाने की आवाज आई —"चूं-चूं...चूं-चूं...! खून...! खून!!...जल्दी आओ!...जल्दी आओ!!"

सारे चूहे उछलते-कूदते उसके पास जा पहुंचे. देखा, बूढ़े चूहे के पास एक मोटा-सा मरा हुआ चूहा पड़ा है.

उसका पेट फूला हुआ था. वे
यह मौत कैसे? वे सब चुपचा
ऐसा खून उनके स्टोर-रूम
हमेशा पूसियों द्वारा पकड़
होकर मर गया था.

बूढ़े चूहे चुपचाप थे.
चुहियों की गोद में छुपे जा

बूढ़े चूहे ने कहा—"
चुप क्यों हो? इस मोटे
इसका क्या कारण हो सक

एक चूहे ने दुखी स्व
मुझे तो लगता है इसे पूस

बूढ़े चूहे ने अचरज
नहीं, इसे पूसी ने नहीं
इसके शरीर पर खून के नि
तो काफी फुर्तीला था,

—आर्यव

पूसी मौसी के गले में ह
होते ही यह भाग सकता
एक चूहे ने शंका प्र
के गले की घंटी उतर ग
आने की आहट न मिल

"नहीं, दोस्तो, न
मौसी घंटी खोल ही न
लिया जाए कि इसे उ
साथ खाने के लिए क्यों
रुककर बूढ़ा चूहा आगे
में बिस्कुट की तलाश

उसका पेट फूला हुआ था. वे सब एकदम डर गए. आखिर यह मौत कैसे? वे सब चुपचाप खड़े सोच रहे थे, आज तक ऐसा खून उनके स्टोर-रूम में नहीं हुआ था; वे तो हमेशा पुलिसों द्वारा पकड़ लिये गए थे या कोई बीमार होकर मर गया था.

बूढ़े चूहे चुपचाप थे. छोटे चूहे डर के मारे मम्मी चुहियों की गोद में छुपे जा रहे थे.

बूढ़े चूहे ने कहा—"आखिर, बोलो कुछ, साथियो, चुप क्यों हो? इस मोटे चूहे की मौत कैसे हुई? इसका क्या कारण हो सकता है?"

एक चूहे ने दुखी स्वरों में कहा—"चूहे चाचा, मुझे तो लगता है इसे पूसी ने मारा है."

बूढ़े चूहे ने अचरज से कहा— "पूसी ने मारा है? नहीं, इसे पूसी ने नहीं मारा. पूसी ने मारा होता, तो इसके शरीर पर खून के निशान होते. और फिर यह चूहा तो काफी फुर्तीला था, कूदने-फांदने में भी कुशल था.

—आर्यरत्न व्यास—

पूसी मौसी के गले में हम घंटी बांध ही चुके हैं. आहट होते ही यह भाग सकता था."

एक चूहे ने शंका प्रकट की—"हो सकता है पूसी के गले की घंटी उतर गई हो और इस बेचारे को उसके आने की आहट न मिली हो!"

"नहीं, दोस्तो, नहीं! पहली बात तो यह कि पूसी मौसी घंटी खोल ही नहीं सकती. दूसरे अगर मान भी लिया जाए कि इसे उसने ही मारा है, तो इसे अपने साथ खाने के लिए क्यों नहीं ले गई?" फिर कुछ देर तक रुककर बूढ़ा चूहा आगे बोला—"याद आया, कल जब मैं बिस्कुट की तलाश में गया था, तो देखा था पूसी मौसी घंटी बांधे एक कोने में उदास बैठी थी."

"आपका मतलब है, चूहे चाचा, कि पूसी मौसी ने इस बेचारे को नहीं मारा?"

"बिल्कुल नहीं!" बूढ़े चूहे ने कहा.

"तो फिर मारा किसने?" एक चूहे ने पूछा.

फिर सब चूहे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे. छोटे चूहे भी चुपचाप बैठे सब सुन रहे थे. काफी देर बाद एक चूहे ने कहा—"हो, न हो, चूहे चाचा, टामी ने इसे मारा है. आजकल वह भी इधर की तरफ चक्कर मारा करता है!"

"टामी?" बूढ़े चूहे ने कहा—"क्यों बेकार की बात करते हो? जानते हो उसका कितना रोब है इस घर में! अजी, उसको रोज सुबह दूध और डबल रोटियां खाने को मिलती हैं; वह हम पर नियत नहीं बिगाड़ेगा."

सब फिर चुप हो गए. काफी देर तक चुप्पी छाई रही. बूढ़ा चूहा आंखों में आंसू भरे उस मरे चूहे की तरफ देखता रहा. थोड़ी देर बाद उसने कहा—"साथियो, यों चुप होकर हम कैसे रह सकते हैं! हमें किसी न किसी तरह चूहे की मौत के कारण का पता लगाना होगा. यह इस तरह की पहली मौत है. और अगर हम यों ही मरते रहे, तो एक दिन हमारा नामोनिशान मिट जाएगा. इसकी मौत का कारण पता लगने पर हम कम से कम आने वाले समय में तो अपने आपको बचा कर रख सकेंगे."

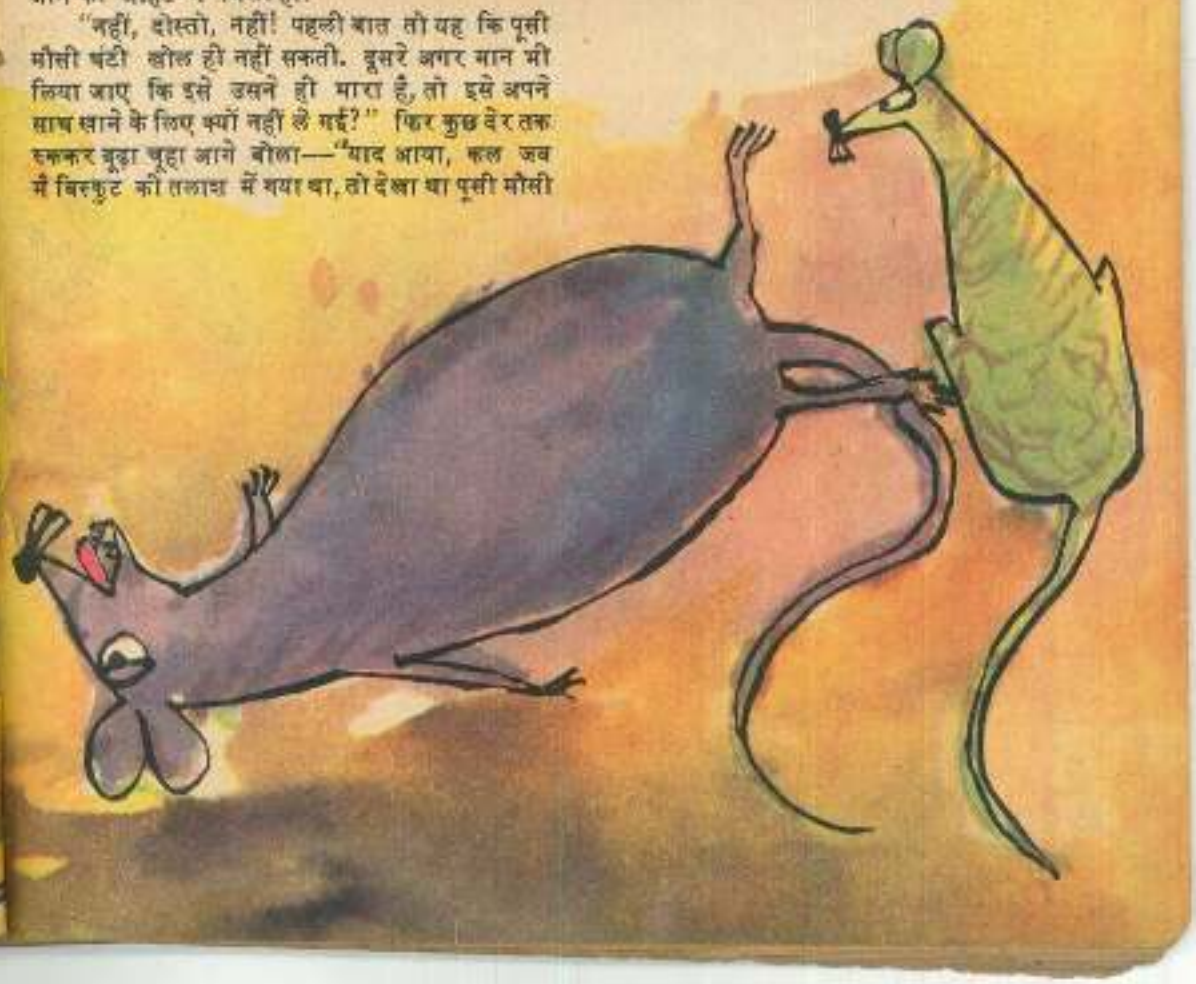

देखिए... साफ़ नज़र आता है...
सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिए–टिनोपाल!

खुद आजमाइए. धुलाई के बाद कपड़ों को आखिरी बार खंगालते समय पानी में थोड़ा सा टिनोपाल मिला लीजिए; फिर देखिए... शानदार जगमगाती सफ़ेदी! टिनोपाल की सफ़ेदी! हर तरह के कपड़े—कमीज़, साड़ी, चादर, तौलिया, आदि—टिनोपाल से जगमगा उठते हैं।
और सच? प्रति कपड़ा एक पैसा से भी कम। टिनोपाल खरीदिए—'रेगुलर पैक' 'इकोनमी पैक' या 'बाल्टी भर कपड़ों के लिए एक पैक'।

टिनोपाल बी. आर. गायगी एस. ए., बाज़ल, स्विट्ज़रलैन्ड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

सुहृद गायगी लि., पो. ओ. बॉक्स ११०२० बम्बई २० बीआर

Shilpi BGT-1A/66 Hin

एक जवान चूहे
मैं जानता हूं इस मोटे
"किसने मारा है?
"हमारे मकान
आजकल वह न जाने
चिड़ियों, कुत्तों और
बनाए रखता है. हो न
बना लिया हो."
"अगर उसने ऐसा
लेंगे!" सब नौजवान
"बदले की भावना
हम मुसीबत में फंस
नुकसान हो जाए," बूढ़े
एक चूहे ने विरोध
कैसी बात करते हैं,
अत्याचार करें और हम
रहें. यह तो हमारे
"तो तुम आखिर
चूहे ने पूछा. एक
एक होकर बहुत-कुछ
के दम पर पूसी मौसी
तो यह कोई बड़ी बात
"तुम भूल रहे
हो, वह तो पूसी थी,
है, काफी चतुर होता है
"हम सब उसके
के लाल बाले सूट की
नौजवान चूहे ने कहा
"और हम सब
किताबों को कुतर डा
चुहिया की गोद से
"नहीं, दोस्तो,
बदले की भावना को
जरूरत इस बात की है
सब चूहे एक बा
खड़ा हुआ. बोला—
आएं. हम सब मिलकर
जिनसे इसकी मौत की
कुछ नौजवान चू
भी आगे भागने लगा
पूंछ पकड़कर पीछे
बड़ों के काम में टांग
बेबी चूहा सकप

•

बूढ़े चूहे के
पलटकर देखने लगे
नहीं दिखाई पड़ा.
"अब क्या हो सकता
चालाक मालूम पड़

एक जवान चूहे को जोश आ गया—"चूहे चाचा, मैं जानता हूं इस मोटे चूहे को किसने मारा है!"

"किसने मारा है?" कई आवाजें उभरीं.

"हमारे मकान मालिक के लड़के मोटूराम ने. आजकल वह न जाने कहां से एक गुलेल ले आया है. चिड़ियों, कुत्तों और बकरियों को हर वक्त अपना निशाना बनाए रखता है. हो न हो, इस बेचारे को उसी ने निशाना बना लिया हो."

"अगर उसने ऐसा किया होगा, तो हम इसका बदला लेंगे!" सब नौजवान चूहे एक साथ चिल्लाए.

"बदले की भावना ठीक नहीं, साथियो. इससे तो हम मुसीबत में फंस सकते हैं. हो सकता है हमारा बड़ा नुकसान हो जाए," बूढ़े चूहे ने कहा.

एक चूहे ने विरोध किया—"वाह वाह! आप भी कैसी बात करते हैं, चूहे चाचा! कोई हम लोगों पर अत्याचार करे और हम बिना चू-चपड़ के सब कुछ सहते रहें. यह तो हमारे डरपोकपन को सिद्ध करता है!"

"तो तुम आखिर कर ही क्या सकते हो?" बूढ़े चूहे ने पूछा. एक नौजवान चूहे ने कहा—"हम सब एक होकर बहुत-कुछ कर सकते हैं. जब हम चतुराई के दम पर पूसी मौसी के गले में घंटी बांध सकते हैं, तो यह कोई बड़ी बात नहीं!"

"तुम भूल रहे हो," बूढ़े चूहे ने कहा—"जानते हो, वह तो पूसी थी, लालच में आ गई, लेकिन यह मनुष्य है, काफी चतुर होता है इससे बदला लेना आसान नहीं!"

"हम सब उसके कपड़ों को कुतर डालेंगे. मोटूराम के लाल वाले सूट को हम धज्जियां उड़ा देंगे!" एक नौजवान चूहे ने कहा.

"और हम सब छोटे चूहे उसकी तस्वीरों वाली किताबों को कुतर डालेंगे!" एक छोटे चूहे ने मम्मी चुहिया की गोद से झांकते हुए कहा.

"नहीं, दोस्तो, नहीं!" बूढ़े चूहे ने समझाया, "इस बदले की भावना को तुम अपने दिमाग से निकाल दो. जरूरत इस बात की है कि हम इस खून का पता लगाएं."

सब चूहे एक बार फिर चुप हो गए. बूढ़ा चूहा उठ खड़ा हुआ. बोला—"कुछ नौजवान चूहे मेरे साथ आएं. हम सब मिलकर पहले उन चिह्नों को खोजेंगे, जिनसे इसकी मौत की वजह पता चले."

कुछ नौजवान चूहे आगे बढ़ लिये. एक बेबी चूहा भी आगे भागने लगा, तो उसकी मम्मी चुहिया ने उसकी पूंछ पकड़कर पीछे खींच लिया—"चल इधर! भला बड़ों के काम में टांग अड़ाना कोई अच्छी बात है!"

बेबी चूहा सकपकाकर उसकी गोद में छुप गया.

●

बूढ़े चूहे के साथ वे सब उस मरे चूहे को उलट-पलटकर देखने लगे. कहीं भी खून का कोई निशान नहीं दिखाई पड़ा. वे उस बूढ़े की तरफ देखने लगे—"अब क्या हो सकता है, चूहे चाचा! खूनी तो बड़ा ही चालाक मालूम पड़ता है!"

बूढ़े चूहे ने उनसे सहमत होते हुए सिर हिलाकर कहा—"बिल्कुल ठीक कहते हो. इस चूहे के शरीर में कोई भी खरोंच आदि का निशान नहीं है, जिससे खूनी का पता चल सके. लेकिन मालूम तो करना ही है!"

वे सब फिर खोज में लग गए. खूनी के पंजों के निशानों को तलाशा. खिड़की के ऊपर और दरवाजे के पास किसी प्रकार के कोई निशान नहीं थे. वे सब निराश होकर फिर उस मरे चूहे के पास लौट आए.

बूढ़े चूहे ने कहा—"निराश होने से काम नहीं चलेगा. हम खूनी का पता लगाना ही होगा." कहता हुआ वह बक्स से उतरकर उस मरे हुए चूहे को उलटने-पलटने लगा. उसकी पूंछ को ध्यान से देखा. शायद कहीं दब गई हो और वह दर्द की वजह से मर गया हो. लेकिन वह तो बिल्कुल अच्छी थी.

●

सब चूहे सांस रोके एकटक उसकी तरफ देख रहे थे. उसने फिर उसे दूसरी करवट पलट दिया और ध्यान से देखने लगा. फिर एकाएक उसका ध्यान उसके मुंह की तरफ गया. वह खुला हुआ था और मजबूत, छोटे-छोटे मोती जैसे दो दांत वहां चमक रहे थे. तभी उसने उसे और ध्यान से देखा. लगा कि दांत के पास सफेद-सफेद, छोटी-सी गोल-गोल चीज फंसी है. उसने लपककर उसके मुंह को खोला और नाखून से उसे खुरचकर बाहर निकाला. और फौरन चिल्लाया—"खूनी! खूनी! पकड़ा गया खूनी! चू-चू . चू-चू!!"

टकुर-टकुर ताकते नौजवान चूहे, बक्स और अलमारी पर चढ़े चूहे, बेबी चूहे-चुहियां, बूढ़े चूहे चाचा की आवाज सुनकर सब लपक आए.

"कहां है खूनी? कहां है खूनी?" वे चिल्लाए.

"खूनी पकड़ा गया. मैं जानता था पकड़ा जाएगा. यह देखो, यह जहर की गोली!"

सब चूहे एक दूसरे के ऊपर चढ़कर उसे देखने लगे. बूढ़ा चूहा बोला—"देखो, साथियो, यह है लालच का फल!"

"लालच का फल? क्या मतलब है आपका?" एक चूहे ने पूछा.

"मतलब साफ है. कल जब वह आदमी आया था तभी मुझे शक हो गया था कि दाल में कुछ काला है. जानते हो उसी आदमी ने ये आटे की लिपटी जहर की गोलियां स्टोर-रूम में डाली होंगी, जिसे इस चूहे ने लालचवश खा लिया और जान से हाथ धो बैठा!"

"हम इसका बदला कैसे ले सकते हैं, चूहे चाचा?" एक चूहे ने पूछा.

"बदला लेने से काम नहीं चलता. अब हमें सीख लेनी चाहिए कि बिना समझे-बूझे किसी चीज को न छूएंगे, न खाएंगे. इससे हम हमेशा स्वयं किसी मुसीबत में नहीं फंसेंगे. प्रतिज्ञा करो, तुम सब ऐसा ही करोगे."

सब चूहों ने एक साथ कहा—"हां, हम ऐसा ही करेंगे!"

●

५९२ मालवीय नगर, इलाहाबाद—३

kissekahani.com

कहानी

परीक्षा और पुरस्कार

चाय लेकर ज्योति कमरे में आई, तो देखा, पापा अब भी उसी तरह सिर झुकाए बैठे हुए हैं. उसका नन्हा-सा दिल कांप उठा. उसने साहस बटोर कर फिर एक बार पूछ लिया—"पापा, मम्मी ठीक हैं न?"

"कहा तो, बेटा, कि ठीक हैं. वैसे आज ही तो आपरेशन हुआ है, एक दम अच्छी कैसे हो जाएंगी!"

"फिर आप इतने उदास क्यों हैं? खाने के लिए भी मना कर दिया."

"थक गया हूं न, गुड़िया," पापा ने कहा. "रात भर ठीक से सो भी नहीं पाया. अरे! तू तो चाय के साथ ढेर-सी चीजें ले आई!"

"आप सुबह से भूखे जो हैं!" कहकर ज्योति ने केटली उठाई, फिर कप में चाय डालते हुए बोली, "सारी प्लेट साफ करनी होगी, कहे देती हूं."

"बाप रे!" चाय लेते हुए पापा हंस पड़े. "एक दम अपनी मां की तरह रोब जमाना सीख गई है!"

पापा की बात से ज्योति को हंसी आ गई. पर... आंखें भी तुरंत भर आईं.

"धुत् पगली, रोती क्यों है? कहा तो कि आपरेशन एक दम ठीक हुआ है. अच्छा ऐसा कर, ये कुछ इंजेक्शन और दवाइयां नर्सिंग होम में दे आ. मैं जरा सो लूं," पापा ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा.

पापा की बात से ज्योति ऐसी खुश हुई मानो उसे मनचाही चीज मिल गई हो. वह कबसे मम्मी को देखने के लिए तरस रही थी. रात जबसे मम्मी नर्सिंग होम गई थीं, तबसे उनका वेदना में डूबा हुआ चेहरा उसकी आंखों में घूमता रहा था. यों ऊपर से बड़ी बहादुर बनी हुई वह मलय और नन्हे विनय को समझाती रही थी, पर दिल ही दिल में रुलाई जैसे उमड़ी पड़ रही थी. पड़ोस की कपूर आंटी, जो इस रात उसके पास सोने आ गई थीं, बारबार उसकी तारीफ कर रही थीं.

तैयार होकर जब वह ड्राइंग रूम में आई, तो पापा सोने चले गए थे. उसने धीरे से दवाइयां और इंजेक्शन उठाकर बास्केट में डाले और साइकिल की चाबी के लिए ज्यों ही पापा की जेब में हाथ डाला, तो उसकी चीख निकल गई. उसका हाथ आरपार निकल गया था.

"पापा, आपकी जेब!" कहती हुई वह बेड-रूम की ओर दौड़ी. उसे देखकर पापा ने दूसरी ओर मुंह फेर लिया. ज्योति पलंग पर बैठ गई. उसके पांव बुरी तरह कांप रहे थे.

"तो आप को मालूम था, पापा? आपको कब पता चला? कितने रुपये थे? और क्या था जेब में?" प्रश्नों की बौछार करते करते वह रो पड़ी. पता नहीं यह रुलाई कितनी देर से रुकी हुई थी, मौका पाकर उमड़ पड़ी.

पापा उठ बैठे और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, "रोती क्यों है, गुड़िया! क्या रोने से पैसे वापस आ जाएंगे?"

"तो फिर आप हमें कुछ बतलाते क्यों नहीं?"

"मैं तुझे दुखी नहीं करना चाहता था, बेटा. चोट खाकर तो कुछ देर को मैं भी सुन्न रह गया था. पांच सौ रुपये थे—बहुत बड़ी रकम थी, गुड़िया..." कहते कहते पापा के मुंह से एक उसांस निकल गई.

"इतने सारे रुपये! क्या आप बैंक गए थे?"

"हां, उस आकस्मिक खर्च का बंदोबस्त तो करना ही था. मैंने तो सुविधा की दृष्टि से उसे प्राइवेट

—मालती जोशी—

नर्सिंग होम में भर्ती क
कि..."

"अब मम्मी की

"दवाइयां तो खैर
पैसे की व्यवस्था तो मैं
सरोज या चाची को
होम हो आ, और दे
बताना," पापा ने समझ

"जी, पापा."

सारे रास्ते ज्योति
में उलझा रहा—मम्मी
एक समस्या थी. ऊपर
क्या बीत रही होगी,

और अब यह
किसी को बुलाने का
तो आराम तो खूब
दो दिन में ही घर
देंगे. और समय तो
उनका वह हाल था.
दिल धर पर लगा
की शामत आई है.
बिल्ल-पों में पढ़ाई
सरोज बुआ
लाती हैं (क्योंकि ला
मीठी है, पर शरीर

नर्सिंग होम में भर्ती करवाया था. किंतु क्या पता था कि. . ."

"अब मम्मी की दवाइयों का क्या होगा?"

"दवाइयां तो खैर आ गई हैं, और आती रहेंगी. पैसे की व्यवस्था तो मैं इसलिए कर रहा था कि नीलू, सरोज या चाची को बुलवाना पड़ेगा. खैर, तू नर्सिंग होम हो आ, और देख, अपनी मम्मी से कुछ नहीं बताना," पापा ने समझाया.

"जी, पापा."

सारे रास्ते ज्योति का मन तरह तरह के विचारों में उलझा रहा—मम्मी की यह बीमारी अपने आप में एक समस्या थी. ऊपर से यह चोट! पापा के दिल पर क्या बीत रही होगी, यह खूब समझ रही थी.

और अब यह बाहर से हमारी देख-रेख के लिए किसी को बुलाने का चक्कर और है. नीलू मौसी आएंगी, तो आराम तो खूब रहेगा, पर उनके वे चारों शैतान? दो दिन में ही घर को कबाड़खाना बनाकर रख देंगे. और समय तो मम्मी घर पर ही होती थी, तब उनका यह हाल था. अब वह स्कूल में भी रहेगी, तो दिल घर पर लगा रहेगा कि पता नहीं आज किस चीज की शामत आई है. फरवरी का आरंभ है, उन चारों की चिल्ल-पों में पढ़ाई का तो कल्याण ही समझो.

सरोज बुआ अपनी पलटन साथ कभी नहीं लाती हैं (क्योंकि ला नहीं पातीं). स्वभाव की [illegible] सीधी हैं. पर शरीर की इतनी मोटी कि [illegible] ही चल-फिर रहा हो. काम के नाम से तो उन्हें बुखार चढ़ता है. चाय भी बनाएंगी तो बीस बार नचाएंगी. गुड़िया, दियासलाई देना, जरा स्टोव में पिन कर देना, जरा शक्कर निकाल देना! इससे तो खुद काम करना कहीं आसान होता है.

चाची (पापा की) खूब काम करती हैं. उनके पीछे बच्चों की झंझट भी नहीं है. पर उनकी जबान की कैंची से सब कांपते हैं. महरी तो दूसरे ही दिन छुट्टी कर जाएगी. उनका काम से बचा हुआ समय गली-मोहल्ले की खाक छानने में बीतता है. रोज एक लड़ाई न करवा दें, तो उन्हें खाना हजम नहीं होता. विनय के जन्म के समय वह दो महीने यहां रह चुकी हैं. उस समय की यादें अब तक ताजा हैं.

फिर इनमें से किसी को भी बुलाया गया, तो किराये की व्यवस्था करनी होगी, इनके साथ के लिए किसी को ढूंढ़ना पड़ेगा. जाते समय बिदाई देनी होगी सो अलग. जब तक वे लोग रहेंगे, तब तक घर में

भी खर्च बढ़े हुए ही रहेंगे. नर्सिंग होम पहुंचने तक उसका मन एक निश्चय पर पहुंच चुका था.

नर्सिंग होम उसके लिए नया नहीं था. तीनों भाई-बहनों का जन्म यहीं हुआ था. उसे सभी सिस्टर्स जानती थीं, इसलिए मम्मी का कमरा ढूंढने में ज़रा भी दिक्कत नहीं हुई.

मम्मी का चेहरा बेहद थका और उदास लग रहा था. वह सो रही थीं. कुछ समय वहां बैठकर उस सफेद और म्लान चेहरे को वह देखती रही, फिर सिस्टर्स से विदा लेकर घर चली आई.

आते ही उसने जोरदार शब्दों में पापा को अपना निर्णय सुना दिया. देखभाल के लिए किसी को भी नहीं बुलाया जाएगा. पापा अगर चाहें, तो कोई विश्वस्त-सी मिसरानी रख सकते हैं. तब तक वह घर का और बच्चों का भार खुद अच्छी तरह संभाल लेगी.

पापा बड़ी देर तक लेकिन-वेकिन करते रहे, पर शीघ्र ही समझ गए कि किसी बाहरी व्यक्ति के आ जाने से मम्मी की सेवा तो जैसी होगी वह होगी, पर बच्चों की पढ़ाई का सत्यानाश हो जाएगा. ज्योति का आत्मविश्वास देखकर उन्हें भी बल मिला. मम्मी तो नर्सिंग होम में कुशल नर्सों की देखरेख में थीं. घर की ही चिंता थी, सो वह भी कुछ हल्की हो गई.

सुबह ही मालूम हो गया कि ज्योति ने कोरी डींग नहीं हांकी थी. सुबह सवेरे जल्दी उठकर उसने चाय बनाई, नहाने जाते हुए कुकर चढ़ा दिया. दाल-चावल बन जानेपर जल्दी-जल्दी फुल्के सेंक लिये. जोश में आकर मलय ने भी पानी भरने का काम सिर पर ले लिया. महरी के लिए उसने ज्योति से पूछकर साबुन में कपड़े भी भिगो दिए और दौड़कर बाजार से सब्जी भी ले आया. और तो और, नन्हा विनय भी उबले हुए आलुओं को छीलने में मदद दे रहा था.

फुल्के सेकने के बाद ज्योति को याद आया कि पापा को पेपर-समाधि में से उठाकर नहाने के लिए याद दिलानी होती है. पर बाहर आकर देखा, पापा उसकी और मलय की यूनिफार्म पर प्रेस कर रहे थे. ज्योति जब बहुत शर्मिंदा होने लगी, तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि आगे से यह काम उन्हीं का रहेगा.

खाना खाते हुए पापा बड़ी तारीफ कर रहे थे.

●

खाना खाने के बाद याद आया कि लंच-बाक्स के लिए पराठे सेंकना तो याद ही न रहा. तब पापा ने ढेर सारे सिक्के उसके हाथ में दे दिए. घर से चलते समय सब लोग बेहद खुश थे.

विनय को छोड़ने वह खुद बाल मंदिर गई और दीदी से कहा कि विनय को वह छुट्टी के बाद आया के साथ घर न भेजें, वरन् अपने घर ले जाएं. स्कूल से लौटकर वह ले जाएगी. दीदी बेचारी इतनी अच्छी थीं कि विनय को घर तो ले ही गई, साथ ही उसके दूध और नाश्ते का भी पूरा पूरा ध्यान रखा.

दूसरे दिन से यह तय हो गया था कि सुबह को पूरा खाना नहीं बनेगा. इसलिए कभी सब्जी-रोटी, आलू-पराठे या डबल रोटी से काम चल जाता. शाम को चारों रसोई में जुट जाते और मम्मी को रोज एक चुटकुला सुनने को मिलता.

मिसरानी की खोज जारी थी. दिन बड़े मजे से गुजर रहे थे कि एक दिन कैलेंडर की ओर देखकर ज्योति को ध्यान आया कि आज तो पापा का जन्म-दिन है. फौरन उसने उनकी पसंद के मीठे चावल बना डाले. पूरा एक घंटा स्टोव पर चढ़े रहे, पर चावल थे कि पकने का नाम नहीं ले रहे थे.

वह दौड़ी दौड़ी पड़ोस की विमला आंटी के पास पहुंची. उन्होंने आकर देखा, तो हंस पड़ीं—"पगली, शक्कर पहले ही से थोड़े डाली जाती है!" फिर उन्होंने अपने घर से बड़े ही बढ़िया चावल बनाकर भेजे. पापा बार बार उसकी और चावलों की तारीफ करते रहे, पर उसका मन खट्टा ही बना रहा; कितनी सारी शक्कर और चावल फेंकने जो पड़े थे.

●

फिर घर माने रसोईघर ही तो नहीं होता. रोज की नई समस्याएं थीं. किसी दिन फुल्के बनाते समय याद आता कि आटा तो एकदम खत्म है. कभी घी मंगाना होता, तो कभी शक्कर. किसी दिन दूध जमाने की याद नहीं रहती और वह फट जाता. कभी साबुनदानी में पानी भरा रह जाता और उसका हलुआ बन जाता. कभी कपड़े धोने का साबुन नीचे छूट जाता और उसे चूहे ले जाते. कभी धोबी की कापी खो जाती, तो कभी दूध का कार्ड. किसी दिन फुरसत से गंदे परदे धुल जाते, तो तकियों के गिलाफ मुंह चिढ़ाने लगते. कभी मालूम होता कि ड्राइंग-रूम की मेज पर छह दिन के अखबार इकट्ठे हो गए हैं, तो कभी धूल से भरी हुई पुस्तकों की आलमारी आंखों को खटकने लगती. कभी पापा की कमीज के बटन लगाने होते थे, तो कभी यूनिफार्म में कलफ करना होता था. कभी याद आता कि विनय के नाखून बढ़ गए हैं, तो कभी मलय को जबरन सैलून में भेजना पड़ता.

इन सबका तालमेल बिठाते-बिठाते बेचारी ज्योति हांफ उठती. सोचती—हाय, मम्मी कैसे इन सब कामों से निपटती होंगी. सुबह पड़ने के लिए जल्दी उठती, तो ढेर सारे काम आंखों के सामने नाचने लगते. रात को वह इतनी थक जाती थी कि नींद आने लगती थी. पुस्तक सामने रखकर वह मेज पर ही झपकी लेने लगती. फिर पापा कभी डांट कर, कभी प्यार से उसे सोने के लिए भेज देते.

स्कूल में उसकी पढ़ाई पर इन बातों का बुरा प्रभाव पड़ने लगा. दूसरी से आठवीं तक वह

लगातार प्रथम आ रही
लाड़ली थी. पर अब अ
जाते या शब्दार्थ ठीक से
बड़ी हैरान थीं. अंग्रेजीवाल
दिया कि—'ज्योति, तुम
होती जा रही हो!' उस

महीना बीतते बीतते
हो गया और कुछ दिन
दोनों ही बातों से ज्योति
ज़रा न मिला. मिसरानी
होता था, कई सब्जियां
और मम्मी को तो
पहनाना, कंघी करना—
दिन में कई बार बुखार
बनाना होता था. काम
गया था.

मार्च के अंतिम सप्ता
योग्य हुई कि अपनी दे
निगरानी भी. अब ज्यो
परीक्षा के समय तक उ
पुनः प्राप्त कर लिया था.

पर रिजल्ट के दि
पानी फिर गया था. प्रथ
स्थान पर अपना नाम
थी. पर दीदी के मुंह से
उसके और सबके चेह
कुमुद की और उसकी
बाजी जीत गई थी.

दूसरे नंबर पर भी
आया, तो वह फफक-फ
न चला कब तीसरे स्थान

दीदी के बाहर जा
कुमुद और नलिनी को
चल दी. दरवाजे पर ही
अपनी प्रगति-पुस्तिका
दीदी, मैं पांचवें नंबर प
देखी विनय भी कुछ
प्यार किया और कमरे
गई. मम्मी के सामने

पर पापा दफ्तर
लगाते हुए ही. मलय
अपने रिजल्ट सुनाए.
"और तुम्हारी दीदी
जवाब दिया मम्मी
गई है. शायद फेल हो
कर ले फिर उसके पा
"गुड़िया! ओ
मम्मी उसके कमरे में
झुकाए बैठी रही.

लगातार प्रथम आ रही थी. टीचर्स की वह बहुत लाड़ली थी. पर अब अक्सर उससे सवाल गलत हो जाते या शब्दार्थ ठीक से याद नहीं हो पाते थे. टीचर्स बड़ी हैरान थीं. अंग्रेजीवाली दीदी ने तो यहां तक कह दिया कि—'ज्योति, तुम दिनोंदिन ज्यादा लापरवाह होती जा रही हो!' उस दिन वह खूब रोई.

महीना बीतते बीतते एक मिसरानी का भी प्रबंध हो गया और कुछ दिन बाद मम्मी भी घर आ गई. दोनों ही बातों से ज्योति खुश तो हुई, पर उसे आराम जरा न मिला. मिसरानी को सामान निकालकर देना होता था, कई सब्जियां समझाकर बनवानी होती थीं, और मम्मी को तो बच्चों की तरह नहलाना, कपड़े पहनाना, कंघी करना—सब कुछ करना पड़ता था. दिन में कई बार बुखार देखना, दवाएं देना और पथ्य बनाना होता था. काम कम तो क्या हुआ, बढ़ ही गया था.

मार्च के अंतिम सप्ताह में जाकर मम्मी कुछ इस योग्य हुईं कि अपनी देखभाल कर सकें और घर की निगरानी भी. अब ज्योति ने पढ़ाई प्रारंभ की और परीक्षा के समय तक उसने खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त कर लिया था.

पर रिजल्ट के दिन उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था. प्रतिवर्ष की भांति कक्षा में प्रथम स्थान पर अपना नाम सुनने के लिए वह कितनी उत्सुक थी. पर दीदी के मुंह से कुमुद तांबे का नाम सुनते ही उसके और सबके चेहरे पर आश्चर्य झलकने लगा. कुमुद की और उसकी पुरानी होड़ थी और आज वह बाजी जीत गई थी.

दूसरे नंबर पर भी जब नलिनी शास्त्री का नाम आया, तो वह फफक-फफककर रो पड़ी. उसे पता ही न चला कब तीसरे स्थान पर उसका नाम पुकारा गया.

दीदी के बाहर जाते ही उसने अपने आंसू पोंछकर कुमुद और नलिनी को बधाई दी और घर की ओर चल दी. दरवाजे पर ही मलय उससे लिपट गया और अपनी प्रगति-पुस्तिका नचाते हुए बोला—"देखो, दीदी, मैं पांचवें नंबर पर आया हूं." मलय की देखा-देखी विनय भी कुछ चिल्ला रहा था. उसने दोनों को प्यार किया और कमरे में जाकर चुपचाप कुर्सी पर बैठ गई. मम्मी के सामने जाने की उसमें हिम्मत नहीं थी.

पर पापा दफ्तर से लौटे, तो ज्योति की पुकार लगाते हुए ही. मलय और विनय ने उन्हें दौड़-दौड़कर अपने रिजल्ट सुनाए. उन्हें अपथपाकर पापा ने पूछा—"और तुम्हारी दीदी कहां है? लौटी नहीं क्या?"

जवाब दिया मम्मी ने—"आते ही कमरे में चली गई है. शायद फेल हो गई है. मैंने सोचा कुछ जी हल्का कर ले फिर उसके पास जाऊंगी."

"गुड़िया! ओ गुड़िया!" कहते हुए पापा और मम्मी उसके कमरे में आ गए. ज्योति उसी तरह सिर झुकाए बैठी रही.

पापा ने धीरे से उसका बायां हाथ पकड़कर कुछ बांध दिया और फिर वह उसकी प्रोग्रेस बुक पढ़ने लगे. ज्योति ने देखा, एक प्यारी-सी रिस्टवाच उसकी कलाई पर चमक रही थी.

"ओह पापा!" कहते हुए वह रो पड़ी.

पापा जब बोले तब उनकी आवाज भर्राई हुई थी—"बेटा, स्कूल में तो तू हर साल अव्वल आती है, पर इस साल भगवान ने हमारी कितनी कठिन परीक्षा ली थी. उसमें भी तू हम सब से आगे निकल गई है. इसी लिए अपना पुराना वादा आज पूरा कर रहा हूं."

ज्योति को लगा वह सचमुच पहले नंबर पर पास हुई है. ●

चंबल कालोनी, जौरा, जिला मुरैना (म. प्र.).

मुर्गी का बच्चा

बंबई का एक उपनगर है मलाड. यहीं है चिंचोली गांव. इस गांव में एक पानवाले ने मुर्गी पाल रखी थी, जिसके सात छोटे-छोटे बच्चे थे. इनमें से एक बच्चा अपने को सब भाई-बहनों से ज्यादा चालाक समझता था.

एक शाम वह मुर्गी का बच्चा तालाब के किनारे जा पहुंचा. वहां उसने देखा कि एक बत्तख के साथ उसके छोटे-छोटे बच्चे भी तैर रहे हैं. उसके मन में भी बड़ी इच्छा हुई कि वह भी उनकी तरह पानी में खेलता, तो कितना अच्छा होता!

बत्तख के बच्चे जब पानी से बाहर आए, तो मुर्गी के बच्चे ने गौर किया कि उनके पैरों में पतला चमड़ा है, जिसके सहारे वे तैरते हैं. इसपर मुर्गी के बच्चे ने दिमाग लगाया कि किसी तरह वह भी अपने पंजों के तलुओं को जोड़ ले. खूब सोचने पर उसे सूझा कि क्यों न वह किसी मकड़ी से अपने पंजों के नीचे मोटा जाला बुनवा ले.

दूसरे दिन शाम पड़े जब बत्तख के बच्चे 'पैक-पैक' चिल्लाते हुए तालाब में तैरने लगे तो मुर्गी का बच्चा भी दोनों पंजों में जाला बुनवाकर छट्-छट् करता हुआ पानी में उतर गया. पर यह क्या! मुश्किल से दो बार पैर चलाए थे कि जाला पानी में बह गया और वह लगा डूबने! बत्तख के बच्चे चिल्लाने लगे. तभी बड़ी बत्तख झपटकर आई और उसे सिर से पकड़कर किनारे पर ले आई. बेचारे के सिर के नन्हे नन्हे बाल नुच जाने से अजीब सूरत हो गई थी उसकी.

घर पहुंचने पर उसके भाई-बहनों ने उसे खूब चिढ़ाया, पर मां ने उसे समझाया कि छोटी उम्र में बिना बड़ों से पूछे और बगैर समझे-बूझे किसी की नकल करने का यही नतीजा होता है!

—रोहिताश्व मित्तल

कहानी

नकली चेहरा

kissekahani.com

नीता ने दुबारा चौंककर देखा. हां, वह ममता ही तो थी. दौड़कर हांफते-हांफते वह रसोईघर में घुसी—"मम्मी... मम्मी...! ममता आ रही है!" नीता के लिए जैसे भूचाल आ गया था. उसने मां के दोनों हाथ पकड़कर जूठे बर्तनों पर से उठा दिया—"तुम जल्दी से कपड़े बदल लो, मैं तब तक यहां देखती हूं!"

इस अचानक खबर से मां सकपका गई. फिर संभलकर बोली—"अच्छा, भई, आती है तो आने दो. तेरी सहेली ही तो है, फिर मैं अपने घर का ही तो काम कर रही हूं!"

नीता झुंझला उठी—"तुम तो बस हर बात में बहस करती हो, मां, बस अब जल्दी से साड़ी बदल लो." मां की समझ में नहीं आया, यह अनुरोध था या आदेश? फिर भी कुछ न कहकर वह चली गई और एक उलझन भरी परेशानी से घिरी वह सोचती रही—'मालूम नहीं इस नीता को क्या हो गया है! कितनी सीधी-सादी थी, लेकिन जब से ममता से दोस्ती हुई है, लगता है नीता पूरी बदल गई है. न मालूम किस मृग-मरीचिका के पीछे पागल है? फिर ममता इतनी अमीर भी तो नहीं है.' कल भी तो वह नीता को समझा रही थी, तब क्या जवाब दिया था उसने—'मां, हम अमीर नहीं हैं, यही सोचकर क्या सब अमीरों से बात करना छोड़ दें! किसी से घुलें-मिलें नहीं?'

'सवाल घुलने-मिलने का नहीं है, नीता, सवाल तो यह समझने का है कि हम जा किधर रहे हैं? क्या अमीरों की नकल करने से ही हम अमीर बन जाएंगे?'

लेकिन नीता कुछ नहीं समझी थी. अपनी ही धुन में कहती गई—'इसमें अमीरी की क्या बात है, मां? मैं कितनी बार ममता के घर गई हूं, उसे भी तो अब बुलाना होगा. तब घर में कुछ सजावट भी होनी चाहिए. नहीं तो क्या कोई दुबारा यहां आना चाहेगा? देखो तो यह फटी हुई दरी! दीवार पर सफेदी ऐसी लगती है, जैसे कभी हुई ही नहीं!' फिर बुजुर्गों की तरह वह बोली थी—'मां, अगर हमें जीना है, तो ऊपर भी उठना होगा!'

'चाहे फिर हवा में ही क्यों न लटके रहें!' मां को हंसी भी आ रही थी उसकी बात पर और गुस्सा भी. 'नीता, कभी यह सोचा है कि इन सबके लिए पैसे की जरूरत होती है?'

'लेकिन, मां, मैंने यह कब कहा कि उधार मांगकर शान बढ़ाई जाए. मेरा मतलब तो सिर्फ यही है कि यदि हमारे पास कुछ नहीं है, तो सबको यही क्यों कहें कि सचमुच नहीं है.'

लेकिन बात सिर्फ इतनी है कि नीता समझती है कि मां बड़ी भोली-भाली, सीधी-सादी है, हर बात उसे खोल कर समझानी पड़ती है, परंतु यह वह भूल गई कि मां के पास अनुभव तो है. आज मां ने निश्चय कर लिया था कि नीता को सबक तो देना ही है—मगर तरीके से.

ममता के ऊपर आने तक नीता ने चटपट बर्तन एक ओर सरकाकर, पानी डालकर राख बहा दी. रसोई बंद करके हाथ से बाल ठीक करती वह सीढ़ी पर आ गई. आज ममता अकेली नहीं, अपनी मम्मी के साथ थी. नीता गद्
है ममता की मम्मी!
फहराते आंचल के हल्के
चौंधिया गई. कितनी

"आइए, आंटी जी,
हमारी याद आई!"
शब्दों की दाद दी.
थी. "ओ मम्मी ss...
लगा जैसे उसकी जबा
बनती भी कैसे? इत
जबान पर चढ़ा है, अब
बदल जाएगी. पीछे
दौड़ती-सी अपना आंच
खींच उठी. जब बता
फिर भी यह सुनी घोती
जितनी ऊंची! आंटी
गई थीं. मां ही उन्हें ह

जिस तपाक से मां
किया, नीता आश्चर्य
में दोनों ऐसे घुल-मिल
हों. इतना खुलापन
साल में भी नहीं आ पा
हो जातीं, तो कभी इत

kissekahani.com

के साथ थी. नीता गद्गद् हो उठी. कितनी हंसमुख हैं ममता की मम्मी! उनकी सिल्क की साड़ी के फहराते आंचल के हल्के नीले फूलों से नीता की आंखें चौंधिया गईं. कितनी सुंदर साड़ी थी!

"आइए, आंटी जी, आज तो बहुत दिन बाद आपको हमारी याद आई!" नीता ने मन ही मन अपने शब्दों की दाद दी. मां अभी तक बाहर नहीं आई थी. "ओ मम्मी ऽऽ..." आवाज देते ही नीता को लगा जैसे उसकी जबान लटपटा गई थी. स्वाभाविक बनती भी कैसे? इतने सालों से मां शब्द जो उसकी जबान पर चढ़ा है, अब एक महीने में ही थोड़े ही आदत बदल जाएगी. पीछे मुड़कर नीता ने देखा, मां दौड़ती-सी अपना आंचल संभालती आ रही थी. वह खीझ उठी. जब बता दिया था ममता ही आ रही है, फिर भी वह सूती धोती ही लपेटनी थी! वह भी एड़ी जितनी ऊंची! आंटी बेचारी ऊपर आते-आते हांफ गई थीं. मां ही उन्हें हाथ थामकर अंदर ले गई.

जिस तपाक से मां ने ममता की मम्मी का स्वागत किया, नीता आश्चर्यचकित रह गई. आधे ही घंटे में दोनों ऐसे घुल-मिल गईं, जैसे बरसों पुरानी सहेली हों. इतना खुलापन तो ममता और नीता में पूरे एक साल में भी नहीं आ पाया था. कभी दोनों खूब गंभीर हो जातीं, तो कभी इतनी जोर के ठहाके लगाने लगतीं कि बराबर के कमरे में बैठी नीता और ममता चुप हो जातीं. नीता तो इसी लिए इधर आ गई थी कि कहीं मां की झिझक ममता को संकुचित न कर दे. दोनों के अपने अलग ही विषय थे बातों के.

"कल तूने रचना को देखा था, ममता? उफ! क्या बताऊं क्या वेश था उसका! फ्राक तो मैली-सी, मगर काजल की रेखा इतनी लंबी, लेकिन फिर भी रंग में मिली जा रही थी!" दोनों हंसने लगीं. मगर नीता की हसरत भरी आंखें ममता की पीली स्कर्ट पर ही टिकी थीं. कब से वह मम्मी को ऐसी ही स्कर्ट खरीदने को कह रही है. मगर मम्मी की भी अपनी ही जिद, इतनी बड़ी लड़कियां क्या स्कर्ट पहनती अच्छी लगती हैं!

"क्या तीन ही कमरे हैं तुम लोगों के पास?" ममता पूछ रही थी. नीता अंदर ही अंदर जल उठी. ऐसे पूछ रही है जैसे पहली बार यहां आई है. अनजानी-सी बनकर उसने भी तड़ से सवाल जड़ दिया—"ममता, यह वही स्कर्ट है न जो तूने फंक्शन के दिन भी पहना था?" मानो पूछ रही हो, तुम एक ड्रेस सप्ताह में कितनी बार पहनती हो.

"हां, भई! मैं तो मम्मी की नई वाली साड़ी पहनकर आ रही थी, मगर ऐसे काले-काले बादल उमड़ रहे थे सुबह से! मैंने सोचा, कहीं बारिश हो गई, तो संभलेगी नहीं. खराब होगी सो अलग से." फिर उत्साहित-सी होकर बोली, "एक बात बताऊं, नीता, मेरे ताऊ जी ने बंबई से कमीज और चूड़ीदार पाजामे का कपड़ा भेजा है. जापानी है. तू आएगी तो दिखाऊंगी."

"किस रंग का है?" नीता बे लापरवाही दिखाते

—सरिता गुप्ता—

हुए पूछा. "मेरे फूफा जी ने लंदन से मेरे लिए कपड़ा लाकर दिया था. मुझे तो, भई, उसका रंग ही पसंद नहीं आया. वैसे था बड़ा सुंदर. मगर मेरी चचेरी बहन को बहुत पसंद था, सो मैंने उसी को दे दिया!" लेकिन नीता को मालूम था, लंदन से एक महीना पहले लौटे फूफा जी अभी तक उन लोगों से मिलने भी नहीं आए थे.

कुछ क्षण की चुप्पी के बाद ममता बोली—"कितनी गर्मी है यहां! हमारा घर तो इतना खुला है, आदत ही नहीं है इतनी बंद जगह में बैठने की."

अब बारी ममता के बोलने की आई थी. मालूम था अब शुरू होने वाला उसका भाषण जल्दी खत्म नहीं होगा. उनकी हर भेंट शीत युद्ध की-सी स्थिति के साथ ही खत्म होती है. नीता तुरंत उठ खड़ी हुई—"ममता, तुम

मम्मी के पास बैठो, मैं जरा चाय वगैरह ले आऊं." फिर एक मुस्कराहट की लहर नीता को छू गई. घर में तो कुछ रहता ही नहीं. खुद ही बाजार जाना होगा. काश, पापा के दफ्तर का चपरासी ही इस समय आ जाता.

"भई, तुम बेकार तकलीफ कर रही हो,"—बोलती बोलती ममता खड़ी हो गई. वहां दूसरे कमरे में पहुंच कर दोनों अवाक् रह गईं. क्या ठाठ से दोनों की मां फर्श पर बिछे गद्दे पर बैठी थीं. ममता ने बैठते बैठते एक रिमार्क कस ही दिया—"मम्मी, आज तो तुम पूरी हिंदुस्तानी बन गई हो!"

दोनों की आशा के विपरीत मम्मी ने तुरंत जवाब दिया—"बन क्या गए, हैं ही! भई, हम लोग तुम्हारी तरह एक ही रट तो लगाए रहते नहीं. जब जैसी जरूरत पड़ी, वैसे ही बन गए. क्यों, बहन जी, ठीक है न?"

"और क्या! मैं तो नीता से भी यही कहती हूं, दूसरों को अपनी झूठी शान दिखाना खुद को ही तो धोखा देना है. अमीर होने का दिखावा करने से ही तो हम अमीर नहीं हो जाएंगे!"

आखिर मां के मन की बात सबके सामने निकल ही गई न. नीता का चेहरा एकदम उतर गया. चाय बनाने के बहाने वह रसोईघर में चली गई. किंतु स्टोव जलाते-जलाते भी कान उधर ही लगे थे. हाय! अब तो मां अपनी पूरी पोल खोलने पर ही उतारू हो गई हैं. क्या-क्या बोलती जा रही हैं...कि...कि उन्हें यह छोटा-सा घर किस्मत से बड़ा सस्ता मिल गया... और...उनके यहां कोई नौकर नहीं है. घर का सारा काम नीता और वह स्वयं करती हैं...कि उसके पापा की तनख्वाह ...नीता का सिर घूमने लगा. कितनी डींगें मारी थीं उसने ममता के सामने. ममता भी कम गप्पें थोड़े ही मारती है. सभी लड़कियां यही करती हैं. मगर अपने आप असलियत मालूम होना अलग बात है. यहां तो मां ही अपना भंडाफोड़ कर रही हैं.

नीता को समझ नहीं आया—मां के भोलेपन पर हंसे कि रोए. वह तो स्वयं इसी लिए चाय बनाने चली आई थी कि छांटकर अच्छे से कप रखेगी. मां तो गिलास में ही चाय उठा लातीं.

•

ट्रे लेकर नीता कमरे में आई, तो उसके पैर नहीं उठ रहे थे. न चाहते हुए भी उसकी आंखें ममता की ओर उठ गईं. उसे आशा थी एक व्यंग्य भरी मुस्कुराहट से उसका स्वागत होगा. लेकिन ममता के चेहरे पर तो हवाइयां उड़ रही थीं, जैसे किसी भावी अनिष्ट से भयभीत हो. ओहो! तो यह बात है! अब ममता की मम्मी अपनी बात कह रही थीं—"अब तो हम अच्छा खाते-पीते हैं, लेकिन वे दुःख-भरे दिन भुलाए नहीं भूलते, जब अपने हाथों से लोगों को कपड़े सी कर देती थी!" उनका गला भर आया था. नीता की उत्सुकता बढ़ी. हाय, अपने ही ख्यालों में खोए-खोए उसने कुछ भी नहीं सुना. लेकिन यहां तो प्रकरण समाप्ति पर था.

मां ने नीता को देखकर कहा—"ये लीजिए आ गई नीता! अब आप ही समझाइए इसे. जब आप आईं, तो मैं बर्तन साफ कर रही थी, कहती थी ..."

"अरे, आप तो बिना मतलब ही उसपर नाराज हो रही हैं ..." स्नेह से ममता की मम्मी ने उसे अपने पास बिठा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगीं—"बड़ी समझदार बिटिया है. देखकर पांव पसारते हैं, गप्पी लोगों की बातों में आने से फायदा? दुनिया में वे ही सुखी रहते हैं, जो दिखावा नहीं करते. दिखावा करने वालों की कभी न कभी पोल खुल ही जाती है, तब उन्हें व्यर्थ की शर्मिंदगी उठानी पड़ती है."

नीता ने नीची निगाहों से ममता को देखा, वह भी झेंपती हुई मुस्कुरा रही थी. लेकिन नीता को तो आज एक बहुत बड़ी चीज मिल गई थी, एक बड़ी टेढ़ी समस्या का हल मिल गया था. चारों ओर कितना प्रकाश लग रहा था! •

५५ दूसरी मंजिल, निर्मलचंद्र स्ट्रीट,
कलकत्ता–१२.

शीर्षक प्रतियोगिता नं. ९ का परिणाम

पुरस्कार विजयी शीर्षक :

'बाप का माल'

प्रेषक :

कुमारी समीक्षा जैन, द्वारा श्रीमती मंजु जैन,
६ पूसा रोड, नई दिल्ली–५.

शीर्षक प्रतियोगिता–१२

छाया : चंद्रकांता

इस चित्र का शीर्षक बताइए

ऊपर के चित्र को देखिए और जरा सोचकर इसका एक बढ़िया और फड़कता हुआ शीर्षक बताइए. अपने उत्तर एक सबसे सस्ते पोस्ट कार्ड पर लिखकर हमें २० फरवरी तक भेज दीजिए. सबसे बढ़िया शीर्षक पर दस रुपये के मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेंगी. हां, कार्ड पर अपना नाम और पता लिखना मत भूलिए. शीर्षक के कार्ड इस पते पर भेजिए : संपादक, 'धर्मयुग' (शीर्षक प्रतियोगिता-१२), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई-१.

डाक-टिकटों पर भारत-रत्न

—गजराज जैन

प्रत्येक देश अपने उन सपूतों को अवश्य सम्मानित करता है जो देश की उन्नति एवं प्रगति के लिए अथक प्रयत्न करते हैं. हर वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमारे यहां भी उन साहसी व सुयोग्य व्यक्तियों को 'पद्म-श्री', 'पद्म-भूषण', 'पद्म-विभूषण' तथा 'भारत-रत्न' जैसे सम्मान सूचक अलंकरणों से विभूषित किया जाता है, जिन्होंने देश की भलाई के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया हो अथवा जिन्होंने अपने कार्य-क्षेत्र में विशेष योग्यता दिखाकर देश के गौरव को बढ़ाया हो.

इन अलंकरणों का दिया जाना सन् १९५४ के गणतंत्र दिवस से प्रारंभ हुआ. इनमें से 'भारत-रत्न' का अलंकरण सर्वोच्च है जो 'कला, साहित्य तथा विज्ञान की श्री वृद्धि के लिए किए गए असाधारण कार्य एवं सर्वोत्कृष्ट देश-सेवा' के लिए प्रदान किया जाता है. इसके साथ दिया जाने वाला पदक पीपल के पत्ते के आकार का होता है. ठोस कांसे के बने इस पदक के मुख्य भाग पर सूर्य की आकृति के नीचे 'भारत-रत्न' तथा पिछले भाग पर तीन सिंहों वाला राज-चिह्न एवं 'सत्यमेव जयते' का आदर्श वाक्य अंकित होता है.

विगत १४ वर्षों में देश का यह सर्वोच्च सम्मान केवल १४ व्यक्तियों को प्राप्त हुआ जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

सन् १९५४ में जिन तीन महापुरुषों को सम्मानित किया गया. उनमें सर्व प्रथम हैं चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, जिन्हें हम आदर पूर्वक केवल राजा जी कहते हैं. नब्बे वर्षीय राजा जी आजादी मिलने के बाद भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल बने. इसके अतिरिक्त उन्होंने बंगाल के राज्यपाल, केंद्रीय गृहमंत्री एवं मद्रास के मुख्यमंत्री के रूप में भी काम किया. इसी वर्ष 'भारत-रत्न' के अलंकरण से सम्मानित किये जाने वाले दूसरे व्यक्ति हैं हमारे देश के महान दार्शनिक एवं शिक्षा-विद् डॉ. राधाकृष्णन्. रूस में भारत के राजदूत रहने के बाद सन् १९५२ में आपको उपराष्ट्रपति चुना गया. इसके १० वर्ष पश्चात् आप भारत के राष्ट्रपति चुने गए. आपके सम्मान में आपके ७९ वें जन्म दिवस पर ५ सितंबर १९६७ को एक विशेष डाक-टिकट भी निकाला गया (चित्र नं ५). इसी वर्ष के तीसरे 'भारत-रत्न' हैं नोबुल पुरस्कार विजेता विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ. चंद्रशेखर वेंकट रमण, जो आज ८१ वर्ष की आयु में भी वैज्ञानिक खोजों में लगे हैं.

सन् १९५५ में भी यह सर्वोच्च सम्मान तीन महापुरुषों को ही प्राप्त हुआ. इनमें से प्रथम थे सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं दार्शनिक डॉ. भगवानदास, जिन्होंने अपने जीवन में भारतीय दर्शन एवं धर्म से संबंधित लगभग ३० पुस्तकें लिखीं. इनका देहांत १८ सितंबर १९५८ को ८९ वर्ष की आयु में हुआ. इनकी जन्म शताब्दी पर डाक-तार विभाग ने १२ जनवरी १९६९ को एक विशेष डाक-टिकट जारी किया था (चित्र नं. ३). इस वर्ष के दूसरे 'भारत-रत्न' थे मोक्ष गुण्डम विश्वेश्वरैया. एक इंजीनियर के रूप में इस कर्मयोगी ने अनेक औद्योगिक संस्थानों एवं सिंचाई योजनाओं का कार्य पूर्णकर देश की उन्नति में महान योगदान दिया. १०१ वर्ष की आयु में १४ अप्रैल १९६२ को इस महान शिल्पी का निधन हो गया. इनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक १५ सितंबर १९६० को एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया था (चित्र सं. ९). इसी वर्ष इस महान उपाधि से सम्मानित होने वाले तीसरे व्यक्ति थे बच्चों के प्यारे चाचा पं. जवाहरलाल नेहरू, जिन्हें एक विशेष समारोह में दिनांक १५ जुलाई १९५५ को यह अलंकरण प्रदान किया गया था (चित्र सं. २).

सन् १९५६ में किसी भी व्यक्ति को यह सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त नहीं हुआ. सन् १९५७ में तत्कालीन गृहमंत्री पं. गोविंदवल्लभ पंत को इसका एकमात्र अधिकारी समझा गया. स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख सेनानी पंत जी आजादी के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने. सरदार पटेल के देहावसान के पश्चात् आपको केंद्रीय गृहमंत्री पद पर नियुक्त किया गया, जिसपर कार्य करते हुए ७ मार्च १९६१ को आपका निधन हो गया. आपके ७८ वें जन्म दिन पर १० सितंबर '६५ को एक विशेष टिकट प्रकाशित किया गया था (चित्र सं. ७).

सन् १९५८ में 'भारत-रत्न' से सम्मानित होने वाले थे महान समाजसेवी धोंधो केशव कर्वे. अपने जीवन में २३ वर्ष गणित अध्यापन का कार्य करने के पश्चात् महर्षि कर्वे ने शेष आयु नारी आचरण एवं नारी शिक्षा के कार्य में बिताई. ९ नवंबर १९६२ को १०४ वर्ष की आयु में आपका देहांत हुआ. आपकी जन्म शताब्दी के अवसर पर १८ अप्रैल

१९५८ को एक वि
(चित्र सं. १).

इसके पश्चात्
को यह सर्वोच्च स
के कर्णधार डाक्टर
से लेकर मृत्यु पर्यंत
बंगाल का नव निम
जुलाई १८८२ को
को. इसी वर्ष 'भा
दूसरे महापुरुष पु

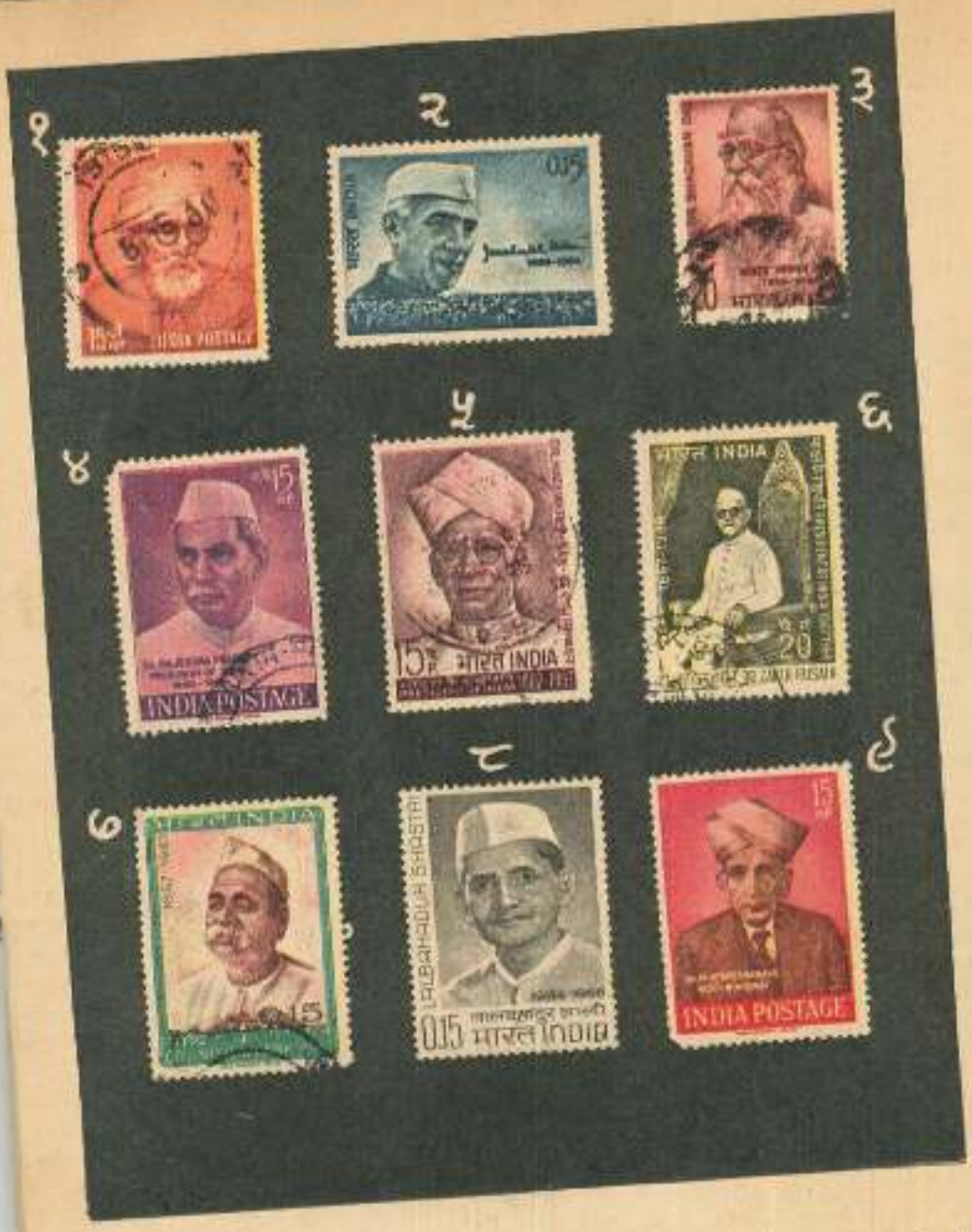

१९५८ को एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया (चित्र सं. १).

इसके पश्चात् सन् १९६१ में ही दो महापुरुषों को यह सर्वोच्च सम्मान दिया गया. प्रथम थे बंगाल के कर्णधार डाक्टर विधानचंद्र राय. स्वतंत्रता के बाद से लेकर मृत्यु पर्यंत डॉ. राय मुख्यमंत्री के रूप में बंगाल का नव निर्माण करते रहे. आपका जन्म १ जुलाई १८८२ को हुआ और निधन १ जुलाई १९६२ को. इसी वर्ष 'भारत-रत्न' से सम्मानित होने वाले दूसरे महापुरुष पुरुषोत्तमदास टंडन थे. जीवन भर राष्ट्र और राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा करने में सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले इस राजर्षि का देहांत भी १ जुलाई १९६२ को ही हुआ.

सन् १९६२ के एक मात्र 'भारत-रत्न' थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्रप्रसाद जो १९५० से १९६२ तक पूरे १२ वर्ष अपने पद पर कार्य करते रहे. आपकी पदमुक्ति के अवसर पर १३ जुलाई १९६२ को एक विशेष डाक-टिकट निकाला गया (चित्र सं. ४).

सन् १९६३ में इस उपाधि से सम्मानित होने वाले प्रथम महापुरुष थे तत्कालीन उप राष्ट्रपति

डॉ. जाकिरहुसैन जो सन् १९६७ में भारत के तीसरे राष्ट्रपति निर्वाचित हुए. डॉ. हुसैन के देहावसान के ४० वें दिन दिनांक ११ जून ६९ को एक विशेष डाक-टिकट जारी किया गया (चित्र सं. ६). इस वर्ष के दूसरे 'भारत-रत्न' थे महर्षि पांडुरंग वामन काणे. संस्कृत साहित्य एवं धर्मशास्त्रों के प्रकांड विद्वान् काणे ने अपने जीवन में विधवा विवाह एवं अस्पृश्यता निवारण के लिए भरसक प्रयत्न किया.

इन रत्नों की परंपरा में अंतिम हैं स्वनाम धन्य भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री. उत्तर प्रदेश एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम करने वाले शास्त्री जी ने अपने १८ महीनों के प्रधान मंत्रीत्वकाल में वह चमत्कार कर दिखाया जो अन्य व्यक्तियों के लिए वर्षों में करना संभव न था. १० जनवरी १९६६ को ताशकंद में उनका अचानक निधन हो गया. इस कारण उन्हें यह उपाधि मरणोपरांत प्रदान की गई. शास्त्री जी की स्मृति में उसी वर्ष २६ जनवरी को एक विशेष टिकट भी जारी किया गया था (चित्र सं. ८).

विगत ३ वर्षों से यह सर्वोच्च सम्मान सूचक अलंकरण किसी व्यक्ति को नहीं प्रदान किया गया है. ●

हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.).

घड़ी की सुइयां (पृष्ठ ३१ से आगे)

के रिटायर हो जाने के बाद से आमदनी हो गई कम. फिर तो बांकेलाल को आटे-दाल का भाव मालूम होने लगा. अब वह मुंह अंधेरे उठकर अखबार बांटने जाता. बूढ़ा बाप ट्यूशन करता. राधा अड़ोस-पड़ोस के कपड़े सीती और बांके की मां दूसरे घरों में जाकर बरतन मांजती. तब भी उस छोटी-सी गृहस्थी का खर्च पूरा न पड़ता.

बाबू प्राणनाथ बांकेलाल के अफसर थे. कभी वह किसी काम से उसे अपने बंगले पर भेजते तो वह सोच में पड़ जाता. क्या वह भी कभी साहब की तरह ठाट-बाट से रह सकेगा? अपने राजू को साहब के बेटे पंकज की तरह कालेज में पढ़ा सकेगा?

उसी वक्त 'बीबी जी' की आवाज उसकी तंद्रा भंग कर देती—"बांके, तुम आ गए. लो ये दस रुपये, बाजार से कुछ फल-सब्जी ले आओ." बाजार में चलते-चलते बांकेलाल फिर सोच में गुम हो जाता. अपने घर तो पूरे महीने में दस रुपये की सब्जी आती होगी.

सरकारी नौकरी और तबादला—इन दोनों का चोली-दामन का साथ है. प्राणनाथ की बदली आनंद-नगर हो गई, तो बांकेलाल को अच्छा नहीं लगा. वह उसे बहुत चाहते थे. नया अफसर न जाने कैसा हो? लेकिन जैसा भी हो—काम ही लेगा, जान तो लेगा नहीं. यही सोच कर वह अपने को तसल्ली देता.

●

प्राणनाथ से चार्ज लेने के बाद नए अफसर ने घंटी बजाई. बांकेलाल झटपट पर्दा उठाकर अंदर गया और सलाम करके चुपचाप खड़ा हो गया. साहब ने उसे देखा, तो देखते ही रह गए. थोड़ी देर के बाद उन्होंने कहा—"लगता है, तुम्हें कहीं देखा है. क्या नाम है तुम्हारा?"

"बांकेलाल, सर," उसने अदब के साथ जवाब दिया.

"तुम रामलखन हाई स्कूल में पढ़ते थे?" साहब ने दूसरा सवाल किया.

"जी, सर," बांकेलाल ने बताया.

"अरे बांकेलाल," साहब ने उसे पहचान लिया था. "आओ, यहां बैठो, मुझे पहचानते हो?"

उसे चुप देखकर साहब ने कहा—"इतनी जल्दी भूल गए अपने सहपाठी अनिल चोपड़ा को. वे दिन भी क्या दिन थे, भई. तुमने स्कूल में हड़ताल कराई थी और कितनी मजेदार मांग रखी थी प्रिंसिपल के सामने कि सबको बिना इम्तिहान प्रोमोशन दिया जाए!"

यह सुनते ही बांकेलाल हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया. फिर तो स्कूली जीवन की घटनाएं चलचित्र के दृश्यों की तरह उसकी आंखों के आगे आने लगीं. अनिल चोपड़ा हमेशा क्लास में अव्वल आता था. और जब उसने बांकेलाल की मांग को बेहूदा बताया था, तो उसने उसके हाथ-पैर तोड़ देने की धमकी दी थी. अनिल बाबू को जरूर यह बात याद होगी और अगर वह बदला लेने पर उतारू हो गया, तो? यह विचार आते ही बांकेलाल सहम गया.

'अब क्या होगा?' उसने सोचा. उसका सहपाठी अनिल उसे हुकुम दिया करेगा और उसे उसकी जी-हुजूरी करनी होगी? इस खयाल से उसे इतनी आत्मग्लानि हुई कि उसका सिर चकराने लगा और वह गश खाकर फर्श पर गिर पड़ा.

'धड़ाम' की आवाज सुनते ही हैड-क्लर्क फौरन पर्दा उठाकर अंदर आया. उसने पानी लाकर बांकेलाल के मुंह पर छींटे दिए. थोड़ी देर के बाद उसने अपनी आंखें खोलीं, तो अनिल बाबू ने कहा—"वह खड़े-खड़े तुम्हें क्या हो गया था, अब तो ठीक हो न?"

बांकेलाल ने जवाब दिया—"अब तो मैं ठीक हूं, सर. लेकिन स्कूल में रहते हुए मेरा दिमाग फिर गया था और मैंने गुरुजन से पढ़ने के बजाए उन्हें पढ़ाने की कोशिश की थी. नतीजा सामने है."

यह कहते-कहते उसका गला रुंध गया और आंखों में आंसू तैरने लगे. उसके मन में आया कि सामने दीवार पर टंगी घड़ी की सुइयों को पीछे मोड़ दे और जी-जान से पढ़ाई में जुट जाए. लेकिन यह अब उसके वश में न था, क्योंकि हर चीज का एक वक्त होता है. ●

३९०७ बईवाड़ा नई सड़क, दिल्ली–६

अनुकरण किया. अब दीदी
स्वयं उनको ही आपस में
समस्या खड़ी हो गई.

राजू ने कहा—"दीदी ने
हमारे साथ!"

शंकर बोला—"लगता
के पीछे हाथ धोकर पड़ी है.

"तो फिर क्या किया ज

"यही तो मैं भी सोच
घर जाते हैं तो खूब कोस
शायद पुलिस में रिपोर्ट लि
जाए. अगर दीदी की शर्त
भी कैसे जाए? तू तो कह
कहता है, मैं बड़ा हूं फिर भी

"और तुम कौनसा छो
हो! मालूम है, अंटी मार
मुझसे जलकर कहते हो कि म

शंकर लाजवाब हो
फिर बोला—"जो हो गय
आखिर अब मैं तुमसे सुलह
कि तू मुझे शंकरिया न क

राजू को लगा, उस
लिया है. शंकर से वह आज
का बदला जैसे आज ले लिय
हुए बोला, "सुलह के लि
एक शर्त पर कि मुझे कभी
"वादा करता हूं."
"मैं भी. . . ." राजू
अगले क्षण दोनों गले
आंखों में आंसुओं के मोती
इतने में सामने से रीता
"दीदी, तुम कहां चल
कर उसकी तरफ बढ़े.
"यहीं तो थी. तुम्हारे
उसके पुल के नीचे बैठी
थी. भगवान का शुक्र है मेरे
"कैसी परीक्षा?"
"तुम्हें एक करने का
मेरे लिए परीक्षा ही तो
हुई. किताबों में पढ़ा था
किसी पर जिम्मेदारी डाली
भी दोस्ती में बदल जाती
लोग आपस के बैर अपने
"क्या सच, दीदी?"
"मुझसे क्या पूछते हो
रीता ने कहा. उसकी
उठी थी.

मुंसिफ मजिस्ट्रेट कोर्ट, जि

एक परीक्षा (पृष्ठ २३ से आगे)

अनुसरण किया. अब दीदी की तलाश करने के पहले स्वयं उनको ही आपस में निपटना था. एक अजीब समस्या खड़ी हो गई.

राजू ने कहा—"दीदी ने बहुत बड़ी चाल खेली है हमारे साथ!"

शंकर बोला—"लगता है इस बार दीदी हम दोनों के पीछे हाथ धोकर पड़ी है."

"तो फिर क्या किया जाए?"

"यही तो मैं भी सोच रहा हूं. अगर दीदी बिना घर आते हैं तो खूब कोहराम मच जाएगा घर में. शायद पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने की नौबत भी आ जाए. अगर दीदी की शर्त मानी जाए. . . मगर मानी भी कैसे जाए? तू तो वही है न जो मुझे शंकरिया कहता है, मैं बड़ा हूं फिर भी मेरा मान नहीं रखता."

"और तुम कौनसा छोटों से प्यार करना जानते हो! मालूम है, अंटी मारकर गिराया था उस दिन. मुझसे जलकर कहते हो कि मास्टरों की चमची करता है!"

शंकर लाजवाब हो गया. थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला—"जो हो गया, सो हो गया, दीदी की खातिर अब मैं तुझसे सुलह करने को तैयार हूं, बशर्ते कि तू मुझे शंकरिया न कहे!"

राजू को लगा, उसने बहुत बड़ा मैदान मार लिया है. शंकर से वह बाजी जीत गया था. अंटी मारने का बदला जैसे आज ले लिया उसने. मंद मंद मुस्कराते हुए बोला, "सुलह के लिए मैं भी तैयार हूं, लेकिन इस शर्त पर कि मुझे कभी चमची मास्टर न कहोगे?"

"वादा करता हूं."

"मैं भी. . . ." राजू ने हाथ बढ़ाकर कहा.

अगले क्षण दोनों गले मिल रहे थे और दोनों की आंखों में आंसुओं के मोती चमक रहे थे.

इतने में सामने से रीता आती दिखाई पड़ी.

"दीदी, तुम कहां चली गई थीं?" दोनों लपककर उसकी तरफ बढ़े.

"यहीं तो थी. तुम्हारे पास ही सामने नहर है, उसके पुल के नीचे बैठी तुम्हारी सब बातें सुन रही थी. भगवान का शुक्र है मेरी परीक्षा खत्म हुई!"

"कैसी परीक्षा?"

"तुम्हें एक करने का जो बीड़ा उठाया था, वह मेरे लिए परीक्षा ही तो थी, और मैं इसमें कामयाब हुई. किताबों में पढ़ा था कि मुसीबत के समय अगर किसी पर जिम्मेदारी डाली जाए, तो उस समय दुश्मनी भी दोस्ती में बदल जाती है. एक यही समय होता है जब लोग आपस के बैर अपने आप भूल जाते हैं."

"क्या सच, दीदी?"

"मुझसे क्या पूछते हो, तुम्हीं अपने दिल से पूछो!" रीता ने कहा. उसकी आंखें खुशी के मारे छलछला रही थीं. ●

मुंसिफ मजिस्ट्रेट कोर्ट, बिलाड़ा (जोधपुर).

क्या तुम जानते हो?

—कि ईरानी नस्ल का घोड़ा सबसे अधिक अच्छा माना जाता है.

—कि सींग वाली नस्ल की बकरियां बे सींग वाली से अधिक दूध देती हैं.

—कि भेड़ के दांत गिनती में ३२ होते हैं.

—कि मादा मेमने के दो से अधिक थन हों तो वे उसे बहुत तकलीफ देते हैं.

—कि ऊंट चलते समय एक तरफ की दोनों टांगें एक साथ उठाता है.

—कि खच्चर के संतान पैदा नहीं होती.

—कि छोटे-से-छोटा स्तनपायी जंतु चवन्नी भर तौल की बौना छछूंदर होती है.

—कि बड़े सिंह का आकार १० फुट लंबा होता है. शरीर का भार ६-७ मन होता है.

—कि एशिया में सबसे बड़े आकार का गैंडा भारतीय जाति का होता है.

—कि अनोआ की औसत आयु २० वर्ष होती है.

—कि नील गाय या ऋष्य भारत का सबसे बड़े आकार का हरिण है.

—कि नर चिम्पैंजी मादा की अपेक्षा दूनी शक्ति का होता है.

—कि सिंहनी एक बार में ३ से लेकर ६ तक शिशु उत्पन्न करती है.

—कि समस्त चौपायों में चीता सबसे अधिक तीव्रगामी है.

—कि हाथी के बाह्य नासिका-रंध्र (नथुने) सूंड़ के अगले सिरे पर होते हैं.

—कि हिरनमूसा या हरिण-मूषक नाम का जंतु नियमवंती या समवंती स्तनपायियों (खुरवाले जानवरों) में सब से छोटे आकार का होता है.

—कि सुअरनी एक समय में ४ से १० बच्चे जनती है.

—कि व्हेलें जब सांस लेने के लिए अपना सिर पानी से बाहर निकालती हैं तो भीतर की गंदी हवा को बड़े जोर से बाहर छोड़ती हैं. कभी-कभी बाहर की ठंड के कारण यह गंदी हवा तुरंत भाप में बदल जाती है और दूर से ऐसा जान पड़ता है कि व्हेलें अपनी नाक से पानी का फव्वारा छोड़ रही हैं.

—कुमारसंभव

पिक्चर में बिल्ली

कोट, पेंट और टाई सज कर,
पहन धूप का चश्मा,
चूहे दादा पहुंचे पिक्चर,
देखा अजब करिश्मा!

ज्यों ही पिक्चर के पर्दे पर
बिल्ली पड़ी दिखाई;
चूहे दादा भागे घर को,
छोड़ पेंट और टाई!

—रमेशचंद्र उप्रेती 'रवि'

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

kissekahani.com

चूहे की शादी

चूहे चाचा की शादी में,
घोड़ा - गधा बराती!
गीदड़ लगा बजाने तबला,
हिरनी खुश हो गाती!

खटक गई घोड़े-गदह में,
खूब मचा हंगामा,
चूहा चुहिया को ले भागा,
छोड़ नया पाजामा!

—मंगलराम मिश्र

कबाड़ी

पीपल के नीचे रहत
चूहा एक क
दो-दो मेंढक जोत-जो
खूब चलाता

अनाड़ी

पहली बार बना
बंदरराम ह
पर आया जो भी
उसकी आई

kissekahani.com

कबाड़ी की गाड़ी

पीपल के नीचे रहता था
चूहा एक कबाड़ी;
दो-दो मेंढक जोत-जोत कर,
खूब चलाता गाड़ी!

सीधा-सादा पथ हो चाहे,
ऊबड़-खाबड़ झाड़ी,
बड़े मजे से उचक उचक कर
चलती उसकी गाड़ी!

—जगदीशचंद्र शर्मा

बाल पुस्तकालय
बिजनौर

कार पड़ी बीमार

गप्पीमल ने गप्प लड़ाई—
खुली लाटरी, भाई,
आज हमारे घर पर उससे
नई कार है आई!

भीड़ जमा जब हुई देखने,
गप्पी जी की कार,
गप्पी बोले अस्पताल में—
कार पड़ी बीमार!

—सीताराम गुप्त

अनाड़ी हज्जाम

हली बार बनाने बैठे
ररराम हजामत,
ा आया जो भी बनवाने,
की आई शामत!

पैना छुरा चलाया ज्यों ही,
काटी आधी ठोड़ी,
घबड़ा कर ज्यों की त्यों आधी
बिना बनाए छोड़ी!

—श्रीप्रसाद

kissekahani.com

अंदर की आवाज़ (पृष्ठ से २७ आगे)

का गला भर आया. बड़ी कठिनाई से वह बोल सका : "सुबोध, तुमने संकट के समय में मेरी सहायता की है. मैं तुम्हारा यह अहसान कभी न भूलूंगा. मैं अवश्य ही तुम्हारे पैसे लौटा दूंगा."

रास्ते भर सुबोध अनिलेश को कुछ न कुछ शिक्षा देता रहा. अनिलेश बस बीच बीच में अपनी डबडबाई आंखों से उसे देख भर लेता था.

●

सुबह के दस बजने वाले थे. हॉल खचाखच भरा था. आज परीक्षा-फल घोषित किया जाने वाला था. सभी लड़के उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे. सुबोध के विषय में भी धीरे धीरे बातें हो रही थीं. स्वयं सुबोध भी एक कोने में गुमसुम-सा बैठा, धड़कते हुए दिल से आगे आने वाली घड़ी का इंतजार कर रहा था.

ठीक दस बजे सभी अध्यापकों के साथ प्रधानाचार्य ने हॉल में प्रवेश किया. सभी विद्यार्थी सम्मान में खड़े हो गए. प्रधानाचार्य ने मुस्कराते हुए बैठने का संकेत किया. सब बैठ गए.

कार्यक्रम शुरू हुआ. पहले कक्षा छह, सात, नौ व ग्यारह के परीक्षाफल घोषित किए गए. सबसे अंत में कक्षा आठ की बारी आई. सभी विद्यार्थियों को परीक्षाफल मिल गए. लेकिन सुबोध व अनिलेश के परीक्षाफल नहीं दिए गए. सबको बड़ी उत्सुकता हो रही थी. तभी प्रधानाचार्य महोदय शांति को भंग करते हुए बोले :

"प्रिय छात्रो, आप सबको मालूम ही है कि परीक्षा के दौरान एक छात्र के पास से कुछ नकल करने के परचे प्राप्त हुए थे. ऐसी स्थिति में विद्यालय के नियमानुसार किसी भी विद्यार्थी को कठोर दंड दिया जा सकता है, यहां तक कि उसकी कक्षोन्नति भी रोकी जा सकती है. परंतु ईश्वर का धन्यवाद कि हमें ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ा. जिस विद्यार्थी को हम दोषी समझ रहे थे, वह वास्तव में दोषी नहीं था, इसका पता आज सवेरे हमें एक विद्यार्थी के पत्र द्वारा चला."

प्रधानाचार्य थोड़ा रुक कर पुनः बोले :

"बच्चो, गलती प्रायः सभी इंसानों से हो जाती है, परंतु वही व्यक्ति सच्चा वीर है, जो अपनी गलती को छिपाता नहीं, उसे स्वीकार करता है, उसके लिए पश्चात्ताप करता है तथा आगे न करने का संकल्प करता है."

सभी विद्यार्थी प्रधानाचार्य की बातें ध्यान से सुन रहे थे. उन्होंने आगे कहा—"मैं चाहता हूं कि आपको वह पत्र पढ़कर सुनाऊं, जिसके द्वारा एक विद्यार्थी ने अपने एक संगी, निर्दोष विद्यार्थी को अनुचित दंड पाने से बचा लिया तथा स्वयं साहसपूर्वक अपने अपराध को स्वीकार किया." प्रधानाचार्य ने एक पत्र खोला और पढ़ने लगे. लिखा था :

"श्रीमान प्रधानाचार्य,

"मैं अपने आपको इस योग्य नहीं समझ रहा हूं कि आपके सामने आ सकूं. अतः बड़े ही पश्चात्ताप के साथ यह पत्र लिख रहा हूं. पिछली परीक्षा में, गणित द्वितीय प्रश्न-पत्र के दिन, सुबोधकुमार के डेस्क से जो नकल के परचे प्राप्त हुए थे, उनका दोषी वह नहीं है. उसने नकल नहीं की थी. नकल मैंने की थी. परीक्षा के दौरान सुबोध एक बार पानी पीने के लिए बाहर गया था. मैंने मौका देखकर और सबकी आंख बचाकर वे परचे उसके डेस्क में रख दिए थे.

"और अंत में वह बेचारा पकड़ा गया. वह निर्दोष है. कृपया उसे कोई दंड न दें. दंड का भागी मैं हूं. मैंने उसका अहित चाहा था, परंतु उसके लिए मेरी अंतरात्मा ने मुझे धिक्कारा है. इसलिए मैं अपनी गलती को स्वीकार कर रहा हूं. अब मेरे दंड का क्या विधान होगा, यह आप की इच्छा पर निर्भर है.

मैं हूं आपका एक अयोग्य शिष्य
अनिलेशकुमार, कक्षा आठ."

पत्र पढ़कर प्रधानाचार्य कुछ देर रुके और बोले—"अब आप लोग शायद, सुबोधकुमार का परीक्षा फल जानने के लिए उत्सुक हैं. तो सुनिए, सुबोधकुमार ने न केवल अपनी कक्षा में वरन् समस्त विद्यालय की गृह-परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है. इस बड़ी सफलता के लिए हम सभी अध्यापकों की ओर से उन्हें विशेष बधाई स्वीकार हो. इस सफलता के पारितोषिक रूप में, विद्यालय की ओर से उनकी छात्रवृत्ति में पांच रुपये प्रतिमास की वृद्धि करने का निश्चय किया गया है. इस प्रकार कक्षा नौ में उन्हें पंद्रह रुपये प्रतिमास छात्रवृत्ति प्राप्त होगी." पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज गया. अनिलेश ने भी खूब जोरों से तालियां बजाईं.

अंत में प्रधानाचार्य ने कहा, "अब अनिलेश के बारे में सुनिए : इसको मैंने क्षमा करने का निर्णय किया है. जो सच्चे दिल से अपने किएपर पश्चात्ताप करता है, उसका अपराध धुल जाता है. हां, अब उसे परीक्षा दुबारा देनी होगी— ठीक एक माह बाद. अगर वह उसमें पास हो गया, तो उसे भी अगली कक्षा में चढ़ा दिया जाएगा."

इसके बाद सभा समाप्त हो गई. लड़के बाहर निकले. सुबोध की आंखें छलछला आईं. वह अनिलेश को ढूंढने लगा. अनिलेश दूर एक कोने में खड़ा था. सुबोध उसके पास गया, कंधे पर हाथ रखकर उसका रुख अपनी ओर किया. वह भी रो रहा था. सुबोध ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया. ●

मिश्रा कंपाउंड, बारह पत्थर, पीलीभीत (उ. प्र.)

गायब थे. वे एकदम नि
रुकने को कहकर चारो
कमरे को छू-छूकर देखना
ठोस पत्थर की थी. कहीं
कोई रोशनदान तक उस
अब उन्होंने रीता क
कुछ नहीं मिला, तो अ
रखकर हथेली के पंखे से
में रीता को होश आ गय
"हम लोग कहां हैं?"
"जहां हम लोगों
राम ने चिढ़कर कहा,
लड़कियों को तो कतई न
"मैं डरपोक नहीं
की कमजोरी को भूलकर
काग-सा जानवर—उससे
"शुक्र है खरगोशों से
व्यंग्य कसा. "हम तो सम
गोशों से भी डर लगता
"गोट हेल! (नरक
"वहीं से बोल रहे हैं
ठहाका लगाकर हंस पड़ा
श्याम भी हंसा—औ
रुकने का यत्न करके रीत
"यह तो मैं भूल ग
ऐसे जीव मिल सकते
"अब वह आ जाए
नहीं?" राम ने पूछा.
"नहीं, अब नहीं
"नहीं डरना चाहिए
"आपको शायद मालूम
संकट में हैं. हमें बचाने
भी यहां पहुंचने में देर ल
सूरत निकल सकती है, त
ठिकाने रखकर. अक्ल ने
"आप लोग पुलिसव
"हां, हम पुलिसवाले
"हम उस गैंग का पता
एक-एस-डी की गोलियां
पूरे देश के विद्यार्थी-
लड़कियों के रूप में बदल

रीता चुप रही.
आवश्यकता बहुत सख्ती
"तुम हाई कोर्ट के
लड़की हो?" सहसा ही
"हां," और रीता
मुंह छिपा लिया. वहां

योग्य नहीं समझ रहा हूं
अतः बड़े ही पश्चात्ताप
पिछली परीक्षा में, गणित
सुबोधकुमार के डेस्क से
हुए थे, उनका दोषी
ही की थी. नकल मैंने
ोच एक बार पानी पीने
मैंने मौका देखकर और
चे उसके डेस्क में रख

पकड़ा गया. वह निर्दोष
ं. दंड का भागी मैं हूं
, परंतु उसके लिए मेरी
ा है. इसलिए मैं अपनी
हूं. अब मेरे दंड का क्या
ला पर निर्भर है.
का एक अयोग्य शिष्य
ेशकुमार, कक्षा आठ."
कुछ देर रुके और
ायद, सुबोधकुमार का
ुक है. तो सुनिए, सुबोध-
ों में वरन् समस्त विद्या-
न स्थान प्राप्त किया है.
म सभी अध्यापकों की
ीकार हो. इस सफलता
लय की ओर से उनकी
ास की वृद्धि करने का
प्रकार कक्षा नौ में उन्हें
प्राप्त होगी." पूरा हॉल
ज गया. अनिलेश ने भी

कहा, "अब अनिलेश के
क्षमा करने का निर्णय
पने किएपर पश्चात्ताप
जाता है. हां, अब उसे
क एक माह बाद. अगर
उसे भी अगली कक्षा में

गई, लड़के बाहर निकले.
आई. वह अनिलेश को
ोने में खड़ा था. सुबोध
थ रखकर उसका रुख
रहा था. सुबोध ने उसका

बीलीभीत (उ. प्र.).

डबल सीक्रेट एजेंट (पृष्ठ ३५ से आगे)

गायब थे. वे एकदम निहत्थे थे. राम ने श्याम को वहीं रुकने को कहकर चारों तरफ से उस कठघरेनुमा कमरे को छू-छूकर देखना शुरू किया. उसकी दीवारें ठोस पत्थर की थीं. कहीं कोई आला-दीवाला नहीं था. कोई रोशनदान तक उस कोठरी में नहीं था.

अब उन्होंने रीता को सुध ली. श्याम को और कुछ नहीं मिला, तो अपने पैरों पर ही उसका सिर रखकर हथेली के पंखे से हवा करने लगा. कुछ ही देर में रीता को होश आ गया. वह कराहते हुए उठ बैठी.

"हम लोग कहां हैं?"

"जहां हम लोगों को नहीं होना चाहिए था," राम ने चिढ़कर कहा, "और जहां तुम जैसी डरपोक लड़कियों को तो कतई नहीं होना चाहिए था."

"मैं डरपोक नहीं हूं!" रीता अपनी बेहोशी की कमजोरी को भूलकर बोली. "पर—पर वह किंग-कांग-सा जानवर—उससे मुझे बड़ा डर लगता है!"

"शुक्र है खरगोशों से नहीं लगता!" राम ने दूसरा व्यंग्य कसा. "हम तो समझते थे कि लड़कियों को खरगोशों से भी डर लगता है!"

"गो टु हेल! (नरक में पड़ो)!" रीता ने कहा.

"वहीं से बोल रहे हैं!" राम ने कहा और जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ा.

श्याम भी हंसा—और दो सैकिंड गंभीरता बनाए रखने का यत्न करके रीता को भी हंसी आ गई.

"यह तो मैं भूल ही गई थी. नरक में ही चान ऐसे जीव मिल सकते हैं."

"अब वह आ जाए, तो तुम उससे डरोगी तो नहीं?" राम ने पूछा.

"नहीं, अब नहीं डरूंगी."

"नहीं डरना चाहिए, मिस रीता," राम बोला, "आपको शायद मालूम नहीं कि हम तीनों के प्राण संकट में हैं. हमें बचाने के लिए शायद भगवान को भी यहां पहुंचने में देर लग जाए. अगर बचने की कोई युक्ति निकल सकती है, तो सिर्फ साहस से, बुद्धि को ठिकाने रखकर. अक्ल ने जवाब दिया और जान गई."

"आप लोग पुलिसवाले हैं?" रीता ने पूछा.

"हां, हम पुलिसवाले हैं," राम ने स्वीकार किया. "हम उस गैंग का पता लगाने के लिए निकले थे, जो एल-एस-डी की गोलियां विद्यार्थियों में सप्लाई करके पूरे देश के विद्यार्थी-समाज को आवारा लड़के-लड़कियों के रूप में बदल देना चाहता है."

रीता चुप रही. वह इस समय एक गोली की आवश्यकता बहुत सख्ती से अनुभव कर रही थी.

"तुम हाई कोर्ट के सम्मान्य जज दीनदयाल जी की लड़की हो?" सहसा ही श्याम ने पूछा.

"हां," और रीता ने दोनों हथेलियों से अपना मुंह छिपा लिया. यहां इसकी आवश्यकता नहीं थी. अंधेरे में हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था.

दो सेकिंड सन्नाटा छाया रहा. तभी किसी के दबे हुए पैरों की आवाज उन्हें सुनाई पड़ी.

"ऐसा लगता है कोई चुपके चुपके आ रहा है!" श्याम ने फुसफुसाकर कहा.

पदचाप जंगले के पास आकर रुक गई.

"कौन है?" राम ने कड़ककर पूछा.

कोई उत्तर नहीं मिला.

श्याम फुर्ती से उठा और दीवार को टटोलता हुआ जंगले के पास पहुंचा. उसकी आवाज कुछ दूर बैठे राम और रीता को सुनाई पड़ी—"कौन है, भाई?"

किसी आदमी का उत्तर उन्हें सुनाई नहीं पड़ा.

और उसी समय श्याम की चीख भरी पुकार सुनाई पड़ी—"राम!"

राम चीते की तरह उछलकर जंगले के पास पहुंच गया. श्याम चिल्लाया—"दूर रहना, राम! चान ने जंगले में हाथ देकर मेरा हाथ थाम रखा है—उफ! बाहर खींच रहा है, राम!"

राम ने श्याम को टटोला. जल्दी ही उसका हाथ राम के हाथ में आ गया. लेकिन उसपर पांच मोटे मोटे कड़े से लिपटे हुए थे—चान की उंगलियों के रूप में. अब उसकी हीं-हीं- हीं-हीं की आवाजें भी सुनाई पड़ने लगी थीं. श्याम अपने समस्त शरीर का बल लगाकर अपना हाथ पीछे खींचने की कोशिश कर रहा था. उसका हाथ उखड़ा जा रहा था, लेकिन चान बराबर उसका हाथ बाहर की तरफ खींच रहा था.

और उसी समय राम और श्याम को लगा कि रीता भी उनके बीच में है. वह भी राम के साथ साथ श्याम के हाथ को पकड़कर अंदर की तरफ खींचने की कोशिश कर रही थी. लेकिन श्याम का हाथ उतरने में अब देर नहीं थी.

और उसी समय चान की चीख व गुर्राहट की आवाज सुनाई पड़ी, और उसने झटके के साथ हाथ भीतर से बाहर की तरफ खींच लिया. लेकिन उसकी उंगलियां श्याम के हाथ को छोड़ चुकी थीं—क्योंकि उन में रीता के तीखे दांत गड़े हुए थे—गहराई तक—हड्डियों तक! रीता का सिर क्रोध से जंगले के साथ टकराया.

खेद है कि कुछ अप्रत्याशित कारणों से इस उपन्यास की शेष किस्तें 'पराग' में प्रकाशित नहीं हो सकेंगी. **'चंदर पाकिट बुक्स, ३३६ खैर-नगर बाजार मेरठ शहर (उ. प्र.)'** से पाकिट बुक के रूप में इसका प्रकाशन हो रहा है. उत्सुक पाठक 'पराग' संपादकीय विभागको पत्र न लिख कर उपर्युक्त संस्था से ही संपर्क स्थापित करने का कष्ट करें.

—संपादक

तिब्बत की चामरगौ

kissekahani.com

— अरुणकुमार

बच्चो, तुम लोगों को जगह जगह के जानवर देखने का शौक है. शायद तुम यह भी चाहते हो कि तुम्हारा अपना चिड़ियाघर हो, जिसमें तरह तरह के जानवर हों. पिछले महीनों में हमने तुम्हारी कारनिस या मेज के लिए ऐसे ही कुछ जानवर बनाने के लिए दिए थे. इस बार हम तिब्बत की चामरगौ, जिसे याक भी कहते हैं, तुम्हारे लिए पकड़ लाए हैं.

देखो, यह गरीब जानवर कितना भोला-भाला और दीन हीन-सा दिखाई देता है! अगर तुमने इसे मजबूती के साथ बना लिया, तो तुम इसकी मजबूत पीठ पर छोटी-मोटी चीजें भी रख सकते हो. यह कुछ नहीं कहेगा, खुशी खुशी तुम्हारे सामान को अपनी पीठ पर लादकर जहां तुम चाहोगे, पहुंचा देगा. शर्त यही है कि तुम्हें इसे अपने साथ साथ ले जाना पड़ेगा, गोदी चढ़ाकर!

लो, इसे बनाने की तरकीब बहुत आसान है :

सामने के पृष्ठ के चित्र को 'पराग' के अंक से इस तरह निकालो कि दूसरी ओर का पन्ना अलग न हो जाए. बेहतर हो अगर तुम किनारे पर लगभग एक सेंटीमीटर पट्टी छोड़कर पूरा चित्र अलग कर लो.

इस चित्र को किसी मजबूत गत्ते पर चिपकाने के लिए इसकी पीठ पर लेई लगाओ, और गत्ते पर हमवार चिपका दो.

हमेशा की तरह अब इसे सूखने के लिए किताबों या तख्ती के नीचे दबा दो. जब सूख जाए, तो निकाल लो, और चित्र के आकार पर यानी बाहरी रेखाओं पर इसे काट लो. जहां जहां दानेदार रेखाएं हैं, वहां वहां पैमाने की सहायता से एक तेज चाकू या ब्लेड से हल्की काट करते हुए निशान डालो.

काटते समय जरा इस बात का ध्यान रखो कि गत्ता ही आरपार न कट जाए. इसके बाद सावधानी से दिए हुए नमूना चित्र की तरह, चामरगौ की पीठ की चारों तरफ की रेखाओं

नमूना चित्र

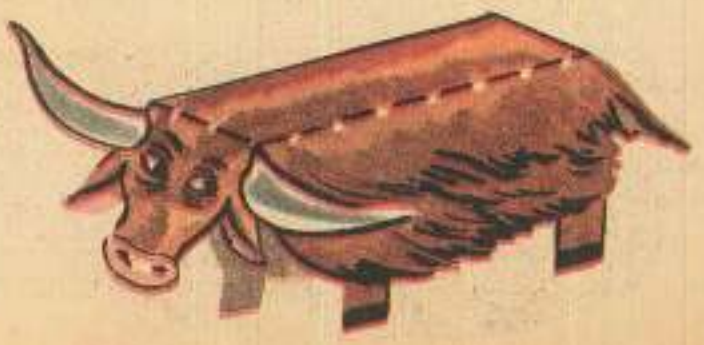

पर इसके पाखे
बूती के लिए अंदर
या चिपकनी टेप
एक दूसरे के सहारे
अपनी चामरगौ

इसे अपनी
और इसके ऊप

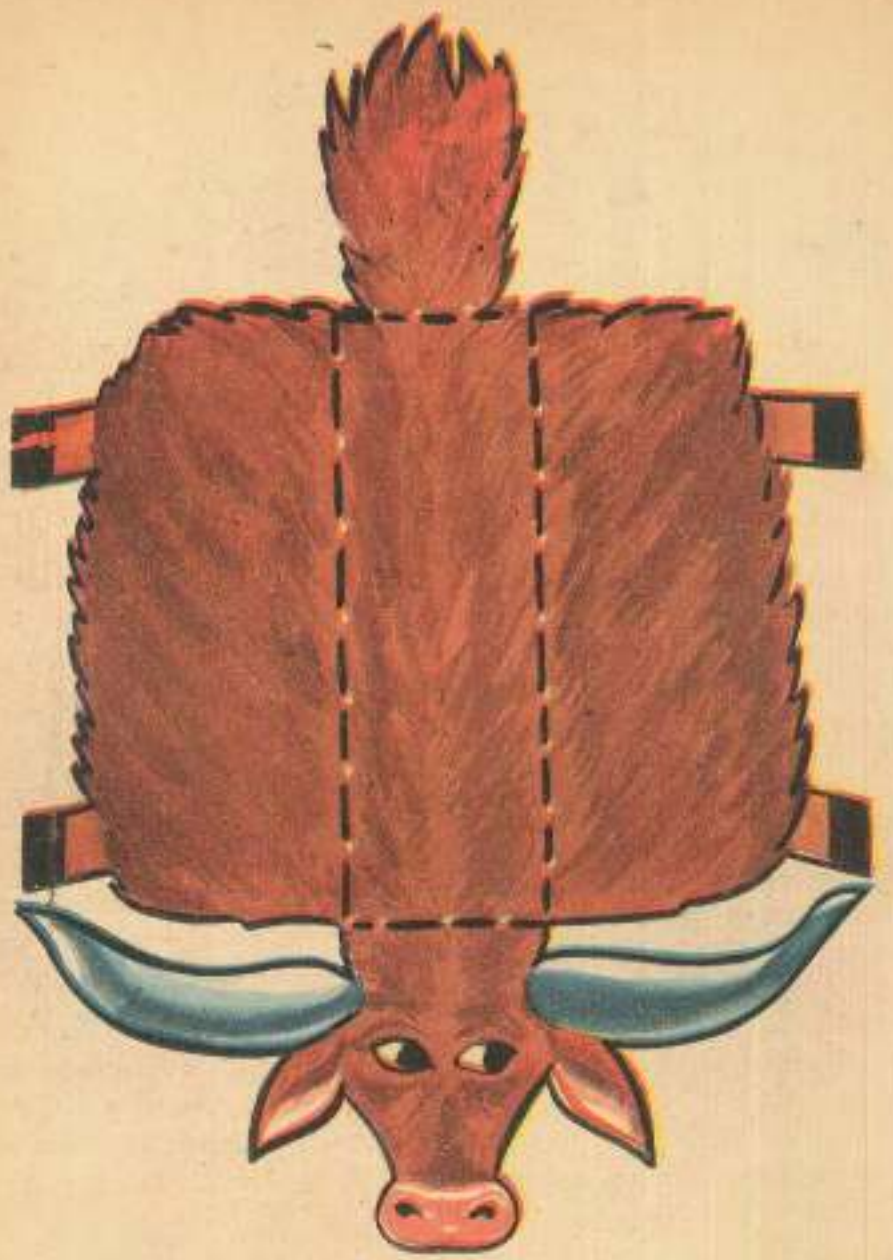

पर इसके पाखे नीचे की ओर मोड़ दो. मजबूती के लिए अंदर की तरफ लेई की पट्टियां या चिपकनी टेप इस तरह चिपकाओ कि पाखे एक दूसरे के सहारे खड़े रहें. हो गई तुम्हारी अपनी चामरगी तैयार.

इसे अपनी मेज या कारनिस पर सजाओ और इसके ऊपर हल्की-फुल्की चीजें रखो. ज्यादा भारी चीजें रखोगे, तो बेचारे याक का दम ही निकल जाएगा!

अगले महीने हम तुम्हारे लिए एक और नया खेल ला रहे हैं. इंतजार करना, और अपने मित्रों को बताना न भूलना कि तुमने यह खेल 'पराग' में से काटकर बनाया है. ●

लेकिन जनाब यह पत्र है
कौन सा, जिसके लिए
यह सारी छीना झपटी थी ?

वही आपका भी प्रिय पत्र

धर्मयुग

६

पराग

बच्चो, नीचे का चित्र है न
हमारे पास २० फरवरी
कल्पना से और ज्यादा उभार
भरने वाले तीन प्रतियोगियों
ग भरने वालों की उम्र १६
चित्र के नीचे वाला कूपन भर
नं. ९२), पो. आ. बा. नं. २१

यहां से काटो

'पराग
नाम और उम्र
पूरा पता

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता ९२

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० फरवरी तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सब से अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिएं. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पुतियां भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ९२), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता – ९२

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

बच्चों की मनपसंद

दौराला स्वीट्स और टाफ़ीयां

अनेक किस्मों में मिलने वाली दौराला स्वीट्स
और टाफ़ीयां — अत्यंत स्वादिष्ट और मज़ेदार।

व्यापारिक पूछ-ताछ के लिये :
कन्फेक्शनरी सेल्स डिपार्टमेंट
संस्कृति भवन, झण्डेवाला, नई दिल्ली-५५

Daurala

A DCM UNIT

ADVARS-DSW 132

ग भरो
तियोगिता
. ८९ का
रिणाम

'पराग' की रंग भरो
ोगिता नं. ८९ में जिन
त्रों को पुरस्कार योग्य
ा, उनमें से दो को
पा जा रहा है. पुर
जेताओं के नाम औ
प्रकार हैं :
• कुमारी रेखा गुप्ता,
नं. यशदत्त गुप्ता,
मीनगर, सूरजकुंड.
• कुमारी सुनीता
जेश हेंडलूम फैक्टरी,
• कुमारी भूपेंद्र कौर
ड, सेंट्रल एक्साइज,
ऊपर वाला चित्र
नीचे वाला कुमारी सुनी
विजेताओं ने अपनी अपनी

ग भरी
तियोगिता
. ८९ का
रिणाम

'पराग' की रंग भरी प्रतियोगिता नं. ८९ में जिन तीन चित्रों को पुरस्कार योग्य चुना था, उनमें से दो को यहां छापा जा रहा है. पुरस्कार विजेताओं के नाम और पते इस प्रकार हैं :

- कुमारी रेखा गुप्ता, द्वारा श्री यशवंत गुप्ता, २६९ अमीनगर, सूरजकुंड. रोड, मेरठ (उ. प्र.).
- कुमारी सुनीता जैन, सुपुत्री श्री ओमप्रकाश जैन, गणेश हेंडलूम फैक्टरी, सरधना, जिला मेरठ (उ. प्र.).
- कुमारी भूपेंद्र कौर, द्वारा श्री जसवंत सिंह, सुपरिंटेंडेंट, सेंट्रल एक्साइज, संभल, जिला मुरादाबाद (उ. प्र.).

ऊपर वाला चित्र है कुमारी रेखा गुप्ता का और नीचे वाला कुमारी सुनीता जैन का. दोनों ही प्रतियोगियों ने अपनी अपनी कल्पना से चित्र की पृष्ठभूमि को एक नया रूप-रंग देने की कोशिश की है. रंगों का चुनाव भी दोनों का संतोषजनक है.

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चों में से इनके प्रयास अच्छे रहे:

कमलकुमार जैन, मेरठ; अरुणकुमार गुप्ता, कलकत्ता-१२; कुमारी प्रभावती, बंबई-३४; चंद्रप्रकाश माहेश्वरी, कानपुर-१; नवीनचंद्र कापरी, हमीरपुर (उ. प्र.); कुमारी आभा गौड़, आगरा कैंट; हरिशंकर शुक्ल, लखनऊ; कुमारी निशी माहेश्वरी, फर्रुखाबाद; नवीनचंद्र डबराल, हरदोई (उ. प्र.); आनंदप्रकाश, पटना; रमेशचंद्र त्रिपाठी, हरचंदपुर (रायबरेली); दिनेशकुमार वर्मा, उरई (उ. प्र.); छबिलाल पटेल, तरकेला (रायगढ़); अमरनाथ चतुर्वेदी, कालागढ़ (बिजनौर); सैयद कैसररजा रिजवी, हल्लौर (बस्ती); सैयद शकील शमीम, मंगलूर; कुमारी कला अग्रवाल, झालरा पाटन; कुमारी शेष गुहा, बिलासपुर; प्रदीप जोशी, देहरादून; कृष्णचंद्र, सलेमपुर छपरा; कुमारी रोमिलाकुमारी सिंह, पादरी बाजार (गोरखपुर); कुमारी किरण पंवार, आरती (महासू); तथा कुमारी पुष्पा सरवटे, रायपुर. ●

बेताल की कथाएं
अविस्मरणीय, रोमांचक, प्रेरक !
जादूगर मैण्ड्रेक के अद्भुत करिश्मे !

साहस !
रोमांच !
मनोरंजन !

इंद्रजाल कॉमिक्स

पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली पत्रिका

महीने में दो बार
छह भाषाओं में: हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल और बंगाली

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन
मूल्य : ७० पैसे

मूल्य प्रति
केवल 60
वार्षिक 7/-

अपने निकटतम

लोट

लोट कोलमैन एंड कंपनी
मुद्रित और प्रकाशित; पो.
कलकत्ता आफिस : १३,

kissekahani.com

बच्चों केलिये एक नई आकर्षक मासिक पत्रिका लोटपोट

पढ़िये और लोटपोट हो जाइये

आपके बच्चे इस नई आकर्षक और सारी रंगीन पत्रिका को देख कर खुशी से फूले नहीं समाएंगे। 'जूनियर' फैंटम के कारनामें और 'मोटू–पतलू' के हंसी से भरपूर क़िस्से। आप खुद भी हंसते-हंसते लोट पोट हो जाएंगे।

मूल्य प्रति अंक केवल 60 पैसे
वार्षिक 7/- रुपये

kissekahani.com

अपने निकटतम न्यूज़ एजेंट से प्राप्त करें।

लोटपोट, ए-5 माया पुरी, नई देहली-27

ट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई में
ित और प्रकाशित; पो. आ. बाक्स २०७, बंबई–१; दिल्ली आफिस : ७, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–१;
लकत्ता आफिस : १३/१ और १३/२, गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट; लंदन आफिस : ३, अल्बे मार्ले स्ट्रीट, डब्ल्यू–१.